वर्ष-11, अंक-10, जुलाई-2026
मूल्य: ₹20

वेलकम इंडिया

RNI No. UPHIN/2015/61611
राष्ट्रीय मासिक हिन्दी पत्रिका

गाजियाबाद के विकास को लगेंगे पंख

सीएम योगी ने **868 करोड़** की योजनाओं का किया लोकार्पण-शिलान्यास

उत्तर प्रदेश सरकार

पहले तकनीक में लाचार
आज हर ओर नवाचार

अपना यूपी बदल गया

प्रतीकात्मक चित्र

2017 से पहले
आईटी और प्रौद्योगिकी में
दूरदर्शी सोच का अभाव

2026 में डेटा और AI हब, 9 शहरों में सॉफ्टवेयर टेक पार्क, उत्तर प्रदेश AI मिशन की शुरुआत

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

वर्ष- 11 अंक- 10

जुलाई-2026

सम्पादक ललित कुमार शर्मा

कार्यकारी सम्पादक
अनादि शुक्ल, प्रशांत शर्मा
संजय बंसल, संजीव शर्मा

संरक्षक
स्व. वेद प्रकाश शर्मा
अभिषेक गर्ग, एनके शर्मा, प्रवीण चौधरी
अमिताभ शुक्ल, अरुण शर्मा,
प्रभाकर त्यागी, डॉ. निमित त्यागी

वरिष्ठ सलाहकार
विजय अरोडा, राहुल अग्रवाल,
सचिन तोमर, देवनाथ कुमार

सम्पादकीय सहयोगी
डॉ. बी. जमां

बिजनेस हेड
रजनीकांत शर्मा/विकास पंडित

कानूनी सलाहकार
कीर्तिकर सुकुल (एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट)
वंदना शर्मा भंडारी (एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट)
अनिल आनंद, नीरज सत्संगी

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक ललित कुमार द्वारा अवनीर एन्टरप्राईजेज, ए-7/105, इंडस्ट्रीयल एरिया साउथ साईड जी.टी. रोड गाजियाबाद से मुद्रित कराकर ग्राउंड फ्लोर 150, दुर्गा टॉवर, आरडीसी राजनगर गाजियाबाद से प्रकाशित किया।
सम्पादक - ललित कुमार शर्मा
RNI No. UPHIN/2015/61611
ई-मेल: winews.in@gmail.com
वेबसाइट: www.winews.in
सम्पर्क सूत्र: 9891116568

नोट: पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों आदि से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा किसी भी कानूनी वाद-विवाद के लिए गाजियाबाद न्यायालय मान्य होगा।

अन्दर के पेजों में...

कवर स्टोरी पेज-28

समुद्र की लहरों पर दौड़ती भारतीय शक्ति को पूरी दुनिया सलाम करती है — पेज 03

कैसे विपक्ष के दबाव में झुकी सरकार, आखिर गई शिक्षा मंत्री की कुर्सी — पेज 08

खाकी का नया चमकता सितारा एसीपी सिद्धार्थ गौतम — पेज 12

राम मंदिर में चंदे की चोरी लापरवाही या नीयत में खोट — पेज 20

'तबाही' से ज्यादा मची बहस! किसिंग सीन पर कियारा ट्रोल, यश बने 'कूल' — पेज 52

रोहित शर्मा से छीनी बादशाहत, किवी खिलाड़ी मिशेल बने नंबर वन — पेज 54

विज्ञापन, समाचार के लिए वेलकम इंडिया दैनिक एवं मासिक पत्रिका के जोनल सम्पादक कृष्णराज अरुण से मोबाइल नम्बर 9802414328 /9813221734 पर सम्पर्क करें।

धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफाः जवाबदेही की मिसाल या राजनीतिक रणनीति?

ललित कुमार
सम्पादक

केंद्रीय राजनीति में किसी वरिष्ठ मंत्री का इस्तीफा हमेशा चर्चा और बहस का विषय बनता है। यदि केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने अपने पद से इस्तीफा दिया है, तो यह केवल एक राजनीतिक घटनाक्रम नहीं, बल्कि देश की शिक्षा व्यवस्था, सरकार की जवाबदेही और भविष्य की नीतिगत दिशा पर गंभीर मंथन का अवसर भी है। शिक्षा ऐसा क्षेत्र है, जिसका सीधा संबंध देश के करोड़ों विद्यार्थियों, युवाओं और उनके भविष्य से जुड़ा होता है। इसलिए इस मंत्रालय में होने वाला कोई भी बड़ा बदलाव दूरगामी प्रभाव छोड़ सकता है। पिछले कुछ वर्षों में धर्मेंद्र प्रधान के कार्यकाल के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) को लागू करने की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। कौशल विकास, डिजिटल शिक्षा, भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने और नई शिक्षा प्रणाली को व्यवहार में लाने के प्रयासों की सराहना भी हुई। वहीं दूसरी ओर प्रतियोगी परीक्षाओं में अनियमितताओं, पेपर लीक की घटनाओं, परीक्षा प्रबंधन और छात्रों की बढ़ती चिंताओं को लेकर सरकार और शिक्षा मंत्रालय को लगातार आलोचनाओं का सामना भी करना पड़ा। कई अवसरों पर विपक्ष ने इन मुद्दों को संसद से लेकर सड़क तक जोर-शोर से उठाया।

लोकतंत्र में जवाबदेही सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक है। यदि किसी मंत्री का इस्तीफा प्रशासनिक जिम्मेदारी स्वीकार करने या राजनीतिक नैतिकता के आधार पर दिया गया है, तो इसे लोकतांत्रिक परंपराओं के अनुरूप एक सकारात्मक संकेत माना जा सकता है। वहीं यदि इसके पीछे व्यापक राजनीतिक रणनीति, संगठनात्मक बदलाव या सरकार की नई प्राथमिकताएं हैं, तो इसका मूल्यांकन समय के साथ ही संभव होगा। हालांकि यह भी सच है कि केवल नेतृत्व परिवर्तन से व्यवस्था नहीं बदलती। शिक्षा क्षेत्र की चुनौतियां कहीं अधिक व्यापक हैं। परीक्षा प्रणाली को पूरी तरह पारदर्शी बनाना, पेपर लीक जैसी घटनाओं पर प्रभावी रोक लगाना, तकनीकी सुरक्षा को मजबूत करना, विश्वविद्यालयों और विद्यालयों की गुणवत्ता में सुधार लाना तथा छात्रों का भरोसा दोबारा जीतना नई जिम्मेदारी संभालने वाले नेतृत्व की सबसे बड़ी परीक्षा होगी। आज देश का युवा केवल नई नीतियों की घोषणा नहीं, बल्कि उनके प्रभावी क्रियान्वयन की अपेक्षा करता है। छात्रों को समय पर परीक्षाएं, निष्पक्ष मूल्यांकन, रोजगारोन्मुख शिक्षा और सुरक्षित परीक्षा प्रणाली चाहिए। यदि इन मूलभूत अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया जाता, तो किसी भी नीति की सफलता अधूरी रह जाएगी। इस घटनाक्रम से एक संदेश यह भी निकलता है कि लोकतंत्र में जनभावनाओं, विपक्ष की आवाज और सार्वजनिक विमर्श का अपना महत्व होता है। सरकारें तभी मजबूत होती हैं, जब वे आलोचनाओं को स्वीकार करते हुए सुधार की दिशा में ठोस कदम उठाती हैं। यही लोकतांत्रिक व्यवस्था की वास्तविक शक्ति है।

अंततः, धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा केवल एक राजनीतिक समाचार बनकर सीमित नहीं रहना चाहिए। इसे देश की शिक्षा व्यवस्था में सुधार, पारदर्शिता और जवाबदेही को और अधिक मजबूत बनाने के अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए। आने वाले समय में सबसे बड़ा प्रश्न यही होगा कि क्या यह बदलाव शिक्षा व्यवस्था में वास्तविक सुधार लेकर आएगा या फिर यह केवल राजनीतिक फेरबदल तक ही सीमित रहेगा। इसका उत्तर सरकार के अगले कदम, नई नीतियों और उनके प्रभावी क्रियान्वयन से ही मिलेगा।

लोकतंत्र में जवाबदेही सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक है। यदि किसी मंत्री का इस्तीफा प्रशासनिक जिम्मेदारी स्वीकार करने या राजनीतिक नैतिकता के आधार पर दिया गया है, तो इसे लोकतांत्रिक परंपराओं के अनुरूप एक सकारात्मक संकेत माना जा सकता है। वहीं यदि इसके पीछे व्यापक राजनीतिक रणनीति, संगठनात्मक बदलाव या सरकार की नई प्राथमिकताएं हैं, तो इसका मूल्यांकन समय के साथ ही संभव होगा।

समुद्र की लहरों पर दौड़ती भारतीय शक्ति को पूरी दुनिया सलाम करती है

हम आपको बता दें कि महेंद्रगिरि को ब्लू वाटर युद्धपोत की श्रेणी में रखा गया है। इसका अर्थ है कि यह केवल तटीय सुरक्षा तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि हजारों किलोमीटर दूर गहरे समुद्र में कई सप्ताह तक लगातार अभियान चलाने की क्षमता रखता है।

भारतीय नौसेना की युद्धक क्षमता को नई ऊंचाई देते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने विशाखापत्तनम में स्वदेशी स्टील्थ युद्धपोत आईएनएस महेंद्रगिरि को पूर्वी बेड़े में शामिल किया। प्रोजेक्ट सत्रह ए के तहत निर्मित यह छठा और अंतिम स्टील्थ युद्धपोत सिर्फ एक नया जहाज नहीं, बल्कि समुद्री शक्ति, स्वदेशी रक्षा निर्माण और सामरिक आत्मनिर्भरता का सशक्त प्रतीक है। महेंद्रगिरि के नौसेना में शामिल होने के साथ ही भारत ने स्पष्ट संदेश दिया है कि वह केवल अपनी समुद्री सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि दूरस्थ समुद्री क्षेत्रों में भी अपने हितों की प्रभावी सुरक्षा करने में

संजीव कुमार

पूरी तरह सक्षम है।

हम आपको बता दें कि करीब छह हजार छह सौ सत्तर टन वजन और अट्ठाइस नॉट की अधिकतम गति वाला यह बहुउद्देशीय युद्धपोत आधुनिक समुद्री युद्ध की हर चुनौती से निपटने के लिए तैयार किया गया है। इसमें रडार पर कम दिखाई देने वाली स्टील्थ क्षमता, अत्याधुनिक स्वचालित प्रणालियां, हमलों को झेलने की बेहतर क्षमता और पचहत्तर प्रतिशत से अधिक स्वदेशी उपकरण लगाए गए हैं। इसे ब्रह्मोस प्रहारक मिसाइल, लंबी दूरी की वायु रक्षा प्रणाली, बहुउद्देशीय रडार, पनडुब्बी रोधी रक्षा प्रणाली, टारपीडो प्रक्षेपक, स्वदेशी रॉकेट प्रक्षेपक तथा उन्नत इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली से लैस किया गया है। यही कारण है कि यह हवा, समुद्र की सतह और समुद्र के भीतर छिपे दुश्मनों पर एक साथ प्रभावी प्रहार करने में सक्षम है।

हम आपको बता दें कि महेंद्रगिरि को ब्लू वाटर युद्धपोत की श्रेणी में रखा गया है। इसका अर्थ है कि

यह केवल तटीय सुरक्षा तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि हजारों किलोमीटर दूर गहरे समुद्र में कई सप्ताह तक लगातार अभियान चलाने की क्षमता रखता है। खोज और बचाव अभियान, मानवीय सहायता, आपदा राहत, समुद्री सुरक्षा तथा हिंद महासागर क्षेत्र में लंबी तैनाती जैसे दायित्व भी यह समान दक्षता से निभा सकता है। पूर्वी घाट की महेंद्रगिरि पर्वतमाला के नाम पर रखे गए इस युद्धपोत के प्रतीक चिह्न में दशार्या गया शिकरा पैनी दृष्टि, धैर्य और निर्णायक प्रहार का प्रतीक है, जो इसकी युद्धक भूमिका को भी प्रतिबिंबित करता है।

देखा जाये तो महेंद्रगिरि का सामरिक महत्व केवल इसकी मारक क्षमता तक सीमित नहीं है। हिंद महासागर आज विश्व व्यापार, ऊर्जा आपूर्ति और सामरिक प्रतिस्पर्धा का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र बन चुका है। ऐसे समय में भारत के पास जितने अधिक आधुनिक और दूर तक अभियान चलाने वाले युद्धपोत होंगे, उतनी ही मजबूत उसकी समुद्री प्रतिरोधक क्षमता होगी। यह युद्धपोत समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा, शत्रु की गतिविधियों पर निगरानी, पनडुब्बियों की खोज और आवश्यकता पड़ने पर त्वरित जवाबी कार्रवाई में निर्णायक भूमिका निभाएगा। इससे हिंद महासागर और हिंद प्रशांत क्षेत्र में भारत की स्थिति एक भरोसेमंद सुरक्षा साझेदार के रूप में और मजबूत होगी।

हम आपको यह भी बता दें कि हाल के महीनों में भारतीय नौसेना का विस्तार अभूतपूर्व गति से हुआ है। 21 जून 2026 को एक साथ तीन महत्वपूर्ण पोत नौसेना में शामिल किए गए थे। इनमें आईएनएस दुनागिरि स्टील्थ युद्धपोत, आईएनएस संशोधक गहरे समुद्र का सर्वेक्षण पोत और आईएनएस अग्रय पनडुब्बी रोधी युद्धपोत शामिल हैं। इसके पहले 31 मार्च 2026 को आईएनएस मालवन को शामिल किया गया, जबकि साल 2025 में बहुउदेशीय स्टील्थ युद्धपोत आईएनएस तमाल भी नौसेना का हिस्सा बना। अब महेंद्रगिरि के शामिल होने से भारतीय नौसेना की मारक क्षमता, निगरानी शक्ति और समुद्री उपस्थिति पहले से कहीं अधिक सुदृढ़ हो गई है।

यदि दस वर्ष पहले की तुलना करें तो भारतीय नौसेना में उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देता है। तब अधिकांश प्रमुख युद्धपोतों और हथियार प्रणालियों के लिए विदेशी निर्भरता अधिक थी, जबकि आज स्वदेशी डिजाइन, निर्माण और अत्याधुनिक हथियारों से लैस युद्धपोत तेजी से बेड़े में शामिल हो रहे हैं। विमानवाहक पोत, आधुनिक विध्वंसक, स्टील्थ युद्धपोत, पनडुब्बी रोधी पोत, सर्वेक्षण पोत, उन्नत प्रहारक मिसाइल और स्वदेशी रक्षा प्रणालियों ने नौसेना की शक्ति को कई गुना बढ़ा दिया है। इस तरह अब भारत केवल समुद्री सुरक्षा करने वाला देश नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र में शक्ति संतुलन बनाए रखने वाली महत्वपूर्ण समुद्री ताकत के रूप में उभर चुका है। साथ ही महेंद्रगिरि का नौसेना में शामिल होना इस बात का प्रमाण है कि आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना अब केवल नारा नहीं, बल्कि समुद्र की लहरों पर दौड़ती वास्तविक शक्ति बन चुकी है। यह युद्धपोत आने वाले वर्षों में भारत की समुद्री सुरक्षा का मजबूत प्रहरी बनने के साथ साथ स्वदेशी रक्षा निर्माण की सफलता का भी सबसे प्रभावशाली उदाहरण साबित होगा।

भारत की कूटनीतिक उड़ान बनाम पश्चिम एशिया का युद्ध

एन के शर्मा

वैश्विक स्तरपर भारतीय विदेश नीति,वैश्विक अर्थव्यवस्था और वित्तीय बाजारों के दृष्टिकोण से 11 जुलाई 2026 एक अत्यंत महत्वपूर्ण दिन के रूप में दर्ज किया जाएगा। एक ओर भारतीय प्रधानमंत्री की छह दिवसीय इंडोनेशिया,ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड यात्रा 6 से 11 जुलाई 2026 छह दिवसीय यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न हुई, जिसमें अनेक रणनीतिक समझौते,निवेश साझेदारियां, रक्षा सहयोग, क्रिटिकल मिनरल्स, मुक्त व्यापार और तकनीकी सहयोग से जुड़े एमओयू हुए। दूसरी ओर,पश्चिम एशिया में ईरान और अमेरिका के बीच समझौता टूटने के बाद दोनों देशों के बीच सैन्य हमले तेज होने से वैश्विक ऊर्जा बाजार,समुद्री व्यापार, निवेशकों की धारणा और अंतरराष्ट्रीय शेयर बाजारों में अस्थिरता बढ़ गई। इन दोनों घटनाओं को यदि एक साथ देखा जाए तो स्पष्ट होता है कि विश्व अर्थव्यवस्था एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है जहां एक तरफ युद्ध से उत्पन्न जोखिम हैं तो दूसरी ओर भारत के लिए नए आर्थिक अवसर भी तेजी से उभर रहे हैं।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र वित्तीय दृष्टिकोण से बताना चाहूंगा कि भारतीय पीएम की इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड यात्रा केवल एक राजनयिक दौरा नहीं थी बल्कि यह भारत की दीर्घकालिक आर्थिक और रणनीतिक नीति का महत्वपूर्ण विस्तार थी। इंडोनेशिया के साथ रक्षा उत्पादन,समुद्री सुरक्षा तथा लगभग 5,400 करोड़ रूपए के रक्षा सहयोग,ऑस्ट्रेलिया के साथ क्रिटिकल मिनरल्स, लिथियम, दुर्लभ खनिज, शिक्षा,ऊर्जा तथा सेमीकंडक्टर सहयोग और न्यूजीलैंड के साथ ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते ने यह संकेत दिया कि भारत केवल व्यापार नहीं बढ़ाना चाहता बल्कि वैश्विक सप्लाई चेन में एक निर्णायक भूमिका निभाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इससे भारत के विनिर्माण,निर्यात,रक्षा उत्पादन, इलेक्ट्रॉनिक्स, ग्रीन एनर्जी और हाई-टेक उद्योगों को सटीकता से नई गति मिलने की संभावना है।

साथियों भारतीय शेयर बाजार के दृष्टिकोण से देखें तो इन समझौतों का सबसे अधिक लाभ रक्षा, इलेक्ट्रॉनिक्स सेमीकंडक्टर, खनन, नवीकरणीय ऊर्जा, लॉजिस्टिक्स, पोर्ट, जहाजरानी और निर्यात आधारित कंपनियों को मिलने की संभावना है।

निवेशकों की सोच सामान्यतः भविष्य की संभावनाओं पर आधारित होती है। जब किसी देश के साथ दीर्घकालिक व्यापारिक समझौते होते हैं,तब विदेशी निवेशकों का विश्वास मजबूत होता है।यही कारण है कि ऐसे कूटनीतिक समझौते अक्सर बाजार को दीर्घकालिक मजबूती प्रदान करते हैं,भले ही अल्पकाल में वैश्विक घटनाओं के कारण सटीकता से उतार- चढ़ाव बना रहे।

साथियों, न्यूजीलैंड के साथ रिकॉर्ड समय में संपन्न मुक्त व्यापार समझौता,40 साल का सूखा खत्म! 35000 करोड़ का होगा ट्रेड, समझौते हुए?- भारत -न्यूजीलैंड ने तैयार किया विजन 2030, भारतीय कृषि,डेयरी, फार्मास्यूटिकल्स, आईटी सेवाओं वस्त्र उद्योग,खाद्य प्रसंस्करण तथा इंजीनियरिंग उत्पादों के लिए नए अवसर लेकर आया है। यदि दोनों देशों के बीच व्यापार 2030 तक दोगुना होता है तो भारत के निर्यातकों, बंदरगाहों, कंटेनर लॉजिस्टिक्स बैंकिंग और बीमा क्षेत्र को भी अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होगा।

इससे भारतीय रुपये की स्थिरता और विदेशी मुद्रा भंडार पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। साथियों,ऑस्ट्रेलिया के साथ क्रिटिकल मिनरल्स साझेदारी भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि भविष्य की अर्थव्यवस्था इलेक्ट्रिक वाहन, बैटरी, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स,सौर ऊर्जा,आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सेमीकंडक्टर उद्योग पर आधारित होगी। लिथियम, कोबाल्ट तथा अन्य दुर्लभ खनिजों की सुरक्षित आपूर्ति भारत को चीन पर निर्भरता कम करने का अवसर देती है। इससे मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत और उच्च मूल्य विनिर्माण को नई गति मिलने की संभावना है।इंडोनेशिया के साथ रक्षा सहयोग और समुद्री सुरक्षा समझौते हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत की सामरिक स्थिति को मजबूत करते हैं। ब्रह्मोस जैसे रक्षा निर्यात भारतीय रक्षा उद्योग के लिए वैश्विक बाजार खोल सकते हैं। रक्षा निर्यात में वृद्धि का सीधा लाभ सार्वजनिक और निजी दोनों रक्षा कंपनियों, अनुसंधान संस्थानों और सहायक उद्योगों को मिलेगा।

इससे रोजगार, उत्पादन और निर्यात आय में सटीकता से वृद्धि होगी। साथियों, इन सकारात्मक संकेतों के बीच पश्चिम एशिया से आने वाली खबरें वैश्विक बाजारों के लिए चिंता का विषय बनी हुई हैं। ईरान और अमेरिका के बीच समझौता टूटने तथा दोनों देशों के बीच बढ़ते सैन्य संघर्ष ने वैश्विक निवेशकों को जोखिम से बचने की रणनीति अपनाने के लिए प्रेरित किया है। जब भी विश्व में युद्ध या बड़े भू- राजनीतिक तनाव उत्पन्न होते हैं, तब निवेशक सुरक्षित परिसंपत्तियों जैसे सोना, अमेरिकी डॉलर और सरकारी बॉन्ड की ओर रुख करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उभरते बाजारों से विदेशी निवेश का अस्थायी बहिर्वाह शुरू हो सकता है। भारत अपनी कच्चे तेल की आवश्यकता का लगभग 85 प्रतिशत आयात करता है। यदि होर्मुज जलडमरूमध्य के आसपास तनाव बना रहता है और तेल आपूर्ति प्रभावित होती है तो अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें लगातार ऊंची रह सकती हैं। इससे भारत का आयात बिल बढ़ेगा, चालू खाते का घाटा बढ़ सकता है, रुपये पर दबाव आ सकता है तथा घरेलू महंगाई में वृद्धि की आशंका बनेगी। पेट्रोल, डीजल, एलपीजी, उर्वरक, प्लास्टिक, रसायन तथा परिवहन लागत बढ़ने से लगभग हर क्षेत्र प्रभावित हो सकता है।भारतीय शेयर बाजार में ऐसे समय सबसे अधिक दबाव विमानन, ऑटोमोबाइल, पेंट, टायर, सीमेंट, रसायन और उपभोक्ता वस्तु क्षेत्रों पर दिखाई देता है क्योंकि इनकी उत्पादन लागत ऊर्जा पर काफी निर्भर करती है। दूसरी ओर तेल एवं गैस उत्पादन,रक्षा, ऊर्जा अवसंरचना तथा कुछ कमोडिटी आधारित कंपनियों को अपेक्षाकृत लाभ मिल सकता है।यही कारण है कि युद्धकालीन परिस्थितियों में सेक्टर रोटेशन तेजी से देखने को मिलता है। साथियों, अंतरराष्ट्रीय शेयर बाजारों में भी यही प्रवृत्ति दिखाई देती है।

अमेरिका, यूरोप और एशिया के प्रमुख बाजार युद्ध संबंधी समाचारों पर तुरंत प्रतिक्रिया देते हैं। यदि संघर्ष लंबा चलता है तो वैश्विक विकास दर प्रभावित हो सकती है, समुद्री मालभाड़ा बढ़ सकता है, बीमा लागत बढ़ सकती है और वैश्विक सप्लाई चेन पर दबाव आ सकता है। इससे बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लाभ पर असर पड़ सकता है।हालांकि भारत के लिए एक महत्वपूर्ण सकारात्मक पक्ष यह भी है कि विश्व की अनेक कंपनियां अब अपनी आपूर्ति श्रृंखला का विविधीकरण करना चाहती हैं। चीन-प्लस-वन रणनीति, हिंद- प्रशांत साझेदारी और भारत के साथ बढ़ते व्यापारिक समझौते भारत को वैश्विक

विनिर्माण केंद्र बनने का अवसर प्रदान कर रहे हैं।यदि भारत समय पर अवसंरचना, लॉजिस्टिक्स श्रम सुधार और उत्पादन क्षमता को मजबूत करता है तो वह युद्ध से उत्पन्न वैश्विक पुनर्संतुलन का वास्तव में बहुत बड़ा लाभ उठा सकता है। साथियों, विदेशी संस्थागत निवेशकों की दृष्टि से भारत आज भी सबसे आकर्षक उभरती अर्थव्यवस्थाओं में गिना जा रहा है। मजबूत घरेलू मांग, डिजिटल अर्थव्यवस्था युवा कार्यबल, तेज बुनियादी ढांचा विकास, उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजनाएं और स्थिर वित्तीय प्रणाली भारत को अपेक्षाकृत सुरक्षित निवेश गंतव्य बनाती हैं। यही कारण है कि अल्पकालिक उतार-चढ़ाव के बावजूद दीर्घकालिक निवेशकों का विश्वास बना रह सकता है।भारतीय रिजर्व बैंक और केंद्र सरकार के सामने इस समय सबसे बड़ी चुनौती महंगाई नियंत्रण और विकास दर के बीच संतुलन बनाए रखने की होगी। यदि तेल की कीमतें लंबे समय तक ऊंची रहती हैं तो मौद्रिक नीति, राजकोषीय प्रबंधन और ऊर्जा सुरक्षा को लेकर अतिरिक्त सावधानी बरतनी पड़ेगी। साथ ही रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार, ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण, नवीकरणीय ऊर्जा और घरेलू गैस उत्पादन का महत्व और बढ़ जाएगा। साथियों, विश्व अर्थव्यवस्था के व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखें तो वर्तमान समय दो विपरीत धाराओं का संगम है। पहली धारा युद्ध, ऊर्जा संकट,महंगाई और अनिश्चितता की है।दूसरी धारा तकनीकी निवेश,हरित ऊर्जा,डिजिटल परिवर्तन,रक्षा आधुनिकीकरण और नए व्यापारिक गठबंधनों की है।

भारत की त्रि-राष्ट्र यात्रा दूसरी धारा का प्रतिनिधित्व करती है,जबकि ईरान-अमेरिका संघर्षपहली धारा का। आने वाले वर्षों में जो देश इन दोनों चुनौतियों के बीच संतुलन स्थापित कर पाएंगे, वही वैश्विक आर्थिक नेतृत्व की दौड़ में आगे रहेंगे। साथियों, भारत के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि वह आज केवल एक बड़ा उपभोक्ता बाजार नहीं बल्कि एक विश्वसनीय रणनीतिक साझेदार, रक्षा सहयोगी,तकनीकी भागीदार और विनिर्माण केंद्र के रूप में उभर रहा है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती भूमिका, मुक्त व्यापार समझौते,रक्षा निर्यात, क्रिटिकल मिनरल्स साझेदारी और वैश्विक निवेश आकर्षित करने की क्षमता भारत को आने वाले दशक में विश्व अर्थव्यवस्था के प्रमुख विकास इंजन के रूप में सटीकता से स्थापित कर सकती है।

साथियों,11 जुलाई 2026 शाम हुई भारतीय पीएम के त्रि-राष्ट्रीय छह दिवसीय दौरे में भारत-

न्यूजीलैंड का विजन 2030 दोनों देशों के रिश्तों में नई शुरूआत जैसा है, जिसका भारतीय अर्थव्यवस्था व शेयर बाजारों मैं दूरगामी सकारात्मक परिणाम देखने को मिल सकता है।

40 साल बाद हुई इस पहल से उम्मीद है कि दोनों देशों के बीच व्यापार और सहयोग नई ऊंचाइयों तक पहुंचेगा, भारत और न्यूजीलैंड के रिश्तों में एक बड़ा बदलाव देखने को मिला है. करीब 40 साल बाद न्यूजीलैंड के किसी प्रधानमंत्री की भारत यात्रा और दोनों देशों के बीच हुई अहम बातचीत ने व्यापारिक रिश्तों के लिए नए रास्ता खोल दिए हैं. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन ने मिलकर 'विजन 2030' का रोडमैप तैयार किया है, जिसका मकसद दोनों देशों के बीच आर्थिक साझेदारी को मजबूत करना है. दोनों देशों की कोशिश है कि आने वाले वर्षों में द्विपक्षीय व्यापार को करीब 35,000 करोड़ रुपये तक पहुंचाया जाए.भारत और न्यूजीलैंड के बीच लंबे समय से अच्छे कूटनीतिक संबंध रहे हैं, लेकिन आर्थिक मोर्चे पर दोनों देशों के बीच व्यापार की रफ्तार उम्मीद के मुताबिक नहीं बढ़ पाई थी. अब दोनों देशों ने इस अंतर को कम करने के लिए विजन 2030 तैयार किया है।

ट्रेड डील लागू होने के बाद पहले दिन से ही न्यूजीलैंड के 57 प्रतिशत निर्यात को भारत में बिना टैरिफ के एंट्री मिलेगी. इससे न्यूजीलैंड के कृषि, फूड प्रोसेसिंग, डेयरी के सामान को भारतीय बाजार में पहुंच बनाने में मदद मिलेगी. वहीं, भारत को भी न्यूजीलैंड के बाजार में अपने उत्पादों के लिए बेहतर अवसर मिलने की उम्मीद है. इस समझौते से दोनों देशों के बीच व्यापार के नए रास्ते खुलेंगे।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारतीय पीएम की इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड यात्रा भारत की आर्थिक कूटनीति को नई ऊंचाई देने वाली सिद्ध हो सकती है,जबकि ईरान-अमेरिका संघर्ष विश्व अर्थव्यवस्था के लिए गंभीर जोखिम प्रस्तुत करता है। अल्पकाल में शेयर बाजारों में अस्थिरता,महंगाई और ऊर्जा लागत का दबाव बना रह सकता है,किंतु यदि भारत अपने सुधारों,व्यापारिक साझेदारियों, ऊर्जा सुरक्षा और निवेश वातावरण को मजबूत बनाए रखता है, तो वह इस वैश्विक संकट को भी अवसर में बदल सकता है।

यही कारण है कि आज भारत के सामने चुनौती जितनी बड़ी है, संभावना उससे कहीं अधिक व्यापक है। आने वाले वर्षों में भारतीय शेयर बाजार, भारतीय उद्योग और भारतीय अर्थव्यवस्था का भविष्य केवल घरेलू नीतियों पर नहीं बल्कि भारत की सक्रिय वैश्विक कूटनीति, रणनीतिक साझेदारियों और बदलते विश्व आर्थिक संतुलन को अवसर में बदलने की क्षमता पर भी निर्भर करेगा।

संसद में आक्रामकता बनाम रक्षात्मकता

कैसे विपक्ष के दबाव में झुकी सरकार, आखिर गई शिक्षा मंत्री की कुर्सी

स त्तापक्ष, विपक्ष के आगे एक 'हाथजोड़ू प्रार्थना' है। इसके बरक्स विपक्ष एक 'शोर' है, 'नारेबाजी' है, 'काला वस्त्र' है और 'पोस्टर' है। एक जिद है कि हमारा एजंडा मानो, तब चलने देंगे संसद... यानी हम चलाएंगे संसद..। सत्तापक्ष आग्रह करता है : हे विपक्ष जी ! कृपया संसद चलने दें, सरकार हर मुद्दे पर विचार करने के लिए तैयार है, नियम एवं समय तय करने पर विचार करेंगे। आसन की ओर से भी विपक्ष के नेताओं से बार-बार आग्रह किया जाता है कि आप

रवि जैन

वरिष्ठ अनुभवी सांसद हैं, शोर न करें, पोस्टर न लहराएं, सदन चलने दें..। कुछ देर बाद संसद पहले बारह बजे तक, फिर दो बजे, फिर तीन बजे तक और चार बजे तक स्थगित होती रहती है।

सरकार जितना 'हाथजोड़ू मुद्रा' में नजर आती है, उतने ही सबसे बड़े विपक्षी दल के तेवर कड़े होते दिखते हैं। अफसोस कि सत्तापक्ष के पास इसका कोई तोड़ नहीं ! जब से मानसून सत्र शुरू हुआ है, तभी से विपक्ष आक्रामक है और सत्तापक्ष रक्षात्मक ! विपक्ष पूरी तरह सक्रिय है और उसमें राहुल गांधी आगे हैं... विपक्ष का सारा 'स्पेस' उनका है।

सत्तापक्ष, विपक्ष को यह कहकर लज्जित करना चाहता है कि उसका ऐसा अड़ियल व्यवहार

सरकार जितना 'हाथजोड़ू मुद्रा' में नजर आती है, उतने ही सबसे बड़े विपक्षी दल के तेवर कड़े होते दिखते हैं। अफसोस कि सत्तापक्ष के पास इसका कोई तोड़ नहीं!

गैरजिम्मेदाराना है। एक ओर वह कहता है कि संविधान खतरे में है, तो दूसरी ओर संसद न चलने देकर वह संविधान को ही खतरे में डालता है। सरकार को रक्षात्मक देख विपक्ष अपनी करता रहता है कि संसद चलाना सत्तापक्ष का काम... हमारा काम विरोध करना है।

पहले विपक्ष की तीन मांगें मानो कि शिक्षा मंत्री इस्तीफा दें, छात्रों से माफी मांगें और नीट पेपर लीक के बाद आत्महत्या करने वाले विद्यार्थियों के परिवारों को एक करोड़ रुपए का मुआवजा दें। फिर 'काकरोच जनता पार्टी' की एक और मांग कि प्रदर्शनकारियों पर केस वापस लें।

उधर, 'काकरोच जनता पार्टी' के कुछ नेताओं के लिए 'भूख हड़ताल' भारी पड़ी। एक 'काकरोच' ने भूख हड़ताल के दौरान 'बर्गर' खाया और फिर टीवी चैनलों को स्वयं बताया कि खाया। इसके बाद वह 'काकरोच जनता पार्टी' के प्रवक्ता पद से बाहर हो गया, लेकिन वह बंदा भी गजब कि जाते-जाते कह गया कि 'उन्होंने' भी कचौड़ी खाई है। 'काकरोच' के नेता उतनी सुर्खियों में नहीं दिखते, जितने कि सोनम वांगचुक या विपक्ष के नेता हैं।

संसद में हर दिन अब सिर्फ लंबा 'स्थगन' है! संसद स्थगित, लेकिन बाहर मकर द्वार पर विपक्ष का लगभग हर रोज प्रदर्शन। फिर एक दिन सत्तापक्ष के सांसदों का मकर द्वार पर जवाबी प्रदर्शन...। मानसून सत्र के पहले दिन ही 'काकरोच जनता पार्टी' का संसद की ओर 'कूच' का एलान। पुलिस द्वारा रास्ते बंद करना, लेकिन बढ़ती भीड़ बेकाबू, फिर पत्थरबाजी और पुलिस का बल प्रयोग। ऐसे दृश्य दिल्ली सहित कई बड़े शहरों में देखे गए।

चैनलों पर सब कुछ का सीधा प्रसारण... कुछ चैनलों के पत्रकार भी प्रदर्शनकारियों का निशाना बने... बहसें विपक्ष के नेताओं और प्रदर्शनकारियों के पक्ष में झुकती हुई..। उधर, पुलिस का कथन कि प्रदर्शन में बहुत से बाहरी तत्त्व भी शामिल दिखते हैं... वे अपने चेहरों को छिपाकर, हेल्मेट पहनकर पत्थर चलाते हैं, कुछ तलवारें भी लहराते हैं, वे पुलिस या सार्वजनिक संपत्ति को निशाना बनाते हैं।

कुछ एंकर और चर्चकों के लिए कथित 'जेन-जी पीढ़ी' का आचरण आपत्तिजनक, कइयों को संदेह कि ये विद्यार्थी हैं या असामाजिक तत्त्व? ये किसी विदेशी 'टूलकिट' से प्रेरित हैं और मांग कि पुलिस सख्ती बरते इनको हटाए। इस बीच, बॉलीवुड अभिनेताओं समेत कई हस्तियां छात्रों के समर्थन में खड़ी हो गईं!

'पहली बार मोदी से बड़े राजनेता साबित हुए राहुल गांधी', तवलीन सिंह के विचार- लेकिन क्या इसका लाभ कांग्रेस को मिलेगा?

फिर एक शाम सबसे बड़े विपक्षी दल का प्रधानमंत्री आवास के पास प्रदर्शन और नारे। राहुल गांधी और प्रियंका गांधी इसका नेतृत्व करते हुए। एक मंत्री का राहुल से मिलकर बातचीत करना कि विपक्षी नेता सुरक्षा की दृष्टि से इस संवेदनशील

इलाके से हट जाएं... सरकार बातचीत करने को तैयार है। जब नहीं हटे, तो पुलिस ने जबरन हटाया। कई चर्चक कहिन कि विपक्ष एक बार फिर सरकार को हिलाकर निकल गया।

उधर, गुरुवार की रात को प्रधानमंत्री ने एक नया एलान किया कि प्रश्नपत्र लीक मामलों में दोषियों को जल्द सजा दिलाने के लिए त्वरित अदालतें बनाई जाएंगी, सख्त कानून लाएंगे, जिसमें सजा की अवधि और जुर्माने को बढ़ाने के प्रावधान होंगे। जब पूछा गया कि क्या विपक्ष नए कानून का समर्थन करेगा, तो जवाब आया कि पहले संबंधित विधेयक को देखेंगे, तब बताएंगे।

इसी बीच, सोनम वांगचुक की ओर से 26 दिन पुरानी भूख हड़ताल को समाप्त करने की खबर आई। साथ ही यह खबर भी आई कि किसी 'न्यूट्रल' जगह पर 'काकरोच जनता पार्टी' के नेता सरकार से बातचीत करने के लिए तैयार हैं। सड़क से लेकर संसद तक गहमागहमी जारीङ्क और एक बार फिर संसद की कार्यवाही का स्थगन किया गया..! इस बीच केंद्रीय शिक्षा मंत्री को आखिर जाना पड़ा।

कॉकरोच जनता पार्टी का आंदोलन समाप्त

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे और अन्य मांगे मान लिए जाने के बाद कॉकरोच जनता पार्टी यानी सीजेपी का 36 दिन से चल रहा आंदोलन समाप्त हो गया है। केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा और डॉ. जितेंद्र सिंह के साथ सीजेपी के प्रवक्ता सौरभ दास व आशुतोष रांका ने साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस करके आंदोलन समाप्त होने का ऐलान किया। सौरभ दास ने आंदोलन समाप्त करने की घोषणा करते हुए कहा कि जंतर मंतर पर मौजूद सभी प्रदर्शनकारी अब अपने घर लौट जाएं। रांका ने बताया कि पिछले कुछ दिनों में सरकार से तीन बार बातचीत हुई और प्रदर्शनकारियों की तीनों मांगें मान ली गई हैं। उन्होंने बताया कि धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा हो गया है, सरकार सभी केस वापस लेने के लिए राजी हो गई है और और नीट पेपर लीक के बाद जान गंवाने वाले छात्रों के परिजनों को एक एक करोड़ रुपए का मुआवजा देने पर भी सरकार सहमत हो गई है। गौरतलब है कि इससे पहले शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने इस्तीफा दिया, जिसकी खबर आते ही जंतर मंतर पर जश्न का माहौल बना गया। छात्रों ने छात्र एकता जिंदाबाद के नारे लगाए। राष्ट्रगान गाया। इस दौरान नीट पेपर लीक के बाद जान गंवाने छात्रों के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। उधर सीजेपी के प्रतिनिधियों के साथ वार्ता के बाद नड्डा ने कहा, 'मित्रों, आज सौरव के साथ हमारी तीसरी बैठक हुई। आज भी लंबी बातचीत हुई।

उन्होंने चार पॉइंट दिए और उनकी मांगों पर चर्चा हुई। सबसे पहली मांग थी कि प्रदर्शनकारियों के खिलाफ कोई कार्रवाई न हो, जिसे सरकार ने स्वीकार कर लिया है'। उन्होंने आगे कहा, 'पांच बिंदुओं के प्रस्ताव पर हमारा कहना है कि परीक्षा सुधार के लिए चिंतन करेंगे और फिर इन्हें इसकी जानकारी देंगे'। इसके बाद नड्डा ने प्रदर्शनकारियों से आंदोलन खत्म करने को कहा। सहमति बनने के बाद वहीं पर कॉकरोच जनता पार्टी की ओर से कहा गया, ह्यसरकार ने हमारी मांगें मान ली हैं। सलिए हम तुरंत प्रदर्शन खत्म करने की अपील करते हैं। आगे की जानकारी बाद में देंगे'।

डीएम ज्ञानेन्द्र सिंह की कार्यशैली ने बदली अधिकारी और जनता के बीच की दूरी

फरियाद लेकर आने वालों को मिलता है भरोसा, मदद और समाधान का रास्ता

मीनू खां

जिलाधिकारी ज्ञानेन्द्र सिंह ने पीलीभीत जनपद में प्रशासनिक जिम्मेदारी संभालने के साथ ही आम जनता के बीच अपनी अलग पहचान बनाई है। उनके कार्य करने का तरीका और जरूरतमंद लोगों की समस्याओं को गंभीरता से सुनकर समाधान कराने की पहल लोगों के बीच चर्चा का विषय बनी हुई है। आमतौर पर जिलाधिकारी का पद बेहद जिम्मेदारी और व्यस्तता वाला माना जाता है, लेकिन ज्ञानेन्द्र सिंह जरूरतमंदों की सहायता के लिए अपने व्यस्त कार्यक्रम के बीच भी समय निकालते हैं।

जनता के बीच उनकी कार्यशैली को लेकर यह धारणा बनी है कि कोई व्यक्ति अपनी समस्या लेकर उनके पास पहुंचता है तो उसकी बात को गंभीरता से सुना जाता है। अधिकारी होने के बावजूद आम लोगों से सहजता से मिलना और उनकी परेशानियों को समझना उनकी कार्यशैली का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। यही वजह है कि जिले के दूरदराज क्षेत्रों से आने वाले लोग भी अपनी समस्याएं लेकर जिला मुख्यालय पहुंचते हैं और उन्हें उम्मीद रहती है कि उनकी समस्या का उचित समाधान कराया जाएगा।

जिलाधिकारी ज्ञानेन्द्र सिंह के कार्यकाल में जनसुनवाई को प्रभावी बनाने पर भी विशेष जोर दिया जा रहा है। विभिन्न विभागों से जुड़ी शिकायतों को संबंधित अधिकारियों तक पहुंचाकर उनके निस्तारण की स्थिति पर नजर रखने का प्रयास किया जाता है। इससे फरियादियों को अपनी समस्या के समाधान की उम्मीद बनी रहती है।

प्रशासनिक स्तर पर भी जिलाधिकारी द्वारा अधिकारियों को आम जनता के प्रति संवेदनशील रहने और शासन की योजनाओं का लाभ पात्र लोगों तक पहुंचाने के निर्देश दिए जाते हैं। गरीब, असहाय और जरूरतमंद लोगों की समस्याओं को प्राथमिकता से सुनने की उनकी पहल को लोग सकारात्मक नजरिए से देखते हैं।

जिले में विकास कार्यों, कानून-व्यवस्था, स्वास्थ्य, शिक्षा और जनकल्याणकारी योजनाओं की निगरानी के साथ ही जिलाधिकारी का जोर इस बात पर भी रहता है कि सरकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की समस्याओं को समझने के लिए स्थलीय निरीक्षण और अधिकारियों के माध्यम से फीडबैक लेने की व्यवस्था भी प्रशासनिक कार्यप्रणाली का हिस्सा है।

जनता के बीच उनकी छवि एक ऐसे अधिकारी के रूप में बन रही है, जो प्रशासनिक दायित्वों के साथ मानवीय संवेदनाओं को भी महत्व देते हैं। लोगों का कहना है कि किसी भी अधिकारी की असली पहचान उसके पद से नहीं, बल्कि उसके व्यवहार और जनता के प्रति संवेदनशीलता से होती है। इसी कसौटी पर जिलाधिकारी ज्ञानेन्द्र सिंह की कार्यशैली को लोग सराहनीय मान रहे हैं और उम्मीद कर रहे हैं कि भविष्य में भी जरूरतमंदों की समस्याओं के समाधान के लिए इसी तरह प्रभावी पहल जारी रहेगी।

खाकी का नया चमकता सितारा

एसीपी सिद्धार्थ गौतम

संघर्ष की भट्ठी से तपकर निकले गाजियाबाद के उस जांबाज की कहानी, जिसके इरादों के आगे घुटने टेकते हैं अपराधी

राजधानी दिल्ली से सटे गाजियाबाद कमिश्नरेट का कविनगर इलाका। ये वो क्षेत्र है जिसे गाजियाबाद का दिल कहा जाता है। वीआईपी मूवमेंट, प्रशासनिक दफ्तर, रसूखदार सोसायटियां और व्यापारिक हलचल। इस बेहद संवेदनशील और महत्वपूर्ण सर्किल की सुरक्षा और कानून-व्यवस्था की कमान आज एक ऐसे युवा पुलिस अधिकारी के हाथों में है, जिसकी हनक से अपराधी कांपते हैं और जिसकी सादगी पर आम जनता भरोसा करती है। हम बात कर रहे हैं प्रांतीय पुलिस सेवा (PPS)

ललित कुमार

के बेहद सक्रिय और तेज-तर्रार अधिकारी सिद्धार्थ गौतम की, जिन्हें हाल ही में एसीपी कविनगर की कमान सौंपी गई है, साथ ही उनके कंधों पर लाइसेंसिंग और पुलिस लाइंस का अतिरिक्त महत्वपूर्ण कार्यभार भी है। लेकिन इस चमकती वर्दी और रौबदार कंधों पर लगे स्टार्स के पीछे एक लंबा सफर है-एक ऐसा सफर जो कड़ी मेहनत, अटूट संकल्प और मिट्टी से जुड़े रहकर आसमान छूने की जिद से बना है।

बिहार की मिट्टी से उपजा प्रशासनिक संकल्प

सिद्धार्थ गौतम का जन्म 20 सितंबर 1990 को बिहार के ऐतिहासिक जिले पूर्वी चंपारण में हुआ था। यह वही चंपारण की ऐतिहासिक धरती

है जिसने कभी महात्मा गांधी के सत्याग्रह को नई दिशा दी थी। इसी मिट्टी के संस्कार सिद्धार्थ के भीतर रचे-बसे हैं। उनके पिता श्री उमेश कुमार ने उन्हें बचपन से ही अनुशासन, ईमानदारी और समाज के प्रति संवेदनशीलता का पाठ पढ़ाया। एक मध्यमवर्गीय परिवार में पले-बढ़े सिद्धार्थ का शुरूआती जीवन बेहद अनुशासित और वैचारिक रूप से समृद्ध माहौल में बीता। उनके घर में शिक्षा और नैतिक मूल्यों को हमेशा सर्वोपरि रखा गया। स्कूली शिक्षा के दौरान ही सिद्धार्थ के मन में समाज के लिए कुछ बड़ा करने की तड़प पैदा होने लगी थी। उन्होंने जब स्नातक की पढ़ाई पूरी की, तो उनके सामने करियर के कई विकल्प थे। वे चाहते तो कॉर्पोरेट जगत की चकाचौंध चुन सकते थे, लेकिन उनके भीतर देश सेवा और प्रशासनिक व्यवस्था का हिस्सा बनकर बदलाव लाने की ललक थी। उन्होंने तय कर लिया था कि वे प्रशासनिक सेवाओं के जरिए ही देश की सेवा करेंगे। इसके बाद शुरू हुआ कठिन तपस्या का दौर।

कठिन परीक्षा और खाकी की शपथ

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा (PCS) परीक्षा को देश की सबसे कठिन राज्य स्तरीय परीक्षाओं में गिना जाता है। इस परीक्षा को पास करने के लिए केवल किताबी ज्ञान काफी नहीं होता, बल्कि इसके लिए मानसिक सुदृढ़ता और विषय की गहरी समझ जरूरी होती है। सिद्धार्थ गौतम ने इस चुनौती को स्वीकार किया, उन्होंने खुद को अध्ययन के बंद कमरों में झोंक दिया। इतिहास की जटिलताओं को समझा, भारतीय संविधान और राजनीति विज्ञान की बारीकियों को आत्मसात किया, कानून की धाराओं को अपनी ताकत बनाया और समसामयिक विषयों पर इतनी मजबूत पकड़ बनाई कि परीक्षा का हर पड़ाव उनके संकल्प के सामने छोटा नजर आने लगा । उनकी इस अटूट लगन का परिणाम यह हुआ कि उन्होंने पहले ही गंभीर प्रयासों में सफलता का परचम लहराया और उत्तर प्रदेश पुलिस में पीपीएस संवर्ग के लिए चुने गए। यूपी पुलिस में पीपीएस अधिकारियों का चयन सीधे डिप्टी एसपी (DSP) के रूप में होता है, जो कि राज्य पुलिस सेवा का सबसे गौरवशाली पद माना जाता है।

21 जनवरी 2022–यह वह ऐतिहासिक तारीख थी, जब सिद्धार्थ गौतम आधिकारिक तौर पर उत्तर प्रदेश पुलिस का हिस्सा बने। इसके बाद वे पहुंचे यूपी पुलिस के ऐतिहासिक प्रशिक्षण केंद्र डॉ. भीमराव अंबेडकर पुलिस अकादमी, मुरादाबाद।

मुरादाबाद की इस अकादमी में सिद्धार्थ ने केवल किताबी कानून नहीं सीखा, बल्कि कड़कड़ाती ठंड और तपती धूप में परेड ग्राउंड पर पसीना बहाया। उन्होंने अत्याधुनिक हथियारों को चलाने की कला सीखी, फॉरेंसिक साइंस की बारिकियों को समझा, साइबर क्राइम से निपटने के गुर सीखे और भीड़ नियंत्रण से लेकर दंगों से निपटने की व्यावहारिक ट्रेनिंग पूरी की। जब वे पासिंग आउट परेड के बाद बाहर निकले, तो वे सिर्फ एक अधिकारी नहीं, बल्कि उत्तर प्रदेश पुलिस के एक अभेद्य सुरक्षा कवच बन चुके थे।

गाजियाबाद में कदम और 'सिंघम' अवतार

20 अगस्त 2023 को सिद्धार्थ गौतम की पहली तैनाती गाजियाबाद पुलिस कमिश्नरेट में हुई। चूंकि गाजियाबाद में कमिश्नरेट प्रणाली लागू हो चुकी थी, इसलिए क्षेत्राधिकारी के पद को सहायक पुलिस आयुक्त (ACP) का नया नाम मिला। शुरूआत में सिद्धार्थ को मसूरी और उसके बाद बेहद संवेदनशील माने जाने वाले लोनी सर्किल की जिम्मेदारी सौंपी गई। दिल्ली बॉर्डर से सटे होने के कारण लोनी इलाका भौगोलिक और आपराधिक दोनों दृष्टिकोण से पुलिस के लिए हमेशा एक अग्निपरीक्षा की तरह रहता है। यहाँ डकैती, रंगदारी, मर्डर और सीमा पार से होने वाली आपराधिक गतिविधियां पुलिस के लिए हर रोज नई चुनौतियां खड़ी करती हैं। लेकिन युवा एसीपी सिद्धार्थ गौतम ने कार्यभार संभालते ही साफ कर दिया कि अपराधियों के लिए लोनी में कोई जगह नहीं है। उन्होंने अपने काम करने के तरीके से पुलिसिंग की परिभाषा बदल दी। वे सिर्फ दफ्तर में बैठकर फाइलें साइन करने वाले अधिकारी नहीं थे, बल्कि आधी रात को अचानक थानों का औचक निरीक्षण करना, खुद बुलेटप्रूफ जैकेट पहनकर कॉम्बिंग ऑपरेशन का नेतृत्व करना और क्राइम सीन पर सबसे पहले पहुँचना उनकी पहचान बन गया। बहुत कम समय में अपराधियों के बीच उनके नाम का खौफ फैल गया और वे गाजियाबाद के सबसे लोकप्रिय युवा पुलिस अफसरों में शुमार हो गए।

लोनी के वो तीन बड़े मामले, जिन्होंने कानून का इकबाल बुलंद किया

लोनी में अपनी तैनाती के दौरान एसीपी सिद्धार्थ गौतम ने कई ऐसे ब्लाइंड और जटिल मामलों का खुलासा किया, जिन्होंने न केवल गाजियाबाद बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश में सुर्खियां बटोरीं। उनके कुछ सबसे चर्चित ऑपरेशन्स इस प्रकार हैं:

रिटायर्ड आईएफ जवान योगेश हत्याकांड का सनसनीखेज खुलासा

लोनी के अशोक विहार इलाके में तब सनसनी फैल गई, जब भारतीय वायुसेना के 58 वर्षीय सेवानिवृत्त कर्मचारी योगेश की दो बाइक सवार शूटरों ने अंधाधुंध गोलियां बरसाकर दिनदहाड़े हत्या कर दी। इस वारदात ने कानून-व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए थे। मामला बेहद पेचीदा था क्योंकि हत्यारों का कोई सुराग नहीं मिल रहा था। मामले की कमान खुद एसीपी सिद्धार्थ गौतम ने संभाली। उन्होंने रात-दिन एक कर तकनीकी साक्ष्य, सीसीटीवी फुटेज और सर्विलांस की मदद ली। जब मामले का खुलासा हुआ, तो हर कोई दंग रह गया। बुजुर्ग योगेश की हत्या किसी बाहरी दुश्मन ने नहीं, बल्कि उनके सगे बेटों ने ही संपत्ति के लालच में कराई थी। बेटों ने पिता को रास्ते से हटाने के लिए भारी-भरकम रकम देकर शूटर हायर किए थे, जिसमें उत्तर प्रदेश पुलिस का ही एक निलंबित सिपाही भी शामिल था। सिद्धार्थ गौतम की टीम ने इस वीभत्स हत्याकांड की कड़ियों को जोड़कर सभी आरोपियों को सलाखों के पीछे पहुँचाया।

गनौली का ब्लाइंड मर्डर और 50 हजारी बदमाश का खात्मा

गाजीपुर/लोनी के गनौली गांव से ओमकार सिंह नाम के व्यक्ति का अचानक अपहरण कर लिया गया और बाद में उसकी बेरहमी से हत्या कर दी गई। इस मर्डर मिस्ट्री का मुख्य आरोपी गौरव नागर पुलिस की पकड़ से बाहर चल रहा था और उस पर पुलिस प्रशासन द्वारा 50 हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया था। जून 2026 की एक गर्म रात को एसीपी सिद्धार्थ गौतम को गुप्त सूचना मिली कि इनामी बदमाश बंथला-चिरौड़ी रोड से गुजरने वाला है। सिद्धार्थ ने तुरंत रणनीति बनाई और खुद मोर्चे पर डट गए। जब पुलिस टीम ने बदमाश को घेरकर सरेंडर करने को कहा, तो उसने पुलिस पर सीधी फायरिंग शुरू कर दी। अपनी टीम की जान खतरे में देख सिद्धार्थ गौतम के नेतृत्व में पुलिस ने आत्मरक्षार्थ जवाबी फायरिंग की। दोनों तरफ से गोलियां चलीं। जवाबी कार्रवाई में मुख्य आरोपी गौरव नागर के पैर में गोली लगी। पुलिस ने उसे दबोचकर अस्पताल में भर्ती कराया और इस प्रकार एक और सनसनीखेज ब्लाइंड मर्डर केस का पटाक्षेप हुआ।

मासूम बच्ची से दरिंदगी, एनकाउंटर में पकड़ा गया आरोपी

लोनी बॉर्डर थाना क्षेत्र में एक बेहद हृदयविदारक मामला सामने आया, जहाँ एक 13 वर्षीय नाबालिग लड़की के साथ दुष्कर्म किया गया, जिसके चलते वह गर्भवती हो गई। इस घटना ने समाज को झकझोर कर रख दिया था। घटना का मुख्य आरोपी फरार चल रहा था और पुलिस के लिए उसे पकड़ना साख का सवाल बन चुका था। एसीपी सिद्धार्थ गौतम ने इस मामले को व्यक्तिगत संवेदनशीलता के साथ लिया। उन्होंने आरोपी की धरपकड़ के लिए कई टीमें बनाईं। जून 2026 में ही पुलिस को सूचना मिली कि आरोपी सेवाधाम-तीलामोड़ रोड के पास छिपा है। जब पुलिस ने घेराबंदी की, तो आरोपी ने खुद को घिरा देख अवैध तमंचे से पुलिस टीम पर जानलेवा फायरिंग कर भागने का प्रयास किया। लेकिन सिद्धार्थ गौतम की टीम पूरी तरह मुस्तैद थी। पुलिस की आत्मरक्षार्थ फायरिंग में आरोपी के पैर में गोली लगी और वह जमीन पर गिर पड़ा। पुलिस ने मौके से अवैध हथियार और कारतूस बरामद कर उसे गिरफ्तार किया। पीड़िता और उसके परिवार को न्याय दिलाकर सिद्धार्थ गौतम ने एक बार फिर साबित किया कि वे अपराधियों के लिए काल हैं।

वर्तमान और भविष्य, कविनगर में नई चुनौती

लोनी में अपराधियों की कमर तोड़ने के बाद, गाजियाबाद पुलिस कमिश्नर ने सिद्धार्थ गौतम की कार्यकुशलता पर भरोसा जताते हुए उन्हें कविनगर सर्किल के सहायक पुलिस आयुक्त (ACP) की कमान सौंपी है। इसके साथ ही, उनकी प्रशासनिक दक्षता को देखते हुए उन्हें पुलिस लाइंस और लाइसेंसिंग शाखा का अतिरिक्त प्रभार भी दिया गया है। लाइसेंसिंग विंग पुलिसिंग का वह हिस्सा है जहां अत्यधिक पारदर्शिता और सतर्कता की जरूरत होती है। सिद्धार्थ गौतम का इस पद पर

आना यह दर्शाता है कि विभाग को उनकी ईमानदारी और कार्यशैली पर पूरा भरोसा है।

एसीपी सिद्धार्थ गौतम का मानना है कि पुलिस का काम केवल अपराधियों को पकड़ना नहीं, बल्कि समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति के मन में सुरक्षा का भाव जगाना है। वे कहते हैं, 'वर्दी सिर्फ एक नौकरी नहीं है, यह एक जिम्मेदारी है जो हमें जनता की सेवा के लिए ईश्वर और संविधान ने सौंपी है।' निश्चित रूप से, पूर्वी चंपारण की गलियों से शुरू हुआ सिद्धार्थ गौतम का यह सफर आज उत्तर प्रदेश पुलिस के लिए एक मिसाल बन चुका है। अपनी निष्पक्षता, कठोर अनुशासन और अपराधियों के खिलाफ 'जीरो टॉलरेंस' की नीति के चलते वे आने वाले समय में खाकी के आकाश में और भी तेजी से चमकेंगे। मैगजीन परिवार इस जांबाज अधिकारी के उज्ज्वल भविष्य और उनकी राष्ट्रसेवा को सलाम करता है।

द कॉप-एक्शन नरेटिव

यह शैली बेहद डायनेमिक, रोमांचक और एक्शन से भरपूर है। इसमें थ्रिलर उपन्यासों जैसी भाषा का प्रयोग किया गया है, जो पाठक को बांधे रखती है। यह पुलिस की साहसिक मुठभेड़ों, रात के अंधेरे में अपराधियों की घेराबंदी और कड़क लीडरशिप को बेहद शानदार ढंग से प्रोजेक्ट करती है।

द एनकाउंटर कॉपः सिद्धार्थ गौतम

गाजियाबाद की सड़कों पर जब गूंजता है इस जांबाज का नाम, तो थरथरा उठती है जुर्म की सल्तनत। रात के ढाई बजे हैं। गाजियाबाद की सीमा से लगी बंथला-चिरौड़ी सड़क पर सन्नाटा पसरा है। केवल सिसकती हवाओं और कीड़ों की आवाजें आ रही हैं। अचानक एक बिना नंबर की बाइक की हेडलाइट चमकी। पुलिस की बेरिकेडिंग देखकर बाइक सवार ने यू-टर्न लेने की कोशिश की, लेकिन तभी पीछे से दो गाड़ियां आकर उसका रास्ता रोक देती हैं। गाड़ी का दरवाजा खुलता है। बुलेटप्रूफ जैकेट पहने, हाथ में सर्विस पिस्टल थामे एक युवा और बेहद फिट पुलिस अधिकारी बाहर निकलता है। उसकी आंखों में चीते जैसी सतर्कता है। वह कड़क आवाज में ललकारता हैः'पुलिस ने तुम्हें चारों तरफ से घेर लिया है, सरेंडर कर दो!' जवाब में बदमाश की तरफ से गोली चलती है। गोली पुलिस जीप के शीशे को छूती हुई निकल जाती है। लेकिन सामने खड़ा अधिकारी विचलित नहीं होता। वह तुरंत अपनी पोजीशन लेता है। दो सेकेंड के भीतर पुलिस की तरफ से जवाबी फायरिंग होती है। एक तेज चीख गूंजती है और 50 हजार का इनामी हत्यारा पैर में गोली लगने के बाद जमीन पर तड़प रहा होता है। यह कोई फिल्मी सीन नहीं है। यह गाजियाबाद की सड़कों पर कानून का राज स्थापित करने वाले एसीपी सिद्धार्थ गौतम की कार्यशैली की एक बानगी है। सिद्धार्थ गौतम के काम करने का एक खास पैटर्न है। जब भी उनके इलाके में कोई संगीन वारदात होती है, वे तुरंत एक्टिव हो जाते हैं। वे दफ्तर में बैठकर रिपोर्ट का इंतजार नहीं करते, बल्किः घटना के तुरंत बाद मल्टीपल पुलिस टीमें गठित करते हैं। हर टीम को खुद टास्क अलॉट करते हैं और लगातार ग्रिड मैपिंग के जरिए खुद मॉनिटरिंग करते हैं। तकनीक, मुखबिर तंत्र और ग्राउंड विजिबिलिटी का ऐसा कॉकटेल तैयार करते हैं कि अपराधी को भागने का रास्ता नहीं मिलता। इसीलिए, लोनी में उनके कार्यकाल के दौरान एनकाउंटर्स और त्वरित गिरफ्तारियों का ग्राफ तेजी से ऊपर गया।

नया मिशनः कविनगर और लाइसेंसिंग विंग की कमान

उनकी इसी बेदाग छवि, कड़क कार्यशैली और प्रशासनिक पकड़ को देखते हुए उन्हें अब गाजियाबाद के सबसे संभ्रांत और महत्वपूर्ण कविनगर सर्किल के एसीपी की कमान सौंपी गई है। कविनगर जैसे संवेदनशील इलाके में जहाँ कानून-व्यवस्था बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है, वहीं सिद्धार्थ गौतम की तैनाती से स्थानीय नागरिकों और व्यापारियों में सुरक्षा का भरोसा दोगुना हो गया है। इसके साथ ही, उन्हें लाइसेंसिंग शाखा और पुलिस लाइंस का अतिरिक्त कार्यभार भी दिया गया है। आर्म्स और अन्य लाइसेंसिंग प्रक्रियाओं में पारदर्शिता लाना और पुलिस लाइंस के प्रबंधन को सुदृढ़ करना उनके नए मिशन का हिस्सा है। अपनी नई भूमिका पर बात करते हुए सिद्धार्थ गौतम बेहद शालीनता से कहते हैंः ₹जिम्मेदारी जितनी बड़ी होगी, काम करने का जज्बा उतना ही मजबूत होगा। कानून सबके लिए बराबर है और अपराधियों के लिए गाजियाबाद में कोई सुरक्षित कोना नहीं है। खाकी के स्वाभिमान, जनता के विश्वास और अपराधियों के काल बन चुके एसीपी सिद्धार्थ गौतम की यह कहानी देश के उन लाखों युवाओं के लिए प्रेरणा है जो देश सेवा का सपना देखते हैं। गाजियाबाद कमिश्नरेट को गर्व है अपने इस चमकते हुए सितारे पर!

समग्र हिंदुत्व की राह पर भाजपा

प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी की नई टीम में सपा के पीडीए की धार कुंद करने का प्रयास किया गया है। राज्य में भाजपा का संगठन 6 क्षेत्रों में विभाजित है। इनमें पश्चिम नवाब सिंह नागर को, ब्रज क्षेत्र में पूरन लाल लोधी तथा कानपुर क्षेत्र में राम किशोर साहू अध्यक्ष बने हैं। काशी क्षेत्र के अध्यक्ष अशोक चौरसिया बनाए गए हैं।

अनादि शुक्ल

वर्ष 2027 के विधानसभा चुनावों के दृष्टिगत उत्तर प्रदेश में सभी राजनैतिक दलों ने अपनी चुनावी तैयारियों और मुद्दों को अंतिम रूप देना प्रारंभ कर दिया है। इसी क्रम में भारतीय जनता पार्टी ने अपनी बहुप्रतीक्षित कार्यकारिणी भी घोषित कर दी है। माना जा रहा है कि भाजपा की यह टीम मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व केंद्रीय नेतृत्व की पसंद से चुनी गई है किन्तु इसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भी महती भूमिका है। भाजपा ने अपनी नई टीम में सामाजिक सन्तुलन साधने के साथ ही सपा के पीडीए व बसपा के ब्राह्मण कार्ड को रोकने का प्रबंध किया है। अब चुनाव केवल सामाजिक समीकरण के बल पर ही नहीं जीते जाते इसलिए भाजपा ने अपनी टीम की संरचना से यह भी स्पष्ट किया है कि वह चुनावी दंगल बूथ स्तर पर आकर ही लड़ेगी। भाजपा अब अपने बूथ प्रबंधन को सशक्त करने के लिए काम करेगी जिसके लिए प्रदेश की टीम को एकदम युवा व कर्मठ चेहरे दिए गए हैं। भाजपा की प्रदेश कार्यकारिणी में प्रवक्ताओं की टीम भी घोषित कर दी गई है और सोशल मीडिया प्रमुख की भी नियुक्ति की गई है क्योंकि अब प्रमुख राजनैतिक नैरेटिव युद्ध पारंपरिक और सोशल मीडिया दोनों पर लड़ा जाता है। चुनावी जंग जीतने में मीडिया व सोशल मीडिया भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पश्चिम बंगाल चुनावों में नैरेटिव युद्ध ने भाजपा की विजय में बड़ी भूमिका निभाई थी।

भाजपा की नई कार्यकारिणी से यह बात भी साफ हो गई है कि आगामी विधानसभा चुनाव

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के चेहरे व हिंदुत्व की धर तेज करके ही लड़ा जाएगा। प्रदेश में योगी जी का 'एक रहेंगे तो नेक रहेंगे' तथा 'बटेंगे तो कटेंगे' का नारा फिर चलने वाला है। प्रदेश के आम हिन्दू जनमानस को योगी जी पर पूरा भरोसा है विशेषकर कानून व्यवस्था व नारी सुरक्षा आदि विषयों के कारण। प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी की नई टीम में सपा के पीडीए की धार कुंद करने का प्रयास किया गया है। राज्य में भाजपा का संगठन 6 क्षेत्रों में विभाजित है। इनमें पश्चिम नवाब सिंह नागर को, ब्रज क्षेत्र में पूरन लाल लोधी तथा कानपुर क्षेत्र में राम किशोर साहू अध्यक्ष बने हैं। काशी क्षेत्र के अध्यक्ष अशोक चौरसिया बनाए गए हैं। अवध के क्षेत्रीय अध्यक्ष अवधेश द्विवेदी बने हैं। गोरखपुर क्षेत्र की कमान विनोद राय को मिली है जो भूमिहार हैं। प्रदेश में 19 उपाध्यक्ष बनाए गए हैं और इनमें भी ओबीसी वर्ग को प्राथमिकता दी गई है। 8 महामंत्रियों की सूची मे भी 4 ओबीसी वर्ग के हैं।

प्रदेश भाजपा कार्यकारिणी के चयन में सामाजिक संतुलन के साथ-साथ क्षेत्रीय संतुलन साधने का प्रयास भी किया गया है। सपा छोड़कर भापजा मे शामिल हुई पूजा पाल को प्रयागराज में जिम्मेदार दी गई है। एक समय प्रयागराज में माफिया अतीक अहमद का आतंक था और उस पर पूजा पाल के पति राजू पाल की हत्या का आरोप था। भाजपा ने अपनी कार्यकारिणी के माध्यम से दलित गैर-जाटव समुदाय से पासी और कोरी समाज को भी साधने का प्रयास किया है। भाजपा ने कुशवाहा, मौर्य और सैनी समुदाय से तीन नेताओं को उपाध्यक्ष बनाया है जाट, कुर्मी, यादव और पाल समाज से भी उपाध्यक्ष बनाया गया।

भाजपा ने अपनी कार्यकारिणी के माध्यम से दलित गैर-जाटव समुदाय से पासी और कोरी समाज को भी साधने का प्रयास किया है। भाजपा ने कुशवाहा, मौर्य और सैनी समुदाय से तीन नेताओं को उपाध्यक्ष बनाया है जाट, कुर्मी, यादव और पाल समाज से भी उपाध्यक्ष बनाया गया।

भाजपा की कार्यकारिणी से प्रतीत हो रहा है कि भाजपा के तरकश में अभी कई तीर छिपे हैं। यह बात तो तय हो गई है कि अब भाजपा समग्र हिंदुत्व की राजनीति करने जा रही है। भाजपा व संघ द्वारा अब प्रदेश में बंगाल की ही तरह 94 प्रतिशत हिंदू मतदाताओं को एकजुट करने का प्रयास किया जाएगा। भाजपा कार्यकारिणी की सूची आते ही सपा, बसपा व कांग्रेस की राजनीतिक हलचलें भी तेज हो गई है। यह चर्चा भी सुनी जा रही है कि भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों के चुनाव वर्ष 2026 के अक्टूबर- नवंबर में भी करवा सकता है क्योंकि आगे जनगणना का वृहद अभियान चलना है। साथ ही भारतीय जनता पार्टी पश्चिम बंगाल तथा असम सहित कई राज्यों के निकाय चुनावों में लगातार मिल रही सफलता से उत्साहित है और अपनी विजय का संवेग बनाए रखने के लिए के लिए विपक्ष को तैयारी के लिए समय नहीं देना चाहती।

राजस्थान: 13 साल की मासूम से 32 लोगों ने की दरिंदगी

राजस्थान का श्रीगंगा नगर। एक 13 साल की मासूम बच्ची और 32 हैवान दरिंदे। बच्ची को पांच दिनों तक चार अलग-अलग होटलों में रखकर उसके साथ हैवानियत की गई। बच्ची 18 जून को अपनी सहेली से मिलने श्रीविजय नगर गई थी। वहां से वापस लौटने के दौरान एक ऑटो चालक ने बच्ची को अगवा करके एक होटल मालिक को बेच दिया। जिसके बाद होटल मालिक ने अपने मैनेजर के साथ मिलकर मासूम बच्ची से दरिंदगी की।

इसके बाद दरिंदगी का यह घिनौना खेल पांच दिनों तक चलता रहा। बच्ची के वापस नहीं लौटने पर परिजनों ने पुलिस से शिकायत की। पुलिस ने 22 जून को बच्ची को होटल जॉय इन से बरामद किया। फिलहाल बच्ची की हालत गंभीर बनी हुई है।

ब्रिज पंवार

राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले में 13 वर्षीय एक नाबालिग बच्ची के साथ हुई दरिंदगी ने पूरे प्रदेश को झकझोर कर रख दिया है। पुलिस जांच के अनुसार, बच्ची को पांच दिनों तक अलग-अलग होटलों में बंधक बनाकर रखा गया, जहां उसके साथ कई लोगों ने दुष्कर्म किया। इस मामले में अब तक 12 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। जांच के दौरान संगठित अपराध, मानव तस्करी और अवैध होटल नेटवर्क जैसे पहलू भी सामने आए हैं।

घटना के बाद जिलेभर में लोगों का गुस्सा फूट पड़ा है और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग तेज हो गई है। पुलिस में दर्ज एफआईआर के मुताबिक, 18 जून 2026 को 13 वर्षीय बच्ची अपनी एक सहेली से मिलने श्रीविजयनगर गई थी। परिवार को उम्मीद थी कि वह कुछ देर बाद घर लौट आएगी, लेकिन देर शाम तक उसका कोई पता नहीं चला। परिजनों ने रिश्तेदारों और परिचितों के यहां तलाश की, लेकिन जब कोई सुराग नहीं मिला तो पुलिस थाने पहुंचकर गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई।

जांच में सामने आया कि उसी रात बच्ची श्रीगंगानगर पहुंची और घर जाने के लिए एक ई-रिक्शा में बैठी। पुलिस के अनुसार, इसी दौरान रामबाबू नाम का ई-रिक्शा चालक उसे मिला। आरोप

है कि उसने बच्ची को भरोसे में लेकर घर छोड़ने की बात कही, लेकिन उसे सीधे एक होटल ले गया। पुलिस का कहना है कि वहां उसने बच्ची को होटल संचालक के हवाले कर दिया और इसके बदले पैसे लिए। पुलिस जांच के अनुसार, बच्ची को सबसे पहले 'होटल जॉय इन' ले जाया गया। इसके बाद अगले पांच दिनों तक उसे अलग-अलग होटलों में रखा गया। शुरूआती जांच में तीन होटलों की जानकारी सामने आई थी, लेकिन बाद में बीरबल चौक के पास स्थित 'ड्रीम' होटल का भी खुलासा हुआ। पुलिस का दावा है कि इन चारों होटलों में बच्ची को छिपाकर रखा गया और वहीं उसके साथ कथित तौर पर सामूहिक दुष्कर्म किया गया। जांच एजेंसियों के मुताबिक, होटल मालिकों और प्रबंधकों ने कथित तौर पर पांच दिनों के भीतर 32 से अधिक लोगों को बच्ची तक पहुंच उपलब्ध कराई।

आरोप है कि दिन और रात अलग-अलग समय पर कई लोग उसके साथ दुष्कर्म करते रहे। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि बच्ची के विरोध करने या दर्द से तड़पने पर उसे जबरन शराब पिलाई जाती थी, ताकि वह विरोध न कर सके। जांच के दौरान एक और चौंकाने वाला खुलासा हुआ। पुलिस के अनुसार, एक होटल मैनेजर ने कथित तौर पर बच्ची की तस्वीरें खींचकर सोशल मीडिया के जरिए कई लोगों तक पहुंचाईं। जांच एजेंसियों का मानना है कि इन्हीं तस्वीरों के जरिए कई लोग होटल पहुंचे।

पुलिस ने इन्हीं डिजिटल साक्ष्यों के आधार पर कई अहम सुराग जुटाए हैं और पूरे नेटवर्क की जांच की जा रही है। परिजनों की शिकायत के बाद पुलिस लगातार बच्ची की तलाश में जुटी थी। इसी दौरान 22 जून को 'होटल जॉय इन' से बच्ची को बरामद कर लिया गया। इसके बाद पूछताछ, सीसीटीवी फुटेज और मोबाइल फोन की जांच के आधार पर पूरे मामले की परतें खुलनी शुरू हुईं। पुलिस अब इस मामले की जांच संगठित अपराध और मानव तस्करी के एंगल से भी कर रही है।

अब तक पुलिस इस मामले में 12 आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है। गिरफ्तार आरोपियों में ई-रिक्शा चालक रामबाबू, होटल मालिक मयंक सैन, होटल मैनेजर हरदीप नाथ, सचिन, दीपक, तरुण सहित अन्य आरोपी शामिल हैं। पुलिस का कहना है कि कुछ आरोपियों ने सीधे अपराध किया, जबकि कुछ ने इसमें सहयोग किया। श्रीगंगानगर के एसपी हरिशंकर यादव की निगरानी में विशेषज्ञों की टीम चारों होटलों के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है।

आरोपियों के मोबाइल फोन भी जब्त किए गए हैं। जांच अधिकारियों का मानना है कि इस पूरे मामले में और भी लोगों की भूमिका सामने आ सकती है।

अवैध होटल कारोबार पर उठे सवाल

घटना के बाद जिले में संचालित कथित अवैध होटल कारोबार भी सवालों के घेरे में आ गया है। स्थानीय स्तर पर दावा किया जा रहा है कि जिले में 150 से अधिक होटल संचालित हैं, लेकिन उनमें से केवल करीब 40 के पास ही वैध लाइसेंस या पंजीकरण है। बाकी होटलों की वैधता और वहां चल रही गतिविधियों की जांच की मांग तेज हो गई है। लोगों का आरोप है कि होटलों में देह व्यापार और नशे का कारोबार किया जाता है। होटलों का पूरा कारोबार से संगठित गिरोह चलाते हैं। इन गिरोह की पुलिस और सत्ता तक भी सीधी पहुंच है।

पुलिस की कार्यशैली भी निशाने पर

मामले में पुलिस की कार्यशैली भी सवालों के घेरे में है। जानकारी के अनुसार, करीब आठ महीने पहले जिले में नाबालिग लड़कियों के कथित शोषण और अवैध गतिविधियों को लेकर अधिकारियों को इनपुट मिले थे। आरोप है कि समय रहते प्रभावी कार्रवाई नहीं की गई। अब इस मामले में पुलिस और प्रशासन की भूमिका की भी जांच की मांग उठ रही है। यदि पुलिस ने समय पर कार्रवाई की होती तो दरिंदों की इस तरह की घिनौनी वारदात को अंजाम देने की हिम्मत नहीं होती। इससे साफ है कि मानव तस्करी और देह व्यापार को स्थानीय पुलिस का सीधा संरक्षण हो सकता है। इस मामले में सरकार को पुलिस की भूमिका की जांच करनी चाहिए और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए।

राजस्थान में लिंगानुपात 928

राजस्थान में लिंगानुपात 928 है, यह राष्ट्रीय स्तर से भी कम है। हरियाणा और राजस्थान में बेटियों को लेकर माहौल पहले से ही खराब है। सरकारों की सख्ती से माहौल में कुछ सुधार तो आया है, लेकिन बेटियों की सुरक्षा को लेकर बहुत ज्यादा बदलाव नहीं आया है। श्रीगंगा नगर में हुई घिनौनी वारदात से तो यह बात समझ में आती ही है कि सरकारी प्रयास बेटियों की सुरक्षा के लिए नाकाफी हैं। यदि सरकार और पुलिस बेटियों की सुरक्षा के लिए सतर्क होती तो इस तरह की घिनौनी वारदात को रोका जा सकता था। देश में सबसे कम लिंगानुपात होने के बाद भी सरकार का चिंतित न होना और बेटियों की सुरक्षा को लेकर लापरवाही बरतना बेहद गंभीर है।

पुलिस गठजोड़ पर भी हो करारा प्रहार

मानव तस्करी और देह व्यापार पुलिस की लापरवाही से या फिर संरक्षण से ही चल रहे हैं। यह केवल एक जिले या प्रदेश की नहीं बल्कि पूरे देश और वैश्विक समस्या है। देश में आए दिन देह व्यापार के गंभीर मामले सामने आते हैं। अधिकांश मामलों में पुलिस की मिलीभगत भी सामने आती है। श्रीगंगा नगर में हुई इस घिनौनी वारदात की गहनता से जांच की जाए तो आरोपियों और पुलिस के बीच किसी स्तर पर गठजोड़ सामने आएगा। होटलों में चलने वाले देह व्यापार को पुलिस संरक्षण किसी न किसी रूप में प्राप्त है।

होटल संचालकों की ओर से स्थानीय पुलिस को मासिक तौर पर सुविधा शुल्क पहुंचाया जाता होगा, जिसके चलते पुलिस शिकायतों को नजरअंदाज करती आ रही है। होटल मालिक और मैनेजरों की इस घिनौनी करतूत में हिस्सेदारी से साफ है कि उन्हें पुलिस और कानून का कोई डर नहीं था। महज 13 साल की बच्ची से न केवल उन्होंने दरिंदगी की बल्कि उसे ग्राहकों के आगे भी परोसा गया।

राम मंदिर में चंदे की चोरी लापरवाही या नीयत में खोट

प्रवीण सिंह कुशवाहा

राम मंदिर की दान राशि हेरफेर का मामला इन दिनों सुर्खियों में है। जिन लोगों के हाथ में मंदिर की व्यवस्था थी वो सभी सवालों के घेरे में हैं। ट्रस्ट के पदाधिकारियों और कर्मचारियों से लेकर चंदे की गणना में लगे बैंककर्मी तक सवालों के घेरे में हैं। पूरे प्रांगण में ८०० कैमरे लगे हैं, उसके बाद भी चोरी कैसे हो गई। जब राम मंदिर आंदोलन चल रहा था, तब से लेकर आजतक चंदे का कोई लेखा-जोखा नहीं आया।

इस मामले में बहुत बड़े-बड़े लोगों की संलिप्तता है। दावा तो ये भी किया जा रहा है कि कंस्ट्रक्शन में भी बहुत ज्यादा भ्रष्टाचार हुआ है। वहां लगातार चोरी हुई और उसे टालने की कोशिश की जा रही है। ये मामला गंभीर है। अब तक ट्रस्ट क्यों बना हुआ है। उसे अब तक बर्खास्त कर दिया जाना चाहिए था। अगर चंदे की चोरी हो रही थी तो खुद ट्रस्ट को इसकी एफआईआर दर्ज करानी चाहिए थी। उसने ऐसा क्यों नहीं कराया? एसआईटी ने इतने दिन पूछताछ की, क्या उसने अभी तक कुछ बताया?

मुझे लगता है कि इन सबका बयान आना चाहिए था। इस मामले में संघ की चुप्पी ने मुझे हैरान किया है, प्रधानमंत्री मोदी की चुप्पी ने मुझे हैरान किया है। ये धर्म के साथ बहुत बड़ा अपराध है। सच्चाई सामने आनी चाहिए। एक हिदू होने के नाते मैं शद्धमदा महसूस कर रहा हूं। चंपत राय मौन क्यों हैं? उन्हें सामने आकर बताना चाहिए। ये आस्था की चोरी हुई है। राम मंदिर आंदोलन के समय से ही पैसे का कभी कोई हिसाब नहीं दिया गया। रुपये दिए, लोगों ने जेवर दिए, शिलाएं दान कीं, जिनमें सोने-चांदी की शिलाएं थीं वो सब कहां गईं? ये सिर्फ हिंदुओं की आस्था का मामला नहीं है। राम भारतीयता का प्रतीक हैं। ये भारतीयता को तकलीफ देने वाला मामला है। ये जो एसआईटी बनी है, वो एसआईटी है ही नहीं। एसआईटी हमेशा एफआईआर के बाद गठित होती है। ये सिर्फ एक जांच कमेटी है।

आरोप सबसे अधिक अगर किसी पर लग रहे हैं तो वह चंपत राय, और उनके पूर्व चालक टिन्नू यादव पर । चंपत की नीयत पर किसी को संदेह नहीं है क्योंकि वह सरकारी नौकरी छोड़कर जिस तरह से संघ के कामकाज व राम मंदिर आंदोलन के लिए अपनी सर्वोच्च क्षमता के साथ पूरी ईमानदारी से लगे थे । मुझे अच्छी तरह याद है जब राम मंदिर का उद्घाटन था और मैंने उनसे पूछा कि राम मंदिर के निर्माण में बहुत पैसा आयेगा, इसको कैसे व्यवस्थित रखा जायेगा, तो उन्होंने कहा था कि राम के पैसे की व्यवस्था की जरूरत नहीं, उनके पैसे की निगरानी नहीं. सारा पैसा ईमानदारी से मंदिर निर्माण में लगेगा, और जो राम का पैसा लेगा, उसे कुष्ठ रोग जैसी बीमारी लगेगा। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि उनकी कोई संलिप्तता होगी

लेकिन चूंकि व्यवस्था उन्हीं के हाथों में है तो उनको जांच रिपोर्ट आने तक खुद को इस्तीफा देकर अलग कर लेना चाहिए।

अगर सही समझें तो राम मंदिर के दानपात्रों की धनराशि में हेराफेरी किए जाने के साथ ही इससे जुड़े साक्ष्यों को मिटाने का खेल भी लंबे समय से चल रहा था। गबन के खेल में जो ट्रस्ट कर्मी नहीं शामिल होते थे, उन्हें निकाल दिया जाता था या फिर धमकियां देकर अयोध्या छोड़ने को मजबूर किया जाता था। यह तथ्य न केवल विशेष जांच दल (एसआईटी) की जांच में साबित होता नजर आ रहा है बल्कि पूर्व लेखा प्रभारी महिपाल सिह व ट्रस्ट के इंजीनियर रहे प्रयागराज के दीनानाथ वर्मा के बयान भी इसे प्रमाणित कर रहे हैं।

महिपाल सिह के दावे तब सत्य होते दिखे, जब एसआईटी जांच में गणना कक्ष के सीसी कैमरों की फुटेज केवल डेढ़ माह की मिली। टीम ने डिलीट किए गए पुराने डेटा को रिकवर कराने और छेड़छाड़ की जांच के लिए इसे दिल्ली स्थित प्रयोगशाला में भेजा है। दानराशि में चोरी का प्रकरण पांच जून को सामने आने के बाद से अब तक कई तथ्य व पूर्व कर्मियों के बयान सामने आ चुके हैं। यहां तक कि राम मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्र भी मीडिया के सामने आकर इसकी स्वीकारोक्ति कर चुके हैं। उन्होंने भी दानराशि के संग्रहण में हुई वित्तीय पारदर्शिता की चूक को स्वीकारा है और पूरे सिस्टम को बदलने की आवश्यकता जताई है। इससे पहले ट्रस्ट के पूर्व लेखा प्रभारी महिपाल सिह ने सामने आकर यह दावा पहले ही कर दिया था कि मंदिर व्यवस्था से जुड़े रामशंकर यादव टिन्नू ने गणना कक्ष के सीसीटीवी फुटेज से छेड़छाड़ करके आठ महीने का डेटा डिलीट करा दिया था। उन्होंने विरोध किया तो उन्हें निकलवा दिया गया और धमकियां दी गईं। प्रकरण ने तूल पकड़ा तो 13 जून को राज्य सरकार ने एसआईटी गठित कर मामले की जांच शुरू करा दी। छह दिनों की जांच में यह प्रमाणित हो गया कि सीसीटीवी फुटेज से छेड़छाड़ की गई है। इसी बीच ट्रस्ट के पूर्व इंजीनियर दीनानाथ वर्मा भी सामने आ गए और उन्होंने निर्माण सामग्री के बिल पर ट्रस्टी डॉ. अनिल मिश्र के ४० प्रतिशत कमीशन लेने का आरोप लगाते हुए सनसनी फैला दी। वर्मा ने यह भी बताया कि वह जब विरोध करने लगे तो उन्हें गणना में लगा दिया गया। वहां भी जब विरोध किया तो अयोध्या छोड़ देने की धमकियां दी गईं। इससे स्पष्ट है कि गबन का यह खेल वर्षों से चल रहा था। इसे अपने रिश्तेदारों व परिचितों को भर्ती करा कर अनुकल्प मिश्रा गति देता रहा।

अयोध्या स्थित राम मंदिर चढ़ावा प्रकरण में हर दिन नए तथ्य सामने आ रहे हैं। इससे मंदिर प्रबंधन पर लग रहे आरोपों के साथ-साथ संदेह भी बढ़ता जा रहा है। मंदिर निर्माण के समय दान देने वाले कुछ श्रद्धालु अब खुद को ठगा महसूस कर रहे हैं और दान में दी गई वस्तुओं का सार्वजनिक हिसाब मांग रहे हैं।क्लब और संगठन

इंडियन बुलियन एंड ज्वैलर्स एसोसिएशन के नॉर्थ इंडिया हेड अनुराग रस्तोगी ने बताया कि देशभर के सराफा कारोबारियों ने १०-१० और २०-२० ग्राम चांदी भेजकर करीब ६० किलो चांदी एकत्र की थी। इस चांदी को गलाकर एक से सवा किलो वजन की ईंटें तैयार की गई थीं जिन पर दानदाताओं के नाम और गोत्र अंकित थे। इसके अलावा ऋषिकेश एसोसिएशन की ओर से एक किलो चांदी का कलश भी भेंट किया गया था। रस्तोगी के मुताबिक, २० जुलाई २०२० को चंपत राय की सहमति के बाद ये चांदी की ईंटें अयोध्या स्थित रामकचहरी में सौंपी गई थीं। उस समय चंपत राय,

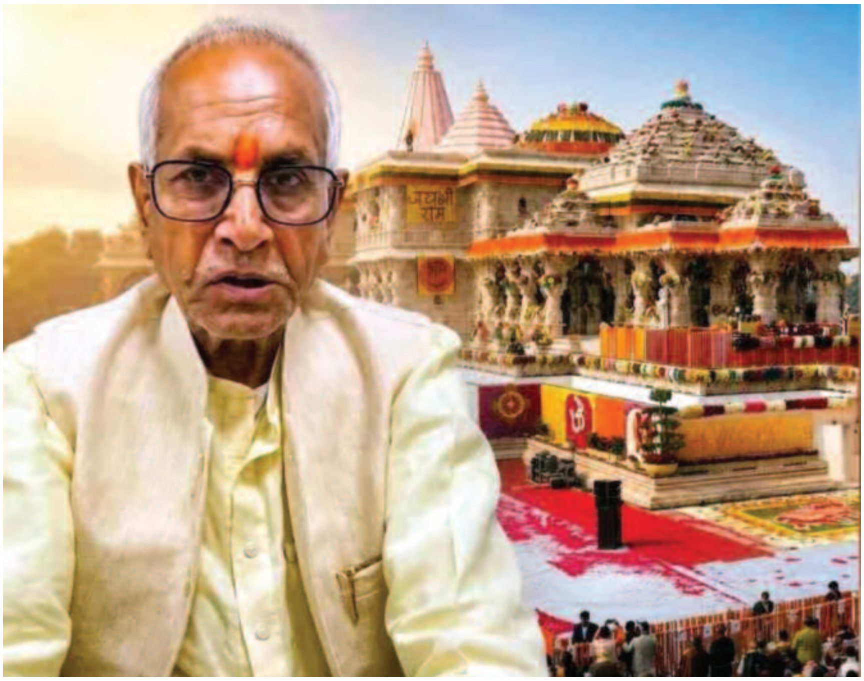

राम मंदिर आंदोलन के समय से ही पैसे का कभी कोई हिसाब नहीं दिया गया। रुपये दिए, लोगों ने जेवर दिए, शिलाएं दान कीं, जिनमें सोने-चांदी की शिलाएं थीं वो सब कहां गईं? ये सिर्फ हिंदुओं की आस्था का मामला नहीं है। राम भारतीयता का प्रतीक हैं।

डॉ. अनिल मिश्रा और कैशियर प्रकाश गुप्ता मौजूद थे। दान सामग्री स्वीकार करने के बाद शुद्धता प्रमाण पत्र और रसीद भी जारी की गई थी। उनका कहना है कि इन ईंटों को नींव पूजन में उपयोग करने का अनुरोध किया गया था लेकिन बाद में इनके बारे में कोई जानकारी नहीं मिली। रस्तोगी ने यह भी दावा किया कि उन्होंने व्यक्तिगत रूप से एक-एक किलो के दो चांदी के दीपक, दो चांदी के कटोरे, 200 ग्राम की पंचधातु सिल्ली और नाग-नागिन का जोड़ा दान किया था। उनके मुताबिक, एक दीपक में डॉ. अनिल मिश्रा और उनकी पत्नी ने अखंड ज्योति जलाई थी जो प्राण प्रतिष्ठा के दौरान तस्वीरों में भी दिखाई दी थी हालांकि, भव्य मंदिर बनने के बाद न तो वह दीपक दिखाई दे रहा है और न ही भगवान के भोग के लिए दान किए गए चांदी के कटोरे।

यह एक इकलौता मामला नहीं है। सूत्रों की मानें तो श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में चढ़ावे और दान राशि से जुड़े कथित अनियमितता प्रकरण की जांच कर रही विशेष जांच टीम (एसआईटी) को जांच के दौरान एक और महत्वपूर्ण पहलू मिला है। सूत्रों के मुताबिक, श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की हर तीसरे माह होने वाली बैठक में मंदिर की आय और नकद दान का विवरण प्रस्तुत किया जाता था लेकिन सोने-चांदी एवं अन्य बहुमूल्य दान सामग्री की मात्रा, मूल्यांकन और उपलब्ध स्टॉक का विस्तृत ब्योरा बैठक के एजेंडे का नियमित हिस्सा नहीं था।

ऐसे में एसआईटी यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि वर्षों के दौरान प्राप्त हुई बहुमूल्य दान सामग्री का समुचित लेखा-जोखा किस स्तर पर रखा गया और उसकी निगरानी की व्यवस्था क्या थी। जांच से जुड़े सूत्र बताते हैं कि एसआईटी को दान से संबंधित कई रसीदें और अभिलेख मिले हैं जिनमें श्रद्धालुओं की ओर से सोने-चांदी के आभूषण, सिक्के और अन्य कीमती वस्तुएं चढ़ाने का उल्लेख है हालांकि कई वस्तुओं के संग्रह, भंडारण और अंतिम स्थिति से संबंधित रिकॉर्ड अभी तक स्पष्ट रूप से उपलब्ध नहीं हो पाए हैं। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने भारत सरकार की संस्था 'मिंट' (टकसाल) को जांच और गलाने के लिए पहले चरण में 9.44 क्विंटल (944 किलो) चांदी दी थी। राम मंदिर के लिए भक्तों की ओर से दान किए गए सोने और चांदी की गुणवत्ता और मात्रा के मूल्यांकन के लिए ट्रस्ट ने यह फैसला लिया था। चंपत राय ने कुछ महीने पहले यह जानकारी सार्वजनिक करते हुए बताया था कि दान के रूप में कुल 13 क्विंटल चांदी और 20 किलो सोना प्राप्त हुआ है। पहले चरण में 9.44 क्विंटल (944 किलो) चांदी गलाने के लिए भेजी गई।

अवैध इमारत में चल रहा था कोचिंग सेंटर, 15 बच्चों की जलकर मौत

अजीत शर्मा

लखनऊ विकास प्राधिकरण के अधिकारियों की लापरवाही से खड़ी हुई एक अवैध इमारत 15 मासूमों के लिए काल बन गई। अब तक की जांच में लखनऊ विकास प्राधिकरण, बिजली विभाग, दमकल विभाग के अधिकारियों को दोषी पाया गया है। विकास प्राधिकरण के दो, दमकल और बिजली विभाग के एक-एक अधिकारी को सस्पेंड किया गया है। बेहद गंभीर और चौंकाने वाली बात यह है कि दस साल पहले 2016 में लखनऊ विकास प्राधिकरण ने इस इमारत को ध्वस्त करने का आदेश दिया था, लेकिन उसे वापस ले लिया गया। वह आदेश जारी क्यों किया गया था और फिर उसे वापस क्यों लिया गया, इस सवाल पर अधिकारियों के मुंह पर ताले लग गए हैं। आग हादसे में कई छात्र भी शामिल हैं। 15 घरों के चिराग बुझ गए। सरकार राहत का दावा कर रही है और विपक्ष इसे डैमेज कंट्रोल कह कर राजनीति कर रहा है। लेकिन, अवैध इमारत के निर्माण और उसके संचालन में हुए भ्रष्टाचार और भ्रष्ट अधिकारियों की कोई बात नहीं कर रहा। इतने बड़े हादसे के लिए इमारत के मालिक समेत चार लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया गया है, लेकिन मुकदमे में जिम्मेदार अधिकारियों को नामजद नहीं किया गया है, जिनकी लापरवाही और भ्रष्टाचार के चलते इतना बड़ा हादसा हुआ।

अलीगंज की इमारत में हुआ हादसा

22 जून को दोपहर करीब ढाई बजे लखनऊ के अलीगंज स्थित एक इमारत में आग लगने की सूचना मिली। यह दो मंजिला इमारत थी। स्थानीय लोगों के मुताबिक ग्राउंड फ्लोर पर पेट शॉप संचालित होती थी, जबकि पहले फ्लोर पर एक गेमिंग और एनीमेशन ट्रेनिंग सेंटर चलता था। यहां एनीमेशन, गेम कोडिंग जैसी चीजें सिखाई जाती थीं और कई लोग काम भी करते थे। एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि आग पहले निचली मंजिल पर लगी और फिर देखते-देखते पूरी इमारत इसकी चपेट में आ गई। घटना के चश्मदीद दावा करते हैं कि आग लगने के करीब 40 मिनट बाद फायर ब्रिगेड की टीम घटनास्थल पर पहुंची। प्रत्यक्षदर्शी कहते हैं कि हमारे पड़ोसी ने भी फोन किया था, क्योंकि उनके घर तक आग पहुंचने का खतरा था। अगर पांच मिनट भी और देरी होती तो आसपास की दो इमारतें भी जल सकती थीं। एक और प्रत्यक्षदर्शी ने भी दावा किया कि फायर ब्रिगेड़ की गाड़ियां आग लगने के करीब 40 मिनट बाद पहुंचीं जिसकी वजह से ज्यादा नुकसान हो गया। लखनऊ के चीफ फायर ऑफिसर अंकुश मित्तल

ने अपना पक्ष रखते हुए कहा कि आग से जुड़ी घटना की पहली सूचना हमें दो बजकर 27 मिनट पर मिली। कॉल मिलते ही अगले एक मिनट में हमारी पहली गाड़ी मौके के लिए रवाना हो गई। हमारा रिस्पांस टाइम एक मिनट के भीतर होता है। हमारी गाड़ी दो बजकर 45 मिनट पर अलीगंज के घटनास्थल पर पहुंच गई थी। दूसरी गाड़ी भी 2:28 पर निकली, तीसरी 2:31 और फिर इसके बाद लगातार हमारी गाड़ियां कुछ कुछ मिनट के अंतराल पर घटनास्थल के लिए रवाना होती रहीं। एक अन्य प्रत्यक्षदर्शी कहते हैं कि मैं अपने कमरे में था। बाहर से धुएं और जलने की गंध आ रही थी। जब बाहर निकला तो देखा कि इमारत में भीषण आग लगी हुई है। अंदर फंसे लोग खिड़कियों से मदद की गुहार लगा रहे थे। आसपास मौजूद लोगों ने शीशे तोड़कर उन्हें निकालने की कोशिश की, लेकिन आग इतनी तेज थी कि कोई मदद नहीं कर पाया। वहीं, एक अन्य प्रत्यक्षदर्शी बताते हैं कि इमारत के निचले हिस्से में पेट शॉप थी। उनके मुताबिक वहीं किसी हिस्से में आग लगी थी, जिसके बाद देखते ही देखते आग ऊपर तक फैल गई। आग लगने की वजह क्या थी, और क्या इमारत में पर्याप्त अग्नि सुरक्षा इंतजाम मौजूद थे, इसकी जांच अब प्रशासन और पुलिस कर रही है।

खिड़कियों लगाई बचाने की गुहार, तार पकड़ कर कूदे

एक मां बार-बार अपने 26 वर्षीय बेटे नीलेश का नाम लेकर रो पड़ती है। नीलेश कंप्यूटर ग्राफिक्स का काम करता था और परिवार की उम्मीदों का सहारा था। बगल में खड़े उसके पिता सदमे से बार-बार लड़खड़ा जाते हैं। परिवार को अभी भी यकीन नहीं हो रहा कि सुबह घर से निकला बेटा अब कभी वापस नहीं लौटेगा। मृतकों में सबसे कम उम्र के मोहम्मद शाजान थे, वो 19 साल के थे। उनके भाई इजहार अली बताते हैं कि आग लगने के वक़्त शाजान दूसरी मंजिल पर एनिमेशन की ट्रेनिंग ले रहे थे। उसने फोन करके बताया था कि वह अंदर फंस गया है। जान बचाने के लिए बाथरूम में चला गया था, लेकिन फिर बाहर नहीं निकल सका। 22 वर्षीय अब्दुल रहमान ने महज नौ महीने पहले आईटी टेक्नीशियन के तौर पर काम शुरू किया था। उनके दोस्त शादान शेख बताते हैं कि रहमान के पिता लकवे के मरीज

हैं और घर की पूरी ज़िम्मेदारी उन्हीं के कंधों पर थी। प्रभुज्योत सिंह फोन पर अपने बेटे से हुई आखिरी बात को याद करते हैं। वह बताते हैं कि दोपहर करीब दो बजे बेटे का फोन आया, उसने कहा पापा, आग लग गई है, मुझे बचा लो, मैं अंदर फंस गया हूं। हम तुरंत निकले, एम्बुलेंस को भी फोन किया, लेकिन जब तक पहुंचे, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। हादसे में जान गंवाने वाले अधिकांश लोगों की उम्र 19 से 30 साल के बीच है। इनमें तीन महिलाएं भी शामिल हैं। कुछ लोग उत्तर प्रदेश के बाहर पश्चिम बंगाल, हरियाणा और मध्य प्रदेश के रहने वाले थे, जो रोजगार या प्रशिक्षण के लिए लखनऊ आए थे। 15 मृतकों के अलावा घटना में नौ लोग घायल हुए हैं और उनका इलाज ट्रॉमा सेंटर में चल रहा है। इनमें से कुछ लोगों ने जान बचाने के लिए इमारत से निकलने का कोई रास्ता न देखकर बिजली और इंटरनेट के तारों के सहारे नीचे उतरने की कोशिश की, इसी कोशिश में कुछ को गंभीर चोटें आईं।

लापरवाही के आरोप

मृतकों के परिजनों और प्रत्यक्षदर्शियों का आरोप है कि इमारत में सुरक्षा इंतजाम बेहद अपर्याप्त थे। एक परिजन का दावा है कि गेमिंग जोन में आने-जाने के लिए केवल एक ही मुख्य गेट था, जो थंब इंप्रेशन सिस्टम से खुलता था। आग लगने के बाद मशीन ने काम करना बंद कर दिया और कई लोग बाहर निकलने का रास्ता नहीं तलाश पाए। सवाल ये भी उठाए जा रहे हैं कि क्या इमारत में पर्याप्त अग्नि सुरक्षा इंतजाम थे और क्या राहत एवं बचाव कार्य समय रहते शुरू हो गया था? मृतकों के परिजनों में से कुछ इस हादसे में लापरवाही के भी आरोप लगा रहे हैं। प्रभुज्योत सिंह कहते हैं कि अगर लापरवाही नहीं होती तो इतने लोगों की जान नहीं जाती। ऐसे आरोप सिर्फ परिजनों की तरफ से ही नहीं, बल्कि घटनास्थल पर मौजूद कई प्रत्यक्षदर्शियों की तरफ से भी लगाए जा रहे हैं।

एसआईटी की जांच और कार्रवाई

अलीगंज थाने में चार नामजद और एक अन्य के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया गया है। जो चार नामजद हैं, उनमें वीरेंद्र शुक्ला, तुषांक कृष्ण जायसवाल, रामकृष्ण उपाध्याय और सुरेश कुमार शामिल हैं। रामकृष्ण उपाध्याय पेट शॉप तो वीरेंद्र शुक्ला आग की चपेट में आई इमारत के मालिक हैं। इन पर भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), 2023 की धारा 105, 110, 125 और 3(5) के तहत एफआईआर दर्ज की गई है। आरोप है कि इमारत में फायर सेफ्टी की कोई व्यवस्था नहीं की गई थी। बिल्डिंग से बाहर निकलने का भी केवल एक ही रास्ता था। वहीं, असुरक्षित तरीके से एसी के बाहर दूसरे बिजली के उपकरण लगे हुए थे।

मुख्यमंत्री के आदेश के बाद मामले की जांच के लिए एक एसआईटी भी गठित की गई है। योगी आदित्यनाथ ने मृतक परिवारों के लिए मुआवजे की भी घोषणा की है। घटना में मारे गए बच्चों के परिजनों के लिए राज्य सरकार ने जहां पांच लाख रुपये और गंभीर रूप से घायलों को 50 हजार रुपये की सहायता राशि की घोषणा की है। वहीं, प्रधानमंत्री कार्यालय ने मृत बच्चों के परिजनों को दो लाख और घायलों को 50 हजार रुपये की सहायता राशि का एलान किया है।

गिराई जाएगी इमारत?

अलीगंज की जिस इमारत में आग लगने से 15 लोगों की जान चली गई, लखनऊ विकास प्राधिकरण ने अब उस इमारत को ध्वस्त करने से संबंधित नोटिस जारी किया है। अपर सचिव अध्यक्ष एलडीएस वीसी प्रथमेश कुमार ने कहा कि वह एक अवैध इमारत थी क्योंकि आवासीय प्लॉट पर व्यवसायिक इमारत खड़ी कर दी गई थी। हमने अभी नोटिस जारी किया है, जांच के भी आदेश दिए हैं। हम उन अधिकारियों के खिलाफ भी कार्रवाई करने जा रहे हैं जिन्होंने इस तथ्य की अनदेखी की। एक हफ़्ते बाद हम इमारत को ध्वस्त करने का आदेश जारी करेंगे। इस सवाल पर कि साल 2016 में भी विभाग की तरफ से ध्वस्तीकरण के आदेश जारी किए गए थे, लेकिन फिर इसे वापस ले लिया गया, इसके पीछे का कारण क्या था? इस सवाल के जवाब में उन्होंने कुछ नहीं कहा।

गाजियाबाद-नोएडा में गुटका सिंडिकेट का 'जीएसटी खेल'

एक बिल पर दौड़ रहीं कई गाड़ियां, रडार पर 'मेहरबान' अफसर!

दिल्ली से सटे गाजियाबाद और नोएडा के औद्योगिक इलाकों में इन दिनों गुटका कारोबार से जुड़े एक ऐसे कथित 'जीएसटी खेल' की सुगबुगाहट तेज है, जिसने सरकारी राजस्व को करोड़ों की चपत लगाने के साथ-साथ विभागीय निगरानी पर भी बड़े सवाल खड़े कर दिए हैं।

ललित कुमार

व्यापारिक हलकों और बेहद विश्वसनीय सूत्रों से छनकर आ रही खबरों के मुताबिक, यहां बिना टैक्स चुकाए माल खपाने का एक संगठित सिंडिकेट काम कर रहा है। दावा किया जा रहा है कि एक ही जीएसटी बिल (ई-वे बिल) को ढाल बनाकर चार से पांच गाड़ियों में माल का अवैध परिवहन किया जा रहा है। इस कथित सिंडिकेट की गूंज अब विभागीय गलियारों में भी सुनाई देने लगी है।

सूत्रों का बड़ा दावा: एक ही 'नंबर' पर पास कराई जा रही हैं गाड़ियां

सूत्रों के अनुसार, यह पूरा खेल बेहद शातिराना तरीके से खेला जा रहा है। नियमतः एक ई-वे बिल पर तय समय में केवल एक ही निश्चित वाहन से माल का परिवहन किया जा सकता है। लेकिन चर्चा है कि गाजियाबाद और नोएडा के कुछ रसूखदार गुटका कारोबारी एक ही वैध बिल का प्रिंटआउट लेकर कई वाहनों को गंतव्य तक पहुंचा रहे हैं। जैसे ही एक गाड़ी बिना चेकिंग के सीमा पार करती है, उसी बिल का उपयोग दूसरी गाड़ी के लिए कर लिया जाता है। सूत्रों का आरोप है कि इस कथित 'एक बिल, अनेक गाड़ियां' फॉर्मूले से सरकार को मिलने वाले भारी-भरकम टैक्स की सरेआम चोरी की जा रही है, जो एक गंभीर वित्तीय अपराध की श्रेणी में आता है।

सवालों के घेरे में विभागीय अमला: 'मोटी साठगांठ' की चर्चाएं तेज

इस कथित खेल की सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि सड़कों पर लगातार सक्रिय रहने वाली मोबाइल विंग और विभागीय सचल दल की नजरों से ये गाड़ियां आखिर कैसे बच निकलती हैं? सूत्रों और बाजार के जानकारों का दावा है कि इस पूरे कथित नेटवर्क को जीएसटी विभाग के ही कुछ 'मेहरबान' अधिकारियों और कर्मचारियों का कथित संरक्षण प्राप्त है। चर्चाएं तो यहां तक हैं कि इस 'अदृश्य व्यवस्था' को सुचारू रूप से चलाने के लिए हर महीने मोटी रकम और कथित रिश्वत का लेन-देन किया जाता है। हालांकि, इन गंभीर आरोपों की अभी तक कोई स्वतंत्र या आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी है, और न ही विभाग के किसी वरिष्ठ अधिकारी ने इस पर कोई आधिकारिक बयान जारी किया है।

निष्पक्ष जांच की मांग: विभागीय साख पर दांव

व्यापारिक संगठनों और कर विशेषज्ञों के बीच इस कथित मामले को लेकर भारी आक्रोश है। मांग उठ रही है कि गाजियाबाद और नोएडा जोन में पिछले कुछ महीनों के दौरान गुटका कंपनियों द्वारा जारी किए गए ई-वे बिलों, उनके द्वारा इस्तेमाल किए गए वाहनों के लॉग बुक और सड़कों पर लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज की उच्च स्तरीय एवं निष्पक्ष जांच कराई जाए। जानकारों का कहना है कि यदि इसकी कड़ाई से जांच हुई, तो विभाग के अंदर बैठे कई 'विभीषणों' के चेहरे बेनकाब हो सकते हैं।

7 दिनों का काउंटडाउन शुरू: 'वेलकम इंडिया' करेगा नामों का महाधमाका

इस पूरे कथित प्रकरण को लेकर 'वेलकम इंडिया' समाचार पत्र की विशेष Investigative Team धरातल पर लगातार पड़ताल कर रही है। हमारे पास कई संदिग्ध कंपनियों, परिवहन कताओं और कथित लेनदेन से जुड़े बेहद संवेदनशील इनपुट्स और दस्तावेजी साक्ष्य आ रहे हैं। अखबार पत्रकारिता की शुचिता और निष्पक्षता का पालन करते हुए वर्तमान में सभी पक्षों के आधिकारिक बयानों और दस्तावेजी पुष्टिकरण का इंतजार कर रहा है। अगले कुछ दिनों के भीतर, जैसे ही यह कानूनी और तकनीकी प्रक्रिया पूरी होगी, 'वेलकम इंडिया' अपने आगामी संस्करणों में उन सभी गुटका कंपनियों के नामों, शामिल ट्रांसपोर्टरों और उनके मददगारों के चेहरों का तथ्यों के साथ विस्तृत खुलासा जल्द ही प्रकाशित किया जाएगा। कर चोरी के इस कथित सिंडिकेट से जुड़े चेहरे अब ज्यादा दिन छिप नहीं पाएंगे।

विभागीय पक्ष के लिए जगह खुली है

यह समाचार पूरी तरह से विश्वसनीय सूत्रों से प्राप्त जानकारी, व्यापारिक हलकों में जारी चर्चाओं और प्राथमिक आरोपों पर आधारित है। चूंकि यह मामला सीधे तौर पर सरकारी राजस्व और साख से जुड़ा है, इसलिए 'वेलकम इंडिया' इस संबंध में संबंधित जीएसटी विभाग, आरोपी कंपनियों और संबंधित अधिकारियों के पक्ष का स्वागत करता है। उनका आधिकारिक पक्ष प्राप्त होने पर उसे भी अगले अंक में प्रमुखता और निष्पक्षता के साथ स्थान दिया जाएगा।

यूपी की
नई पहचान

गाजियाबाद के विकास को लगेंगे पंख

सीएम योगी ने 868 करोड़ की योजनाओं का किया लोकार्पण-शिलान्यास

मुख्यमंत्री ने पूर्व मंत्री राजपाल त्यागी की प्रतिमा का किया अनावरण

ललित कुमार

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गाजियाबाद के मुरादनगर स्थित कुशलपाल त्यागी मेमोरियल डिग्री कॉलेज में आयोजित विशाल जनसभा के दौरान जनपद को विकास की नई सौगात देते हुए 868 करोड़ रुपये से अधिक लागत की 90 विकास परियोजनाओं का शिलान्यास एवं लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री ने विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों को चेक, लैपटॉप, आवास की चाबियां एवं प्रशस्ति-पत्र वितरित किए। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने स्वर्गीय राजपाल सिंह त्यागी की प्रतिमा का अनावरण कर उन्हें श्रद्धांजलि भी अर्पित की और कहा कि जनप्रतिनिधियों का समर्पित नेतृत्व ही किसी क्षेत्र के विकास की असली ताकत होता है। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि कभी गाजियाबाद गुंडागर्दी, गंदगी और अव्यवस्था के लिए जाना जाता था, लेकिन आज यही जनपद सुशासन, आधुनिक आधारभूत संरचना, निवेश और रोजगार का नया केंद्र बन चुका है। उन्होंने कहा कि आज गाजियाबाद केवल एनसीआर का शहर नहीं, बल्कि दिल्ली का ग्रोथ इंजन बनकर देश की अर्थव्यवस्था को गति दे रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश सरकार ने बीते वर्षों में गाजियाबाद को आधुनिक आधारभूत संरचना से जोड़ने के लिए अभूतपूर्व कार्य किए हैं।

दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस-वे, गंगा एक्सप्रेस-वे, यमुना एक्सप्रेस-वे और ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेस-वे जैसी परियोजनाओं ने पूरे क्षेत्र की कनेक्टिविटी को नई दिशा दी है। उन्होंने कहा कि दिल्ली-मेरठ नमो भारत रेल परियोजना ने यात्रा के समय को तीन घंटे से घटाकर लगभग 40 मिनट कर दिया है, जिससे उद्योग, व्यापार और रोजगार को नई गति मिली है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हिंडन सिविल टर्मिनल, चौड़ी सड़कों, आधुनिक परिवहन व्यवस्था और तेजी से विकसित हो रहे शहरी ढांचे ने गाजियाबाद को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का सबसे तेजी से विकसित होने वाला जिला बना दिया है। उन्होंने कहा कि मजबूत कानून

व्यवस्था और पारदर्शी प्रशासन ही विकास की सबसे बड़ी आधारशिला है। जहां सुरक्षा होती है, वहीं निवेश आता है और जहां निवेश आता है, वहीं रोजगार के अवसर पैदा होते हैं।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने उत्तर प्रदेश बाल सेवा योजना के तहत विद्यार्थियों को लैपटॉप, मुख्यमंत्री पंचायत प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के अंतर्गत ग्राम पंचायतों को चेक, मुख्यमंत्री एवं प्रधानमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों को आवास की चाबियां तथा मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार और ओडीओपी योजना के लाभार्थियों को वित्तीय सहायता प्रदान की। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पूरी पारदर्शिता के साथ पहुंचाना है।

समारोह को कैबिनेट मंत्री सुनील कुमार शर्मा, राज्यमंत्री नरेंद्र कश्यप, सांसद अतुल गर्ग, सांसद राजकुमार सांगवान, विधायक डॉ. मंजू सिवाच और विधायक अजीतपाल त्यागी, महापौर सुनीता दयाल सहित अनेक जनप्रतिनिधियों ने संबोधित किया। सभी वक्ताओं ने स्वर्गीय राजपाल सिंह त्यागी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए गाजियाबाद में हुए विकास कार्यों और प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की सराहना की। कार्यक्रम में हजारों की संख्या में लोगों की उपस्थिति रही।

स्वर्गीय राजपाल सिंह त्यागी को दी श्रद्धांजलि

कार्यक्रम की शुरूआत मुख्यमंत्री ने पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं वरिष्ठ जनप्रतिनिधि स्वर्गीय राजपाल सिंह त्यागी की प्रतिमा का अनावरण कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए की। उन्होंने कहा कि छह बार विधायक चुना जाना किसी भी जनप्रतिनिधि की लोकप्रियता और जनता के विश्वास का सबसे बड़ा प्रमाण होता है। उन्होंने उनके सार्वजनिक जीवन, जनसेवा और क्षेत्रीय विकास में दिए गए योगदान को याद करते हुए कहा कि ऐसे नेताओं के कार्य समाज के लिए हमेशा प्रेरणास्रोत बने रहेंगे। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम स्थल पर लगाए गए विभिन्न विभागों के स्टॉलों का भी अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने अन्नप्राशन संस्कार एवं गोदभराई की रस्म निभाकर मातृ एवं शिशु कल्याण योजनाओं के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का संदेश दिया।

मंच पर उनका स्वागत भगवान श्रीराम, भगवान शिव की प्रतिमा और गदा भेंट कर किया

गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से क्षेत्रीय अध्यक्ष पश्चिम उत्तर प्रदेश भाजपा नवाब सिंह नागर, कैबिनेट मंत्री एवं साहिबाबाद विधायक सुनील कुमार शर्मा, राज्यमंत्री नरेन्द्र कश्यप, गाजियाबाद सांसद अतुल गर्ग, बागपत सांसद राजकुमार सांगवान, महापौर सुनीता दयाल, जिला पंचायत अध्यक्षा ममता त्यागी, मुरादनगर विधायक अजीत पाल त्यागी, मोदीनगर विधायक डॉ0 मंजू सिवाच, सदर विधायक संजीव शर्मा, लोनी विधायक नन्दकिशोर गुर्जर, भाजपा महानगर अध्यक्ष मयंक गोयल, भाजपा जिलाध्यक्ष चैनपाल सिंह, विधान परिषद सदस्य दिनेश गोयल, सहित अन्य गणमान्यजन एवं अधिकारीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ पूनम शर्मा द्वारा किया गया।

पहले अपराध और भ्रष्टाचार, अब विकास और विश्वास-2017 के बाद बदली उत्तर प्रदेश की तस्वीर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने संबोधन में वर्ष 2017 से पहले की प्रदेश की स्थिति का उल्लेख करते हुए कहा कि उस दौर में विकास कार्यों को अपेक्षित प्राथमिकता नहीं दी जाती थी। उन्होंने दावा किया कि उत्तर प्रदेश बेरोजगारी, दंगों, अपराध, भ्रष्टाचार और प्रशासनिक अव्यवस्था जैसी गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा था, जिसके कारण विकास की रफ्तार प्रभावित हुई। मुख्यमंत्री ने कहा कि जनता तक सरकारी योजनाओं का पूरा लाभ नहीं पहुंच पाता था और व्यवस्था में

पारदर्शिता का अभाव था। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी के उस चर्चित बयान का उल्लेख करते हुए कहा कि केंद्र से भेजे गए 100 रुपये में से केवल 15 रुपये ही वास्तविक लाभार्थी तक पहुंचते थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार ने तकनीक आधारित, पारदर्शी और जवाबदेह व्यवस्था विकसित कर इस स्थिति को पूरी तरह बदलने का प्रयास किया है। आज सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में पहुंच रहा है और भ्रष्टाचार पर प्रभावी अंकुश लगाया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले जनप्रतिनिधियों की प्राथमिकताओं में जनता की समस्याओं का समाधान शामिल नहीं था, जबकि वर्तमान समय में सरकार के मंत्री, विधायक और जनप्रतिनिधि लगातार अपने-अपने क्षेत्रों में विकास कार्यों की निगरानी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार का लक्ष्य केवल योजनाएं बनाना नहीं, बल्कि उन्हें समयबद्ध ढंग से धरातल पर उतारना है। उन्होंने कहा कि आज निराश्रित पेंशन, आयुष्मान भारत योजना, प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री आवास योजना, राशन कार्ड, किसान सम्मान निधि और अन्य जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ बिना किसी भेदभाव के पात्र लोगों तक पारदर्शी तरीके से पहुंच रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मजबूत कानून व्यवस्था, बेहतर प्रशासन और निवेश अनुकूल वातावरण के कारण गाजियाबाद देश के प्रमुख निवेश केंद्रों में तेजी से उभर रहा है। उन्होंने कहा कि स्वच्छता, सुरक्षा, औद्योगिक विकास और आधुनिक आधारभूत संरचना के क्षेत्र में गाजियाबाद ने नई पहचान बनाई है तथा आज यह विकास, निवेश और सुशासन के नए मानक स्थापित कर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बना रहा है।

धर्म नहीं, विकास के साथ आस्था भी हमारी प्राथमिकताः मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने संबोधन में कांग्रेस और समाजवादी पार्टी पर भी निशाना साधते हुए कहा कि आज विपक्षी दल आस्था और धार्मिक परंपराओं की बात तो करते हैं, लेकिन उनके शासनकाल के निर्णय और कार्यशैली इससे बिल्कुल अलग रही है। उन्होंने दावा किया कि पूर्ववर्ती सरकारों के समय कांवड़ यात्रा सहित अनेक धार्मिक आयोजनों को लेकर अनावश्यक आपत्तियां और प्रतिबंध लगाए जाते थे, जिससे श्रद्धालुओं की भावनाएं आहत होती थीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी, दुर्गा पूजा और कांवड़ यात्रा जैसे धार्मिक आयोजनों के प्रति पहले नकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाता था, जबकि वर्तमान सरकार ने सभी धार्मिक आयोजनों को सम्मान, सुरक्षा और सुव्यवस्थित व्यवस्थाओं के साथ सम्पन्न कराने को अपनी प्राथमिकता बनाया है। उन्होंने कहा कि कांवड़ यात्रा को सुरक्षित, शांतिपूर्ण और सुगम बनाने के

लिए व्यापक स्तर पर व्यवस्थाएं की गई हैं तथा श्रद्धालुओं की सुविधा और सम्मान सुनिश्चित किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार केवल धार्मिक आस्था की बात नहीं करती, बल्कि उसे धरातल पर साकार भी करती है। प्रदेश में मंदिरों, तीर्थ स्थलों और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण एवं विकास के लिए लगातार कार्य किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि काशी विश्वनाथ धाम से लेकर अयोध्या, मथुरा और गाजियाबाद स्थित दूधेश्वरनाथ मंदिर जैसे प्रमुख धार्मिक स्थलों के विकास कार्य इसका प्रमाण हैं। उन्होंने कहा कि आस्था केवल भाषणों या राजनीतिक बयानों से सिद्ध नहीं होती, बल्कि धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, श्रद्धालुओं के सम्मान और उनके लिए बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के ठोस कार्यों से परिलक्षित होती है। वर्तमान सरकार इसी सोच के साथ प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखते हुए विकास और आस्था को समान महत्व देकर आगे बढ़ रही है।

समंदर बन गई हैं महानगरों की सड़कें डूबती गाड़ियों को कोई किनारा नहीं

अनिल वशिष्ठ

हम 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की बात कर रहे हैं। हम विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का सपना देख रहे हैं। हम आधुनिक बुनियादी ढांचे, स्मार्ट शहरों और वैश्विक स्तर की सुविधाओं का दावा कर रहे हैं। लेकिन क्या हर मॉनसून हमारे इन सभी दावों की वास्तविकता सामने नहीं रख देता? क्या यह सवाल पूछने का समय नहीं आ गया है कि यदि हमारे महानगर और राज्य की राजधानियां कुछ घंटों की बारिश भी नहीं झेल पा रही हैं, तो विकसित भारत की बुनियाद आखिर कितनी मजबूत है? क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक और गुरुग्राम जैसे देश के सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक केंद्र हर वर्ष मानसून आते ही जलभराव, जाम और अव्यवस्था की पहचान बन जाते हैं? क्या यह केवल मौसम की मार है, या फिर हमारी नगर योजना, निर्माण व्यवस्था और प्रशासनिक तैयारी की सबसे बड़ी असफलता है? यदि हर वर्ष यही स्थिति बननी है, तो फिर हर वर्ष होने वाली तैयारियों और बैठकों का परिणाम आखिर कहां दिखाई देता है?

क्या स्मार्ट सिटी का अर्थ केवल चौड़ी सड़कें, चमकदार भवन और आकर्षक परियोजनाएं हैं? क्या स्मार्ट शहर वह नहीं होना चाहिए जो सामान्य से अधिक बारिश को भी सहजता से संभाल सके? यदि अरबों रुपये जल निकासी, सड़क निर्माण और शहरी विकास पर खर्च हो रहे हैं, तो पहली तेज बारिश में ही सड़कें नदी और चौराहे तालाब क्यों बन जाते हैं? क्या हर मानसून के बाद वही तस्वीरें, वही बयान और वही आश्वासन सुनना हमारी नियति बन चुकी है? क्या कभी किसी अधिकारी, किसी एजेंसी या किसी निर्माण करने वाली संस्था की जवाबदेही तय हुई?

क्या जनता को यह जानने का अधिकार नहीं कि हर वर्ष खर्च होने वाला धन आखिर किस काम में लगाया जाता है? क्या समस्या केवल अधिक बारिश की है, या फिर प्राकृतिक जलमार्गों पर अतिक्रमण, बिना योजना के विस्तार, कमजोर निर्माण और रखरखाव की अनदेखी इसकी असली वजह है? क्या नदियों, तालाबों और पुराने

हर वर्ष बरसात में डूबते शहर

देश भर में हर साल मानसून का बेसब्री से इंतजार किया जाता है, क्योंकि कृषि, पेयजल, ऊर्जा और गर्मी से राहत के दृष्टिकोण से इसे जीवन का आधार माना जाता है। मगर जब मानसून भारी बारिश के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है, तो जीवन की रफ्तार थम जाती है। मैदानों में सड़कों पर जलभराव से यातायात ठप हो जाता है और बाढ़ की वजह से कई लोगों को अपने घर छोड़ने पड़ते हैं। वहीं, पहाड़ों पर भूस्खलन और बादल फटने की घटनाएं कई जिंदगियों को लील लेती हैं। शासन-प्रशासन की ओर से इसे प्राकृतिक आपदा का नाम दिया जाता है, लेकिन असल में इसके लिए काफी हद तक मानव-निर्मित परिस्थितियां भी जिम्मेदार होती हैं। इस बार भी मानसून को आए अभी ज्यादा दिन नहीं हुए हैं और जम्मू-कश्मीर से लेकर केरल तक बाढ़, भूस्खलन तथा जलभराव का सिलसिला शुरू हो गया है। केरल के वायनाड में बीते मंगलवार को हुए भूस्खलन में तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि पांच अभी तक लापता हैं। मुंबई पहले से ही भारी बरसात से बेहाल है और बुधवार को बारिश से दिल्ली का भी यही हाल हो गया। देश में मानसून के दौरान होने वाले जान-माल के नुकसान की एक बड़ी वजह खराब बुनियादी ढांचे, अनियोजित शहरीकरण, जलनिकासी की माकूल व्यवस्था न होना, अवैज्ञानिक एवं अवैध तरीके से खनन और वनों की अंधाधुंध कटाई है। भारी बारिश, बाढ़ और भूस्खलन के कारण हर साल सैकड़ों जानें जाती हैं और करोड़ों रुपए की संपत्ति नष्ट हो जाती है। मैदानी इलाकों में महानगरों से लेकर छोटे शहरों में ढांचागत विस्तार तो हो रहा है, लेकिन मुख्य रूप से जल निकासी की व्यवस्था पर ध्यान नहीं दिया जाता है। हर साल बरसात से पहले नालियों की साफ-सफाई के लिए विशेष अभियान शुरू किए जाते हैं, लेकिन इनका क्रियान्वयन ज्यादातर सरकारी कागजों तक ही सीमित रहता है। इसी का नतीजा है कि दिल्ली से लेकर महाराष्ट्र और गुजरात तक इन दिनों लोगों को जलभराव एवं बाढ़ की स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। अक्सर यह देखा जाता है कि इस तरह की आपदा के बाद प्रशासन की ओर से जोर-शोर से राहत कार्य शुरू किए जाते हैं, लेकिन यही सतर्कता और गंभीरता अगर बरसात से पहले दिखाई जाए, तो नुकसान को निश्चित तौर पर कम किया जा सकता है। भू-विशेषज्ञों के मुताबिक, हिमालयी क्षेत्रों और पश्चिमी घाटों में अंधाधुंध खनन, वनों की कटाई तथा अनियंत्रित ढांचागत निर्माण के कारण मिट्टी की पकड़ कमजोर हो रही है। इसी कारण भारी बारिश और बादल फटने से पहाड़ दरक रहे हैं, जिससे बड़े पैमाने पर जान-माल का नुकसान हो रहा है। केरल के वायनाड में भूस्खलन की घटना इसका ताजा उदाहरण है। खबरों के मुताबिक, इस जगह एक सुरंग निमार्णाधीन है और पहाड़ी से निकाली गई मिट्टी भी पास में ही डाली गई थी। भारी बारिश से पहाड़ी का एक हिस्सा टूटकर मलबे के साथ नीचे आ गया। इसी कारण अब परियोजना कंपनी के कार्य पर भी सवाल उठ रहे हैं। इसमें दोराय नहीं कि जलवायु परिवर्तन के कारण हाल के वर्षों में मौसम का मिजाज काफी बदल गया है। कभी सूखा, तो कभी बहुत कम समय में अत्यधिक बारिश से हालात भयावह हो जाते हैं। मगर यह भी सच है कि अगर समय रहते व्यवस्थित तरीके से तैयारी कर ली जाए, तो समस्याओं और नुकसान से काफी हद तक बचा जा सकता है।

जल निकासी मार्गों को पाटकर खड़ी की गई इमारतों की कीमत अब पूरा समाज नहीं चुका रहा है? यदि शहरों की सांस लेने वाली प्राकृतिक व्यवस्था को ही समाप्त कर दिया जाएगा, तो पानी आखिर जाएगा कहां? क्या यह सामान्य बात मानी जा सकती है कि बारिश होते ही एंबुलेंस फंस जाए, बच्चे स्कूल न पहुंच सकें, कर्मचारी दफ्तर न जा सकें, बाजार ठप हो जाएं, रेल और हवाई यात्रा थम जाएं और सामान्य जीवन रुक जाए? क्या हर वर्ष होने वाले आर्थिक नुकसान, समय की बबार्दी और जनजीवन की परेशानी का कोई हिसाब भी रखा जाता है? यदि रखा जाता है, तो फिर समाधान आज तक क्यों नहीं मिला? क्या विकसित भारत केवल बुलेट ट्रेन, एक्सप्रेस वे और गगनचुंबी इमारतों से बनेगा? या फिर उसकी पहचान ऐसी मजबूत बुनियादी व्यवस्था से होगी जो हर मौसम में नागरिकों को सुरक्षित और सुगम जीवन दे सके? क्या विश्व स्तर की अर्थव्यवस्था बनने का सपना उन शहरों के सहारे पूरा होगा जो हर मानसून में ठहर जाते हैं? क्या केवल सरकार और प्रशासन पर सवाल उठाना पर्याप्त है? क्या नागरिकों की भी जिम्मेदारी नहीं कि वे नालों में कचरा न डालें, जलमार्गों पर अतिक्रमण का विरोध करें और सार्वजनिक व्यवस्था के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएं? लेकिन क्या यह भी उतना ही सच नहीं कि व्यवस्था की सबसे बड़ी जिम्मेदारी उसी पर होती है जिसके हाथ में योजना, संसाधन और निर्णय की शक्ति होती है? देखा जाये तो सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या हम 2047 के विकसित भारत की इमारत उस बुनियाद पर खड़ी कर रहे हैं जो हर मानसून में हिल जाती है? क्या अब समय नहीं आ गया है कि विकास के दावों से पहले शहरों की जल निकासी व्यवस्था, निर्माण की गुणवत्ता, नगर नियोजन और प्रशासनिक जवाबदेही को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाया जाए? क्या जनता को हर वर्ष एक ही परेशानी झेलने के लिए मजबूर रखना किसी भी विकसित राष्ट्र की पहचान हो सकती है? और यदि इन सवालों का उत्तर आज भी हमारे पास नहीं है, तो फिर क्या हमें पहले विकसित भारत का सपना देखना चाहिए, या पहले उसकी मजबूत बुनियाद तैयार करनी चाहिए?

भूकंप से लोगों को कैसे बचाएंगी सरकारें

अग्नि दुर्घटनाओं की तरह तो नहीं, पर मौटे तौर पर सरकारों को इस बात का अंदाजा है कि देश के किन इलाकों में भूकंप आ सकता है। जिस देश में साफ नजर आने वाले खतरे की नेताओं और सरकारों को परवाह नहीं, उन्हें छिपे हुए अचानक आने वाले खतरों से देश के लोगों को बचाने की क्या परवाह होगी...

अरुण शर्मा

वेनेजुएला में एक मिनट के अंदर दो बड़े विनाशकारी भूकंप में करीब दो हजार लोगों की मौत हो गई। इस प्राकृतिक आपदा में करीब 10 हजार लोग घायल हो गए। बगैर किसी चेतावनी के आने वाली भूकंप जैसी आपदाएं सरकारों को चेताती हैं कि पहले से बचाव के उपाय किए जाएं, ताकि कम से कम जानमाल का नुकसान हो सकें। भूकंप का खतरा भारत में भी है। देश के कई हिस्सों में कई बार शक्तिशाली भूकंपों ने भारी तबाही मचाई है। सवाल यह है कि पूर्व में आए इन भूकंपों से देश की सरकारों ने कोई सबक सीखा है। क्या देश में ऐसे इंतजाम किए गए हैं कि भूकंप आने पर कम से कम जानमाल का नुकसान हो। दरअसल भारत के राजनीतिक दलों और सरकारों से किसी भी प्राकृतिक आपदा से पहले और बाद में बचाव की ज्यादा उम्मीदें नहीं की जा सकती हैं। कारण साफ है, केंद्र और राज्यों की सरकारों को सामने स्पष्ट नजर आते हुए खतरों से लोगों को बचाने का कोई इंतजाम नहीं हो, वे भूकंप जैसे छिपे हुए खतरों से कैसे बचाएंगे। दिल्ली के बाद लखनऊ में आग से 15 लोगों की मौत हो गई। ऐसी लाखों इमारतें अकेले उत्तर प्रदेश में हैं, जिनमें आग से बचाने के कोई उपाय नहीं किए गए हैं। जब दिल्ली में आग लगी तभी राज्यों की सरकारों को सतर्क हो जाना चाहिए था। लेकिन सरकारों ने लोगों की जान की परवाह नहीं की।

अगले ही दिन बिहार के मुजफ्फरपुर में आग ने पांच-छह मरीजों को लील लिया। इसके बाद उत्तर प्रदेश के नोएडा और फिर मध्य प्रदेश के इंदौर में आग ने फ्लैट और शोरूम खाक कर दिए। तीन दिन में आग की चार भयानक घटनाओं ने लोगों को डरा दिया है और करीब 26 लोगों की जलकर या काले धुएं की चपेट में आकर मौत हो गई है। राष्ट्रीय और राज्य स्तर के अनुमानों के अनुसार, वाणिज्यिक और आवासीय क्षेत्रों के 60 प्रतिशत से अधिक छोटे और मध्यम भवन बिना वैध फायर एनओसी के चल रहे हैं। देश भर में दमकल केंद्रों में 97.5 प्रतिशत, दमकल कर्मियों में 96.2 प्रतिशत और अग्निशमन उपकरणों में लगभग 80 प्रतिशत तक की कमी है। देश के लगभग हर बड़े शहर में सुरक्षा नियमों को दरकिनार

किया जा रहा है। यह खतरा ऐसा है, जो साफ दिखाई देता है। इससे बचाव के शत-प्रतिशत इंतजाम भी किए जा सकते हैं। इसके बावजूद राज्यों और केंद्र ने पूर्व में हुए ऐसे हादसों से सबक नहीं सीखा। ऐसे में यह सवाल उठना लाजिमी है, सामने स्पष्ट तौर पर दिखाई दे रहे खतरे से निपटने में सरकारें नाकाम हैं, तो भूंकप जैसी अचानक आने वाली आपदा और उसके भयावह रूप से सरकारें कैसे निपटेंगी। जबकि भूगर्भ वैज्ञानिक साफ चेता चुके हैं कि देश के कितने हिस्सों में कभी भी भीषण भूकंप आ सकता है। पिछले दो दशकों में देश में 10 बड़े भूकंप आए हैं, जिनमें 20000 से अधिक लोगों की जान गई है। नेशनल डिजास्टर मैनेजमेंट ऑथोरिटी के मुताबिक भारत में करीब 20 करोड़ इमारतें भूकंपीय क्षेत्र 4 और 5 में आती हैं। इनमें से कई इमारतें 30-40 साल पहले बनी थीं और इनमें से कई इमारतें नेशनल बिल्डिंग कोड्स का पालन नहीं करती हैं। भूकंप संभावित क्षेत्रों में जोन-1 में भूकंप आने की आशंका सबसे कम रहती है, वहीं जोन-5 में ज्यादा प्रबल रहती है। दिल्ली-एनसीआर का इलाका सीस्मिक जोन-4 में आता है और यही वजह है कि उत्तर भारत के इस क्षेत्र में सीस्मिक गतिविधियां तेज रहती हैं। भूगर्भ विशेषज्ञों ने भारत के करीब 59 फीसदी भू-भाग को भूकंप संभावित क्षेत्र के रूप में वर्गीकृत किया है।

जानकार सीस्मिक जोन-4 में आने वाले भारत के सभी बड़े शहरों की तुलना में दिल्ली में भूकंप की आशंका ज्यादा बताते हैं। गौरतलब है कि मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और बेंगलुरु जैसे शहर सीस्मिक जोन-3 की श्रेणी में आते हैं। जबकि भूगर्भशास्त्री कहते हैं कि दिल्ली की दुविधा यह भी है कि वह हिमालय के निकट है, जो भारत और यूरेशिया जैसी टेक्टॉनिक प्लेटों के मिलने से बना था और इसे धरती के भीतर की प्लेटों में होने वाली हलचल का खामियाजा भुगतना पड़ सकता है। नेशनल सेंटर फॉर सिसमोलॉजी के मुताबिक भारत के 29 शहरों पर भूकंप का गंभीर खतरा है। इन शहरों में दिल्ली समेत नौ राज्यों की राजधानियां भी हैं। ये ज्यादातर शहर हिमालय जोन से लगे हैं। हिमालय से लगे शहर दुनिया के उन शहरों में शुमार हैं, जहां भूकंप का सबसे ज्यादा खतरा रहता है। दिल्ली, पटना, श्रीनगर, कोहिमा, पुडुच्चेरी, गुवाहाटी, गंगटोक, शिमला, देहरादून, इम्फाल और चंडीगढ़ भूकंपीय क्षेत्र के जोन चार और पांच में हैं। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस (आईआईएससी) के मुताबिक ये वो शहर हैं जहां आबादी का घनत्व बहुत सघन है और ये गंगा के मैदानी भाग हैं। इसके साथ ही वैज्ञानिकों ने यह भी कहा है कि सिस्मिक जोन-4 में आने वाली राजधानी दिल्ली भूकंप के बड़े झटके से खासा प्रभावित हो सकती है। अगर यहां 7 की तीव्रता वाला भूकंप आया तो दिल्ली की कई सारी इमारतें और घर रेत की तरह भरभराकर गिर जाएंगे। ऐसा इसलिए है, क्योंकि दिल्ली की इमारतों में इस्तेमाल होने वाली निर्माण सामग्री ऐसी है, जो भूकंप के झटकों का सामना करने में पूरी तरह से सक्षम नहीं है। दिल्ली में मकान बनाने की निर्माण सामग्री ही आफत की सबसे बड़ी वजह है। दिल्ली में 1760 से अधिक अनधिकृत कॉलोनियां हैं। इन अनधिकृत कॉलोनियों में गैर-इंजीनियरिंग इमारतें बनी हैं, जिनमें भूकंप प्रतिरोध क्षमता शायद ही हो। भूकंप के प्रति सर्वाधिक संवेदनशील और खतरनाक माने जाने वाले जोन पांच में भारत का पूरा पूर्वोत्तर है। इनमें जम्मू-कश्मीर का कुछ हिस्सा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, गुजरात के साथ उत्तरी बिहार के कुछ हिस्से और अंडमान निकोबार हैं।

वहीं जम्मू-कश्मीर का कुछ हिस्सा, दिल्ली, सिक्किम, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, गुजरात के कुछ हिस्से और महाराष्ट्र का कुछ भाग जोन चार में हैं। गुजरात का भुज 2001 में भयावह तरीके से भूकंप की चपेट में आया था। इस भूकंप में 20 हजार लोग मारे गए थे। सुप्रीम कोर्ट ने साल 2025 में आदेश दिया था कि ऐसी सभी इमारतें, जिनमें 100 या उससे अधिक लोग रहते हैं, उनके ऊपर भूकंप-रोधी होने वाली किसी एक श्रेणी का साफ उल्लेख होना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट का यह आदेश अन्य जनहित के आदेशों की तरह सरकारी फाइलों में दफन हो गया। अग्नि दुर्घटनाओं की तरह तो नहीं, पर मोटे तौर पर सरकारों को इस बात का अंदाजा है कि देश के किन इलाकों में भूकंप आ सकता है। जिस देश में साफ नजर आने वाले खतरे की नेताओं और सरकारों को परवाह नहीं, उन्हें छिपे हुए अचानक आने वाले खतरों से देश के लोगों को बचाने की क्या परवाह होगी। देश में ऐसा एक भी राज्य नहीं है, जहां की किसी भी तरह की इमारतें, अग्नि दुर्घटनाओं से सुरक्षित हों, या उनमें अग्नि दुर्घटना होने पर बचाव के पूरे कानूनी प्रावधान हों, ऐसे में छिपे हुए अचानक आए खतरनाक भूकंप से बचाने के लिए इंतजाम भगवान भरोसे है। होना तो यह चाहिए था कि इतने अग्निकांडों के बाद देश में सरकारों की नींद खुल जानी चाहिए थी। देश के जितने भी व्यावसायिक या निजी इमारतें हैं, उनमें आग से बचाव के इंतजामों की तत्काल जांच की जानी चाहिए थी। आग लगने पर लोगों की जान खतरे में डालने वाले ऐसे भवनों को तत्काल सील किया जाना चाहिए था। इससे भी महत्वपूर्ण जिन विभागों की अग्निशमन के उपायों की जांच करने की जिम्मेदारी है, उनके खिलाफ प्रभावी कार्रवाई की जानी चाहिए थी। एक के बाद एक अग्नि दुर्घटनाएं होती रहीं, किन्तु सरकारों की नींद नहीं खुली।

उच्च शिक्षा पर हावी होती महंगाई

हरेन्द्र शर्मा

समाज के वर्किंग क्लास और निम्न मध्यवर्ग में यह अहसास मजबूत हुआ है कि उनके बच्चे जीवन की दौड़ में तभी टिक सकते हैं जब वे शिक्षा प्राप्त करें। इसलिए यह समूह अब अपने बच्चों की शिक्षा के लिए हर तरह का संघर्ष कर रहा है। वह पेट काटकर, जमीन गिरवी रखकर, कर्ज लेकर भी बच्चों को पढ़ा रहा है। इसके कारण पिछले डेढ़-दो दशकों में प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा में दाखिला बढ़ा है, लैंगिक अंतर कम हुआ है। यह एक सकारात्मक संकेत है। लेकिन अगर फीस इसी तरह बढ़ती रही तो गरीब तबके को मन मारकर इस दौड़ से बाहर निकल जाना होगा। निश्चय ही उच्च शिक्षा से एक बड़े वर्ग का वंचित होना ठीक नहीं है....

हाल ही में संसदीय स्थायी समिति ने कहा है कि उच्च शिक्षा के लिए मौजूदा बजट आवंटन पर्याप्त नहीं है और शिक्षा पर खर्च बढ़ाकर जीडीपी का 6 प्रतिशत किया जाना चाहिए। समिति के अनुसार 2021-22 में भारत का शिक्षा व्यय केवल 4.12 प्रतिशत था, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के लक्ष्य से कम है। रिपोर्ट में महंगाई, नामांकन वृद्धि और शिक्षा की गुणवत्ता को देखते हुए अधिक निवेश की जरूरत बताई गई है। समिति ने चिंता जताई कि 2021-22 में भारत का कुल शिक्षा व्यय जीडीपी का केवल 4.12 प्रतिशत था। यह आंकड़ा एनईपी के लक्ष्य से काफी कम है। समिति का मानना है कि यदि भारत को वैश्विक स्तर की शिक्षा व्यवस्था विकसित करनी है तो शिक्षा पर निवेश जरूर बढ़ाना होगा। समिति ने 2018 से 2023 के बीच पुरुष और महिला छात्रों के सकल नामांकन अनुपात (ग्रॉस एनरोलमेंट रेशियो) का भी अध्ययन किया। रिपोर्ट में कहा गया कि इस अवधि में नामांकन अनुपात में कोई उल्लेखनीय वृद्धि नहीं देखी गई। समिति का मानना है कि मानव संसाधनों के बेहतर विकास और रोजगारोन्मुख शिक्षा के लिए उच्च शिक्षा में अधिक छात्रों को जोडऩा जरूरी है। इसी कारण उसने 2035 तक एनईपी-2020 के लक्ष्यों के अनुरूप शिक्षा क्षेत्र में निवेश बढ़ाने की सिफारिश की है। आज उच्च शिक्षा में बढ़ती महंगाई एक बड़ी चुनौती है, जो सामान्य मुद्रास्फीति की तुलना में कहीं अधिक तेजी से बढ़ रही है। शिक्षा का खर्च 10 से 12 प्रतिशत सालाना की दर से बढ़ रहा है जिससे उच्च शिक्षा की लागत हर 6-7 साल में दोगुनी हो जाती है। बढ़ते खर्च के कारण और इससे निपटने के तरीकों पर मंथन जरूरी है। उच्च शिक्षा इतनी महंगी क्यों हो रही है? मांग और आपूर्ति में असंतुलन : उच्च शिक्षा की भारी मांग (लगभग 20 फीसदी वार्षिक वृद्धि) और अच्छे गुणवत्ता वाले संस्थानों की सीमित आपूर्ति के कारण निजी संस्थान इसका फायदा उठाते हैं। आधुनिक तकनीकों (लैब, सॉफ्टवेयर), अनुसंधान और बुनियादी ढांचे को अपग्रेड करने में

आने वाली भारी लागत, शिक्षकों का वेतन और अनुपालन : उत्कृष्ट प्राध्यापकों का वेतन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति जैसे नियामक मानकों को पूरा करने का खर्च सीधे तौर पर ट्यूशन फीस में जुड़ जाता है। महंगी शिक्षा के कारण अधिकांश छात्रों को भारी मात्रा में एजुकेशन लोन लेना पड़ता है, जिसकी अदायगी के लिए वे करियर की शुरूआत में ही कर्ज के जाल में फंस जाते हैं। मध्यम और गरीब परिवारों पर दबाव : मध्यम और निम्न आय वर्ग के परिवारों को बच्चों को पढ़ाने के लिए अपनी संपत्ति गिरवी रखनी पड़ती है या अपनी बचत खत्म करनी पड़ती है। उच्च फीस और जीवनयापन के भारी खर्चों (हॉस्टल, यात्रा, कोचिंग) के कारण कई मेधावी छात्र बीच में ही पढ़ाई छोडऩे को मजबूर हो जाते हैं। पिछले कुछ वर्षों से देश में उच्च शिक्षा लगातार महंगी होती जा रही है। गरीब, मेहनतकश वर्ग ही नहीं, मध्यवर्ग के लिए भी हायर एजुकेशन हासिल करना आसान नहीं रह गया है। हाल तक यह माना जाता था कि कम से कम सरकारी संस्थानों में तो आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग पढ़ाई कर ही लेगा, पर उन संस्थानों की भी बढ़ती फीस ने इस तबके की उम्मीदों पर पानी फेर दिया है। इस वर्ग के लिए तो प्राथमिक शिक्षा का खर्च उठाना भी कठिन होता जा रहा है। यह भारत के लिए एक बड़ी त्रासदी ही कही जाएगी, जहां दुनिया की सबसे युवा आबादी रहती है। आईआईएम (अहमदाबाद) की फीस वर्ष 2007 से 2022 के बीच 15 सालों में 4 लाख रुपए सालाना से बढकर 27 लाख रुपए सालाना पहुंच गई है जो कि 575 प्रतिशत की बढ़ोतरी है। देश के प्रमुख चार आईआईएम की सालाना औसत फीस 25 लाख रुपए से ज्यादा है। जब सरकारी संस्थानों का यह हाल है तो निजी संस्थानों के बारे में अंदाजा लगाया जा सकता है। एक तो केंद्रीय विश्वविद्यालयों और आईआईटी-आईआईएम जैसी संस्थाओं की संख्या इतनी कम है कि कुछ चुनिंदा छात्र ही इन तक पहुंच पाते हैं। यानी उच्च शिक्षा तक पहुंचे छात्रों के एक छोटे से हिस्से का भी एक छोटा हिस्सा।

एक बड़ा हिस्सा इन संस्थानों की दौड़ से पहले ही बाहर हो जाता है। कुछ साल पहले तक फीस इत्यादि कम होने की वजह से कुछेक ग्रामीण और कस्बाई छात्र अपनी प्रतिभा और संघर्ष के बल पर ऐसे संस्थानों में किसी न किसी तरह पहुंच ही जाते थे। लेकिन अब तो इसकी संभावना बेहद कम होती जा रही है। हमारी उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम, परीक्षा और परिणामों का स्वरूप कुछ ऐसा हो गया है कि अनेक छात्रों का इन पर से भरोसा उठ चुका है। यह धारणा बन गई है कि सरकारी कॉलेजों से बस डिग्री ले लेनी है, ताकि नौकरी में जा सकें। मतलब एडमिशन लेना एक मजबूरी है। इसलिए पैसे लगाकर दाखिले की औपचारिकता पूरी की जाती है और जैसे-तैसे पढ़ाई के सत्र निपटाए जाते हैं। सच्चाई यह है कि देश भर के ज्यादातर विश्वविद्यालय और कॉलेज अब केवल नामांकन व परीक्षा लेने के केंद्र बन कर रह गए हैं। बच्चे दाखिला लेकर या तो कोचिंग संस्थानों का रुख कर रहे हैं या उस दौरान कोई छोटे-मोटे काम कर रहे हैं। अनेक कॉलेज क्लासों में अमूमन सन्नाटा पसरा रहता है। लेकिन अब तो इस पर भी आफत आ रही है। उनकी ट्यूशन फीस तो बढ़ ही रही है, नामांकन शुल्क, परीक्षा शुल्क में भी बढ़ोतरी जारी है। इसका खामियाजा लड़कियों को ज्यादा भुगतना पड़ रहा है, क्योंकि परिवार में शिक्षा के मद में जब कटौती की बात आती है, तो लड़कियों की पढ़ाई ही रोकी जाती है, खासकर ग्रामीण इलाकों में। दलील दी जाती है कि लड़कियां तो बगैर शिक्षा और रोजगार के भी रह सकती हैं, क्योंकि उन्हें आगे चलकर मुख्यतः घर का ही काम संभालना है। इस समय तो अनेक प्राइवेट वित्तीय संस्थान गरीब छात्रों को उच्च शिक्षा लोन भी नहीं देते। वे कुछ ही सीमित कोर्स और संस्थाओं तक अपने लोन को सीमित रखते हैं, जहां केवल एक खास वर्ग के छात्र ही महंगी फीस देकर शिक्षा हासिल करते हैं। समाज के वर्किंग क्लास और निम्न मध्यवर्ग में यह अहसास मजबूत हुआ है कि उनके बच्चे जीवन की दौड़ में तभी टिक सकते हैं जब वे शिक्षा प्राप्त करें। इसलिए यह समूह अब अपने बच्चों की शिक्षा के लिए हर तरह का संघर्ष कर रहा है। वह पेट काटकर, जमीन गिरवी रखकर, कर्ज लेकर भी बच्चों को पढ़ा रहा है। इसके कारण पिछले डेढ़-दो दशकों में प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा में दाखिला बढ़ा है, लैंगिक अंतर कम हुआ है। यह एक सकारात्मक संकेत है। लेकिन अगर फीस इसी तरह बढ़ती रही तो गरीब तबके को मन मारकर इस दौड़ से बाहर निकल जाना होगा। निश्चय ही उच्च शिक्षा से एक बड़े वर्ग का वंचित होना भारी सामाजिक असमानता पैदा करेगा और आर्थिक विभाजन को भी गहरा करेगा। इसे कौन रोकेगा? याद रहे कि पर्याप्त निवेश के बिना विश्वस्तरीय और समावेशी शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य हासिल करना मुश्किल होगा।

प्रकृति के रौद्र रूप से ठंडा यूरोप गर्म भट्टी बना, एक हजार से ज्यादा मौत

मानव सभ्यता अभी भी नहीं संभली तो पूरी दुनिया का तापमान और तेजी से बढ़ेगा

मानव पिछले सैकड़ों साल से प्रकृति का दोहन कर रहा है। बात केवल दोहन तक ही होती तब भी ठीक था, लेकिन मानक प्रकृति को बर्बाद करने पर तुला है। मानव स्तर पर प्रकृति को कुछ भी वापस नहीं दिया जा रहा। वापस देने के नाम पर प्रकृति को विषैले तत्व दिए जा रहे हैं। इस दोहन और उपेक्षा को लगातार सहन कर रही प्रकृति को कोरोना काल में कुछ राहत मिली थी। लेकिन, वह राहत महज क्षणिक ही थी। कोरोना से उबरते ही दुनिया में पहले से कहीं ज्यादा प्रदूषण फैलने लगा। अब प्रकृति मानव को चेतावनी दे रही है। प्रकृति की चेतावनी बेहद गंभीर है। जो देश हमेशा ठंडे रहते थे, वहां लू चल रही

मनोज शर्मा

हैं। गर्मी से लोग जान गंवा रहे हैं। ठंडे देशों में यह हाल है तो जो देश सामान्य या गरम है उनके बारे में सोचते ही दहशत होने लगती है। प्रकृति ने मानव जाति को शायद यह अंतिम चेतावनी दी है। क्योंकि इसके बाद भी यदि मानव नहीं संभला तो प्रकृति खुद में बदलाव करना शुरू कर देगी। प्रकृति ने खुद में बदलाव किया तो मानव सभ्यता खत्म होना शुरू हो जाएगी। लिहाजा अभी भी समय है कि प्रकृति की इस गंभीर और अंतिम चेतावनी को समझा जाए और प्रदूषण उत्सर्जन और ग्लोबल वार्मिंग बढ़ाने वाले अन्य कारणों पर प्रभावी अंकुश लगाए जाए।

यूरोप में आसमान से बरस रही आग ने दुनिया को डराया

यूरोप में चिलचिलाती धूप के कारण तापमान के पुराने रिकॉर्ड लगातार टूट रहे हैं और पूरा महाद्वीप भीषण गर्मी की चपेट में है। मंगलवार और बुधवार को फ्रांस में इतिहास के सबसे गर्म दिन

- **प्रकृति का दोहन रोकना होगा और पेड़ों की संख्या को तेजी से बढ़ाना होगा**
- **वायु प्रदूषण को न्यूनतम करना होगा, वरना दुनिया का और ज्यादा बुरा हाल होगा**

दर्ज किए गए, जहां पश्चिमी हिस्सों में तापमान 39 से 43 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। बुधवार ब्रिटेन के इतिहास में जून का सबसे गर्म दिन रहा और तापमान 36.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। शुरूआती आंकड़ों के अनुसार, स्पेन, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, नीदरलैंड और स्विट्जरलैंड में भी जून के तापमान के कई रिकॉर्ड टूटे हैं। इस बीच, फ्रांस में भीषण गर्मी से राहत पाने की कोशिश में डूबने वाले दर्जनों लोगों समेत कई लोगों की मौत हुई है।

समुद्र की सतह का वैश्विक तापमान फिर रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। ऑस्ट्रेलिया के मौसम विभाग ने आधिकारिक तौर पर अलनीनो की स्थिति बनने की पुष्टि की है, जिससे ऑस्ट्रेलिया, एशिया और दक्षिण प्रशांत क्षेत्र में सामान्य से अधिक गर्म और शुष्क मौसम रहने की आशंका है। भारत और पाकिस्तान भी भीषण गर्मी का सामना कर रहे हैं। लगातार तीन या उससे अधिक दिनों तक सामान्य से काफी अधिक तापमान दर्ज होने की स्थिति को हीटवेव कहा जाता है। वैज्ञानिकों के अनुसार, इस बार यूरोप की गर्मी दो कारणों से अधिक चिंताजनक है।

समय से पहले

यूरोप में सबसे अधिक गर्मी सामान्यतः जुलाई के मध्य से आखिर तक पड़ती है, लेकिन अब भीषण गर्मी जून में ही शुरू हो रही है। 1950 के बाद यह केवल दूसरी बार है जब हीटवेव अपने चरम मौसम से कई सप्ताह पहले पहुंची है। एक अध्ययन के अनुसार, यदि मानव-जनित ग्रीनहाउस गैसों का प्रभाव न होता तो जून 2025 जैसी गर्मी 50 वर्ष में एक बार आती, लेकिन 1.3 डिग्री सेल्सियस वैश्विक तापमान वृद्धि के कारण अब ऐसी स्थिति हर पांच वर्ष में देखने को मिल सकती है।

टूटते रिकॉर्ड

यदि जलवायु परिवर्तन नहीं हुआ होता, तो इतनी जल्दी और इतनी तीव्र गर्मी संभव नहीं थी। मंगलवार और बुधवार फ्रांस में 1947 के बाद सबसे गर्म दिन रहे। पूरे देश का औसत तापमान 29.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मंगलवार को 147 शहरों में जून का सर्वाधिक तापमान

रिकॉर्ड हुआ और 41 मौसम केंद्रों पर पारा 43 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंच गया। दोनों रातें भी सबसे गर्म रहीं, जबकि स्पेन में कुछ स्थानों पर तापमान 45 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच गया और लगातार तीन रात न्यूनतम तापमान 30 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक रहा।

जलवायु का असर

वैज्ञानिकों के अनुसार, लंबे समय तक बने उच्च वायुदाब वाले क्षेत्र गर्म हवा को सतह के पास रोक लेते हैं, जबकि जीवाश्म ईंधनों से बढ़ता जलवायु परिवर्तन हीटवेव की तीव्रता और अवधि दोनों बढ़ा रहा है। 1950 से 1999 के बीच यूरोप में केवल पांच बड़े हीटवेव दौर आए थे, जबकि 2000 से 2025 के बीच इनकी संख्या 20 से अधिक हो चुकी है। यूरोपियन क्लाइमेट रिस्क असेसमेंट के अनुसार, दक्षिणी यूरोप में भीषण गर्मी जनस्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन चुकी है। यदि अलनीनो का प्रभाव भी बना रहा, तो 2026 और 2027 में वैश्विक औसत तापमान रिकॉर्ड स्तर के करीब रह सकता है। बदलती जलवायु में अत्यधिक गर्मी अब पूरी दुनिया के लिए स्वास्थ्य, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था से जुड़ा वैश्विक संकट बन चुकी है।

41 डिग्री गर्मी में ही मरने लगे लोग, क्या कहता है विज्ञान

यूरोप इस समय अपनी हाल की सबसे भीषण गर्मी का सामना कर रहा है। दिन-रात का तापमान इतना बढ़ गया है कि लोग परेशान हैं। हर कोई इस बारे में चिंतित है कि आखिर यूरोप जैसे ठंडे महाद्वीप में इतनी गर्मी क्यों हो रही है। जिस जगह पर लोगों ने हीटर तो खूब देखा था, पर एसी लगाया तक नहीं था, उन्हें अब इसके बारे में सोचना पड़ रहा है। सड़कें पिघली जा रही हैं, रेलवे ट्रैक टेढ़े हो रहे हैं और गर्मी से लोगों की मौत हो रही है, वो भी सिर्फ 40 डिग्री के टेम्परेचर पर। ऐसे में सवाल उठता है कि यूरोप भट्ठी क्यों बना हुआ है? एक नई अध्ययन रिपोर्ट की मानें तो यह गर्मी जलवायु परिवर्तन के बिना लगभग असंभव होती।

वर्ल्ड वेदर एट्रिब्यूशन की रिपोर्ट में कहा गया है कि ये गर्मी 50 साल पहले यानि 1976 में लगभग नामुमकिन थी। आज यह 20 साल पहले की तुलना में 200 गुना ज्यादा गर्मी पड़ रही है। फ्रांस, इटली, स्पेन, ब्रिटेन समेत कई देशों में हीट डोम का असर है और दिन में तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंच रहा है। रात में भी गर्मी से राहत नहीं मिल रही है और लोगों को आराम मिलना मुश्किल हो गया है। जिन लोगों को ये हीट सहने की आदत नहीं थी, उनके लिए ये बड़ी मुश्किल पैदा कर रहा है।

वैज्ञानिकों ने बताई गर्मी की असल वजह

वर्ल्ड वेदर एट्रिब्यूशन 2015 से दुनिया भर की चरम मौसम घटनाओं का अध्ययन करती है। यह रिपोर्ट समीक्षा पद्धति पर आधारित है, हालांकि पूरी तरह रिव्यू नहीं हुई। इस अध्ययन में 18 जून से शुरू हुई गर्मी का विश्लेषण किया गया। 30 यूरोपीय देशों के 850 शहरों में से 45 प्रतिशत शहरों में गर्मी का तनाव रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। हीट स्ट्रेस में नमी और तापमान दोनों शामिल होते हैं। इससे इंसान के शरीर पर दबाव बढ़ता है और ठंडक पाना मुश्किल हो जाता है। वर्ल्ड वेदर एट्रिब्यूशन के वैज्ञानिकों ने इसे इस क्षेत्र की सबसे गंभीर गर्मी और आर्द्र गर्मी की घटना बताया।

वैज्ञानिकों ने कहा कि मौजूदा एल नीनो चक्र का इस गर्मी पर कोई खास असर नहीं है। मई में भी यूरोप में रिकॉर्ड गर्मी पड़ी थी। आमतौर पर जुलाई-अगस्त में गर्मी चरम पर होती है, लेकिन इस बार जून में ही इतनी भयंकर गर्मी देखी जा रही है।

पिछले सालों की गर्मी से तुलना

वैज्ञानिकों ने 1976 और 2003 की गर्मी से तुलना की। अध्ययन के मुताबिक अगर ऐसी ही गर्मी 1976 के मौसम में होती तो दिन का तापमान 3.5 डिग्री सेल्सियस कम होता। रात का तापमान 2.4 डिग्री कम होता। साल 2003 में भी दिन में 2 डिग्री और रात में 1.3 डिग्री कम होता। अध्ययन के मुख्य लेखक थियोडोर कीपिंग ने कहा कि 1976 के मौसम में ऐसी घटना कभी नहीं होती। 2003 में भी गर्मी का ये रूप किसी ने नहीं देखा था। ऐसे में जलवायु परिवर्तन ही इस गर्मी का मुख्य कारण है।

यूरोप क्यों तैयार नहीं?

यूरोप दुनिया का सबसे तेज गर्म होता महाद्वीप है। 1980 के बाद यहां तापमान वैश्विक औसत से दोगुनी तेजी से बढ़ रहा है। पिछले साल वर्ल्ड वेदर एट्रिब्यूशन की एक रिपोर्ट में कहा गया था कि गर्मी से करीब 1,500 मौतें हुई थीं। इस बार कई देशों में रेड अलर्ट जारी किया गया है। खेल कार्यक्रम, स्कूल, बस-ट्रेन सेवाएं और पर्यटन स्थल प्रभावित हैं। ज्यादातर यूरोपीय देशों में एयर कंडीशनिंग या गर्मी से निपटने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। हीटवेव से फ्रांस सबसे ज्यादा प्रभावित है। वहां इस हफ्ते सबसे गर्म दिन दर्ज किया गया और डूबने से 40 मौतें हो चुकी हैं। बुजुर्ग, बच्चे और बीमार लोग सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं। अस्पतालों में मरीजों की संख्या बढ़ गई है। कई जगहों पर काम के घंटे कम किए गए हैं।

गर्मी की आदत डालें, बदलें सिस्टम

वर्ल्ड वेदर एट्रिब्यूशन के वैज्ञानिक थियोडोर कीपिंग ने कहा कि हमें ऐसी गर्मी की आदत डालनी होगी। बुनियादी ढांचे को बदलना पड़ेगा। घरों में कूलिंग सिस्टम, शहरी नियोजन और स्वास्थ्य सुविधाएं बेहतर करनी होंगी। साथ ही जलवायु परिवर्तन का मूल कारण भी दूर करना जरूरी है। कीपिंग ने साफ कहा कि कार्बन उत्सर्जन कम करना होगा। कोयला, तेल, गैस का इस्तेमाल घटाना पड़ेगा। यूनिवर्सिटी ऑफ पेंसिल्वेनिया के जलवायु वैज्ञानिक माइकल मैन का कहना है कि रिपोर्ट जलवायु परिवर्तन की भूमिका को कम आंक रही है। उनके मुताबिक वास्तविक प्रभाव और भी गंभीर हैं। यूरोप में गर्मी की लहरें अब ज्यादा बार, ज्यादा लंबी और ज्यादा खतरनाक हो रही हैं। अगर उत्सर्जन नहीं रोका गया तो भविष्य और बदतर होगा। यूरोप की यह गर्मी सिर्फ मौसम की का चरम नहीं बल्कि जलवायु परिवर्तन की चेतावनी है। लाखों लोग प्रभावित हैं, मौतें हो रही हैं और अर्थव्यवस्था के साथ-साथ स्वास्थ्य सेवाएं दबाव में हैं। यह घटना दुनिया को याद दिलाती है कि ग्लोबल वार्मिंग अब दूर की समस्या नहीं है। यूरोप जैसे विकसित महाद्वीप भी इससे जूझ रहा है। समय रहते कार्रवाई न की गई तो आने वाले वर्षों में ऐसी घटनाएं सामान्य हो जाएंगी।

स्मार्ट फोन की चमकीली दुनिया और बेबस होते माता-पिता

रात के एक या दो बजे का समय है। पूरे घर में अंधेरा पसरा है, सिवाय एक बेडरूम के दरवाजे के नीचे से छनकर आती मोबाइल की उस धुंधली नीली रोशनी के। आधी रात को माँ की आँख खुलती है। वह पानी पीने के लिए उठती है और सहज भाव से अपने बच्चे के कमरे में झांकती है। वहाँ वो बिस्तर पे बैठा हैं-हाथ में मोबाइल है और कानों में हेडफोन मजबूती से जड़े हैं। स्क्रीन पर कुछ न कुछ चल रहा है; कोई गेम पूरे जोर से चल रहा है। वक्त का होश तो जैसे पूरी तरह खो चुका है।

संजय बैंसला

वे दस मिनट कब दो घंटों में बदल जाते हैं, कोई नहीं जानता। आखिरकार नींद आ ही जाती है, पर कब? इसका सटीक हिसाब किसी के पास नहीं होता। आज देश-दुनिया के अधिकांश घरों में हर रात यही कहानी दोहराई जा रही है। अगले दिन फिर वही चक्र चलता है: दिन के ग्यारह या बारह बजे तक सोए रहना, और कई बार टोकने के बाद ही बिस्तर छोड़ना। जब वे आखिरकार उठते हैं, तो एक हाथ में फोन और दूसरे हाथ में कॉफी का कप होता है। शरीर तो जाग जाता है, लेकिन दिन की जो एक प्राकृतिक लय होती है, वह पूरी तरह दम तोड़ चुकी होती है। रात भर जागना, दोपहर में आँखें खोलना, और भोर होने तक लैपटॉप या मोबाइल की स्क्रीन को टकटकी लगाकर ताकते रहना ही अब 'नया नॉर्मल' बन गया है। समय बदलता है, तकनीक आगे बढ़ती है और जीवनशैली उसके अनुसार ढल जाती है। यहाँ तक तो सब ठीक है। लेकिन मानव शरीर की बुनियादी जरूरतें नहीं बदलतीं। मानवीय जिस्म को शारीरिक आराम की दरकार होती है। मन को गहरी, सुकून भरी नींद मिलनी चाहिए। आँखों को अंधेरे की और दिमाग को खुद को दोबारा तरोताजा व व्यवस्थित करने के लिए शांत समय की आवश्यकता होती है। मगर आज की पीढ़ी मानो अपने ही बायोलॉजी से युद्ध लड़ रही है। उन्हें शायद यह मुगालता हो गया है कि ढेर सारी तकनीक और डेटा के दम पर वे इंसानी शरीर के नियमों को मात दे सकते हैं और अपनी जैविक घड़ी (बायो-रिदम) को ठेंगा दिखा सकते हैं। जब हम बच्चे थे, तो गर्मियों की छुट्टियों की एक अलग ही जादुई दुनिया हुआ करती थी। हम खुले आसमान के नीचे छत पर सोते थे, टिमटिमाते तारों को निहारते हुए परिवार से बतियाते थे। हम सूरज उगने से पहले उठ जाते थे, जहाँ पक्षियों की चहचहाहट और भोर की ताजी हवा एक नए उत्साह के साथ हमारा स्वागत करती थी।

हमारे दिन खेलने, किताबें पढ़ने, गलियों में घूमने और आपस में बातें करने में बीतते थे।

आज, कई बच्चे भूल चुके हैं कि सूर्योदय असल में कैसा दिखता है। वे सुबह की उस शांत लहर और चिड़ियों के चहकने के सीधे गवाह ही नहीं बन पाते। इस बदलाव का दुख सिर्फ पुरानी यादों का रोना नहीं है; बल्कि यह उनके स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन और आने वाले कल को लेकर एक सच्ची और गहरी चिंता है। आज के किशोरों ने वक्त के पहिये को ही उलट दिया है-रात को दिन और दिन को रात बना डाला है। माता-पिता होने के नाते, हम मूकदर्शक बनकर यह सब देखते हैं। शुरूआत में हम टोकते हैं। प्यार से समझाते हैं। फिर, हम इसके बुरे नतीजों से आगाह करने की कोशिश करते हैं। अपनी बातें बार-बार दोहराते हैं। कभी गुस्सा फूटता है, तो कभी हम मिन्नतें करने लगते हैं। लेकिन आज के बच्चों के पास पलटवार करने के लिए पहले से रिकॉर्डेड जवाबों का एक पूरा तरकश तैयार रहता हैः

हमें सब पता है।

आप फालतू में चिंता मत करो।

आजकल सब लोग ऐसा ही करते हैं।

हमारी पीढ़ी की जिंदगी आपसे अलग है।

इन दुत्कार भरे जवाबों को रोज-रोज सुनकर माता-पिता आखिरकार घुटने टेक देते हैं और चुप हो जाते हैं। मगर उनका मन शांत नहीं होता। वे अपने तजुर्बे से जानते हैं कि अगर आप अपने शरीर के साथ खिलवाड़ करेंगे, तो देर-सबेर आपको इसकी भारी कीमत चुकानी ही पड़ेगी। बीस या पच्चीस साल की उम्र में इंसान खुद को अजेय समझता है, लगता है कुछ नहीं होगा। लेकिन नींद की यह लगातार कमी, बेपटरी हो चुकी दिनचर्या, शारीरिक मेहनत से दूरी और स्क्रीन के सामने घंटों गुजारने के ये छोटे-छोटे बीज जो चुपचाप बोए जा रहे हैं; वक्त के साथ, वे पनपते हैं और एक गंभीर शक्ल अख्तियार कर लेते हैं। स्वभाव में चिड़चिड़ापन घर कर जाता है। एकाग्रता टूटने लगती है।

जीवन का उत्साह और ऊर्जा फीकी पड़ जाती है। अपनों से बातचीत का दायरा सिमटने लगता है, आत्मविश्वास डगमगा जाता है, और सबसे दुखद बात यह है कि जिंदगी की छोटी-छोटी मासूम खुशियाँ काफूर होने लगती हैं। फिर भी, माता-पिता के लिए सबसे बड़ी त्रासदी इन नतीजों को देखना नहीं है; बल्कि यह जानलेवा अहसास है कि वे अब चाहकर भी अपने बच्चों के दिल तक नहीं पहुँच पा रहे हैं, उनसे संवाद के सारे रास्ते बंद हो चुके हैं। हर पीढ़ी को लगता है कि उनके माता-पिता उन्हें समझ नहीं पाते। लेकिन सच तो यह है कि माता-पिता अपनी पूरी जिंदगी ही बच्चों को समझने के नाम कर देते हैं।

वे एक अबोध बच्चे के रोने की वजह पहचान लेते हैं। वे स्कूल के दिनों की अनकही उलझनों और घबराहट को भांप लेते हैं। वे बच्चे की पहली नाकामी का दर्द खुद महसूस करते हैं और उनके पहले प्यार की धड़कन को पहचानते हैं। यहाँ तक कि जब बच्चे पूरी तरह खामोश होते हैं, तब भी माता-पिता सिर्फ उनका चेहरा देखकर उनके भीतर का हाल पढ़ लेते हैं। फिर एक दिन ऐसा आता है जब वही बच्चे बड़े हो जाते हैं, और सीधे आँखों में आँखें डालकर कह देते हैं, 'आप कुछ नहीं समझते ! यह एक जुमला

माता-पिता के कलेजे को सबसे गहरा घाव देता है। माता-पिता अपने बच्चों के दुश्मन नहीं होते; वे तो उनके सपनों के सबसे सच्चे और पहले गवाह होते हैं। वे उनकी कामयाबी के लिए सबसे पहले दुआ मांगते हैं और जब बच्चा नाकाम होता है, तो अंदर से टूटने वाले भी वही पहले शख्स होते हैं। वे बच्चों की बीमारी में रात-रात भर जागते हैं और बच्चों की छोटी सी जीत का जश्न खुद की किसी भी कामयाबी से बढ़कर मनाते हैं। जब कोई माँ या पिता बच्चे को रात भर जागने से मना करते हैं, तो यह उन्हें अपनी उंगलियों पर नचाने या नियंत्रित करने की चाहत नहीं होती। यह विशुद्ध प्यार से जनम लेता है।

यह उनके तजुर्बे, फिक्र और एक बेहद निस्वार्थ डर से पैदा होता है किः जो परेशानियां मैंने देखीं, मेरा बच्चा उनसे न जूझे। लेकिन जब तमाम कोशिशों और अंतहीन बातचीत के बाद भी कुछ नहीं बदलता, तो माता-पिता धीरे-धीरे अपनी एक खामोश दुनिया में सिमट जाते हैं। बच्चे अक्सर इस चुप्पी को उनकी बेरुखी या लापरवाही मान लेते हैं, उन्हें लगता है कि अब मम्मी-पापा को कोई फर्क नहीं पड़ता। मगर हकीकत इसके उलट होती है; वे फिक्र से मरे जा रहे होते हैं। बस, वे इस कड़वे सच को स्वीकार कर चुके होते हैं कि अब शब्दों की ताकत जवाब दे चुकी है, और अब जिंदगी की ठोकरें ही खुद उनकी संतान को सबक सिखाएंगी। यह चुप्पी कोई हार नहीं है; यह एक बेहद दुखद और लाचार स्वीकारोक्ति है। एक भारी बेबसी। जिस दिन माता-पिता बहस करना बंद कर देते हैं, उस दिन से उनकी चिंताएं कम नहीं होतीं- बल्कि वे और ज्यादा बढ़ जाती हैं। क्योंकि 'माता-पिता' होना एक ऐसी उम्रकैद है, जहाँ बच्चे भले ही पचास साल के हो जाएं, उनके लिए फिक्र कभी खत्म नहीं होती। उम्र के साथ बस डर का स्वरूप बदल जाता है, पर वह दिल से कभी विदा नहीं लेता। यह बिल्कुल जरूरी नहीं है कि आप अपने माता-पिता की हर बात को पत्थर की लकीर मानें। आप उनकी हर राय से पूरी तरह सहमत हों, यह भी आवश्यक नहीं है।

लेकिन कभी-कभी, उनकी उस चिड़चिड़ाहट और टोकने की आदत के पीछे छिपे बेइंतहा प्यार को भी महसूस करने की कोशिश कीजिए। क्योंकि जिंदगी के सफर में आगे चलकर एक ऐसा मोड़ जरूर आएगा, जब आपको अचानक उन सभी बातों की अहमियत और वजह समझ में आएगी, जो वे आज कह रहे हैं। और यकीन मानिए, जब वो दिन आएगा, तब आप इस भारी पछतावे के बोझ को नहीं सहना चाहेंगे किः 'काश ! मैंने उस वक्त उनकी बात मान ली होती, तो कितना अच्छा होता।' आज रात भी, एक माँ आधी रात को उठेगी और अपने बच्चे के कमरे की बत्ती के नीचे से झांकेगी। एक पिता सुबह देर तक सोते हुए अपने नौजवान बेटे या बेटी को निहारेगा और बिना एक शब्द बोले चुपचाप अपने काम पर निकल जाएगा। वे अब न तो कोई बहस करेंगे और न ही गुस्सा जताएंगे। लेकिन उनके अंतर्मन में एक खामोश प्रार्थना लगातार गूंजती रहेगीः

'हे ईश्वर, मेरे बच्चों को सलामत रखना, उन्हें अच्छी सेहत और सद्बुद्धि देना। उन्हें खुश रखना। और जो बातें हम उन्हें अपने शब्दों से नहीं समझा पाए, जिंदगी उन्हें वह सबक बड़ी नरमी से और वक्त रहते सिखा दे।' अगर इस कायनात में कोई सचमुच निस्वार्थ और पवित्र प्यार है, तो वह केवल माता-पिता का है। कभी-कभी यह किसी उबाऊ भाषण जैसा लग सकता है। कभी-कभी यह बेजा चिंता या तीखी बहस का रूप ले लेता है। लेकिन कभी-कभी, यही प्यार पूरी शिद्दत के साथ एक मुकम्मल खामोशी के जरिए खुद को बयां करता है। यह ताउम्र रहने वाली फिक्र ही उनके प्यार की सबसे सच्ची जुबान है, और हमेशा रहेगी।

बारिश में कुछ गलतियां खराब कर देंगी आपका प्रोफेशनल लुक, अपनाएं ये टिप्स

बारिश का मौसम गर्मी से राहत जरूर देता है, लेकिन सुबह ऑफिस निकलने वालों के लिए कई नई परेशानियां भी लेकर आता है। कभी कपड़े भीग जाते हैं, कभी पैंट पर कीचड़ के छींटे पड़ जाते हैं और ऊपर से उमस की वजह से पूरा दिन चिपचिपा महसूस होता है। लेकिन अच्छी बात ये है कि कुछ आसान फैशन टिप्स अपनाकर आप बारिश में भी आरामदायक और प्रोफेशनल दोनों दिख सकते हैं।

डार्क कलर की शर्ट बनाएं पहली पसंद

मानसून में हल्के रंगों की जगह डार्क कलर पहनना ज्यादा स्मार्ट ऑप्शन है। सफेद या हल्के रंग के कपड़ों पर पानी के निशान और गंदगी तुरंत दिखने लगती है, जबकि नेवी ब्लू, ब्लैक, चारकोल ग्रे जैसे रंग इन्हें काफी हद तक छिपा लेते हैं। अगर रोज ऑफिस जाना पड़ता है तो डार्क शर्ट या टॉप आपके वॉर्डरोब का हिस्सा जरूर होना चाहिए।

रोल-अप स्लीव्स रखें

अगर आपकी शर्ट की स्लीव्स मोड़ी जा सकती हैं तो यह मानसून में काफी काम आती हैं। रास्ते में बारिश शुरू हो जाए तो स्लीव्स ऊपर कर लें। इससे कपड़े कम भीगेंगे और ऑफिस पहुंचने के बाद जल्दी सूख जाएंगे।

सही फिट वाले कपड़े पहनें

बहुत टाइट कपड़े बारिश में असहज लग सकते हैं, वहीं बहुत ढीले कपड़े ज्यादा पानी सोख लेते हैं और सूखने में भी समय लेते हैं। इसलिए ऐसे कपड़े चुनें जो न ज्यादा टाइट हों और न ही बहुत ढीले। सही फिट वाले आउटफिट जल्दी सूखते हैं और पूरे दिन अच्छा लुक भी देते हैं।

ऑफिस में रखें एक एक्स्ट्रा शर्ट

बारिश का कोई भरोसा नहीं होता। इसलिए ऑफिस की ड्रॉअर या बैग में हमेशा एक एक्स्ट्रा शर्ट या टॉप रखें। अगर रास्ते में ज्यादा भीग जाएं तो तुरंत बदल सकते हैं और पूरे दिन फ्रेश व प्रोफेशनल दिखेंगे।

एंकल-लेंथ ट्राउजर सबसे बेहतर

बहुत लंबी पैंट बारिश में सबसे ज्यादा परेशान करती है। वह पानी और कीचड़ में भीग जाती है

और गंदी भी जल्दी होती है। ऐसी ट्राउजर चुनें जो टखनों के थोड़ा ऊपर तक हो। इससे पैंट साफ रहती है और चलना भी आसान होता है।

स्ट्रेट या टेपर फिट ट्राउजर पहनें

बहुत चौड़ी पैंट या पलाजो बारिश में ज्यादा पानी सोख लेते हैं और सूखने में समय लगता है। ऑफिस के लिए स्ट्रेट या टेपर फिट ट्राउजर ज्यादा प्रैक्टिकल और स्टाइलिश ऑप्शन हैं।

बॉटम्स में भी डार्क कलर चुनें

अगर आपकी पैंट का रंग ब्लैक, नेवी या चारकोल है तो कीचड़ के छोटे-मोटे निशान ज्यादा नजर नहीं आएंगे। हल्के रंग की पैंट बारिश के मौसम में जल्दी गंदी दिखने लगती है।

हल्की लेयरिंग करें

मानसून में मौसम हर कुछ घंटों में बदल सकता है। बाहर उमस होती है, जबकि ऑफिस के एसी में ठंड लग सकती है। ऐसे में हल्का कार्डिगन या वेस्टकोट साथ रखना अच्छा आइडिया है। जरूरत पड़े तो पहन लें और गर्मी लगे तो आसानी से उतार दें।

भारी ब्लेजर से रहें दूर

बारिश में भारी ब्लेजर जल्दी नहीं सूखते और पहनने में भी भारी महसूस होते हैं। इसके बजाय हल्की लेयर चुनें, जिन्हें कैरी करना आसान हो। अगर शर्ट भीग जाए तो लेयरिंग काम आएगी। अगर ऑफिस पहुंचने तक आपकी शर्ट थोड़ी भीग जाए तो ऊपर से हल्का वेस्टकोट या कार्डिगन पहन सकते हैं। इससे गीले निशान भी कम नजर आएंगे और शर्ट को सूखने का समय भी मिल जाएगा।

मानसून के लिए बेस्ट ऑफिस लुक

फॉर्मल ऑफिस लुकः अगर आपका ऑफिस पूरी तरह फॉर्मल ड्रेस कोड फॉलो करता है तो डार्क शर्ट, ब्लैक या चारकोल एंकल-लेंथ ट्राउजर और हल्का वेस्टकोट अच्छा कॉम्बिनेशन रहेगा। इसके साथ बंद जूते पहनें ताकि बारिश में भी लुक प्रोफेशनल बना रहे।

स्मार्ट कैजुअल लुकः अगर ऑफिस में स्मार्ट कैजुअल ड्रेस कोड है तो नेवी, चारकोल या डार्क ग्रीन जैसी जल्दी सूखने वाली शर्ट चुनें। इसे टेपर ट्राउजर और आरामदायक बंद जूतों के साथ पहनें। ज्वेलरी कम रखें और बालों को बांधकर रखें ताकि बारिश में भी लुक साफ-सुथरा लगे।

क्रिएटिव ऑफिस लुकः अगर आपके ऑफिस में ड्रेसिंग को लेकर ज्यादा आजादी है तो डार्क कलर के छोटे प्रिंट वाली शर्ट पहन सकते हैं। इसे डार्क बॉटम्स और हल्की लेयर के साथ स्टाइल करें।

ऐसे कपड़े चुनें जो जल्दी सूख जाएं और बारिश के बावजूद आपको पूरे दिन कॉन्फिडेंट महसूस कराएं।

मानसून: खूबसूरत वादियां बन सकती हैं काल ! भूस्खल-बाढ़ का रेड अलर्ट

मॉनसून में घूमने का प्लान बना रहे हैं तो सावधान, क्योंकि उत्तराखंड, हिमाचल और दार्जिलिंग जैसे खूबसूरत हिल स्टेशन बारिश में खतरनाक हो जाते हैं। इन जगहों पर लैंडस्लाइड, बाढ़ और सड़क बंद होने का खतरा बढ़ जाता है, इसलिए यात्रा से पहले पूरी जानकारी लेना जरूरी है।

अरुण मिश्रा

बारिश के मौसम में घूमना काफी सुहावना लगता है। हर कोई मॉनसून आते ही घूमने का प्लान करने लगता है। गौरतलब है कि भारत में ऐसी कई जगहें, जो मॉनसून में और भी ज्यादा खूबसूरत हो जाती है। इसी कारण से कई लोग मॉनसून के दौरान छुट्टियों की प्लानिंग करते हैं। यह जगहें बारिश में काफी खूबसूरत नजर आती हैं, उतनी ही खतरनाक भी हो सकती है। इसलिए हमेशा सोच-समझकर का ट्रिप का प्लान करें। क्योंकि मॉनसून के समय कुछ ऐसी जगहें है, जहां पर लैंडस्लाइड, बाढ़, सड़क बंद और नदियों के उफान से कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अगर आप भी कहीं घूमने का प्लान कर रहे हैं, तो वे लोग एक बार जगहों के बारे में सोच-समझकर ही प्लान करें। मसूरी, नैनीताल और उत्तराखंड के कई हिल स्टेशंस उत्तराखंड में ऐसे कई हिल स्टेशंस जहां लोग घूमने के लिए जरुर जाते हैं।

सालभर यहां पर भीड़ लगी रहती है। लेकिन मॉनसून के समय यहां पर जाना आपके लिए बड़ी चुनौती भी बन सकती है। दरअसल, बरसात के समय कई जगहों पर लैंडस्लाइड होती है। पहाड़ों से पत्थर और मिट्टी गिरने से कभी भी सड़कें बंद हो जाती हैं। इसके अलावा, नदियों का वॉटर फ्लो भी बढ़ जाता है। इस दौरान कई जगहों पर बादल फट जाते हैं। इसलिए मॉनसून के समय मसूरी, नैनीताल, केदारनाथ, बद्रीनाथ और जोशीमठ जैसी जगहों पर जाने का प्लान न करें।

कुल्लू-मनाली

हिमाचल प्रदेश का कुल्लू-मनाली बेहद ही खूबसूरत है। यहां पर हमेशा लोगों की भीड़ लगी रहती है। हालांकि, बरसात के दौरान यहां जाने पर खतरा हो सकता है। असल में भारी बरसात

दार्जिलिंग

बरसात के मौसम में अधिकत्तर लोग दार्जिलिंग जाने का प्लान जरुर बनाते हैं। वैसे यह जगह अपनी खूबसूरत वादियो और चाय के बागानों के लिए जानी जाती है। बरसात के समय यहां की नेचुरल ब्यूटी में चार चांद लग जाते है। लेकिन इस दौरान काफी खतरे भी बढ़ जाते है। जैसा कि तीस्ता नदी का फ्लो कई बार यहां पर काफी बाढ़ आ जाती है। मॉनसून में यहां पर लैंडस्लाइड की संभावना अधिक बढ़ जाती है। इसलिए सोच-समझकर ही ट्रिप का प्लान करें।

के समय पहाड़ों से मलबा सड़कों पर आ जाता है। इससे कई बार रास्ते बंद हो जाते हैं। कुछ सालों में यहां पर ऐसा कई बार हुआ है कि कई जगहों पर बाढ़ और बारिश से काफी नुकसान हुआ है। अगर आप यहां पर जाने का प्लान कर रहे हैं, तो मॉनसून के समय बिल्कुल न जाएं।

नॉर्थ ईस्ट और कुछ इलाके

बारिश के दौरान नॉर्थ-ईस्ट इंडिया के कई राज्यों में बाढ़ का खतरा अधिक रहता है। असम व अरुणाचल प्रदेश जैसी जगहों पर भारी बारिश के कारण से काफी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, यदि आप मुंबई या गोवा जाने का प्लान कर रहे हैं, तो आप थोड़ा रुक जाएं। अभी मुंबई के हालात भी काफी खराब है।

इन बातों का रखें ख्याल

- **जब भी आप ट्रिप का प्लान करें तो मौसम का अपडेट लेना जरुरी होता है।**
- **जहां जा रही हैं वहां के हालात जरुर पता करें।**
- **भारी बारिश अलर्ट के बाद ट्रिप का प्लान न करें।**

वेट लॉस करने के लिए कैलोरी काउंट का झंझट नहीं, आजमाएं ये तरीके

जब भी वजन कम करने की बात होती है तो लोग सबसे पहले कैलोरी काउंट की बात ही करते हैं, क्योंकि जब कैलोरीज कम होंगी तो वजन कम करना आसान होगा। लेकिन इस चक्कर में हर मील को गिनना या नापकर खाना काफी थका देने वाला होता है। हो सकता है कि आप भी वजन कम करना चाहते हों, लेकिन बार-बार खाना नापने की चिंता नहीं करना चाहते तो ऐसे में आपको परेशाने होने की जरूरत नहीं है।वजन कम करने के लिए हर बार कैलोरी काउंट करना जरूरी नहीं है। अगर आप सही तरीके से खाना चुनें और खाने की कुछ स्मार्ट आदतें अपनाएं, तो बिना कैलोरी गिने भी फिट रह सकते हैं। तो चलिए जानते हैं कि इसके बारे में-

हर बार कैलोरी गिनना क्यों जरूरी नहीं है?

अमूमन कैलोरी काउंटिंग को इसलिए अच्छा माना जाता है, क्योंकि इससे आपको यह समझने में मदद मिलती है कि आप कितना खा रहे हैं। हालांकि, इस तरीके को ताउम्र नहीं अपनाया जा सकता। यह काफी तनावभरा होता है और व्यक्ति अपनी डाइट का आनंद भी नहीं ले पाता है। इसलिए, स्मार्ट ईटिंग करने का विकल्प चुनना काफी अच्छा रहता है।

एक ही बार में तैयार करें थाली

अगर आप अपने कैलोरी काउंट में बने रहना चाहते हैं और खाना नापना नहीं चाहते तो ऐसे में एक ही बार में थाली तैयार करें। अगर आप बार-बार सर्विंग लेते हैं, तो ऐसे में आप अक्सर जरूरत से ज्यादा खा लेते हैं। इसलिए, आपको जितना खाना है, प्लेट में रखें। फिर दूसरी सर्विंग लेने से पहले कुछ वक्त रूकें। आप पाएंगे कि भूख खुद ही शांत हो गई है।

आजमाएं हाफ प्लेट रूल

यह एक ऐसा तरीका है, जिसमें आप बिना मापे भी 200-400 कैलोरी कम खा सकते हैं। इसके लिए आपको इतना करना है कि बस अपनी प्लेट देखें।

फिर उसमें आधी प्लेट सब्जियां या सलाद रखें। इसके बाद उसमें एक चौथाई प्रोटीन व एक चौथाई कार्बोहाइड्रेट रखें। दरअसल, सब्जियों में पानी और फाइबर ज्यादा होता है जबकि कैलोरी कम होती है। जिसकी वजह से प्लेट और पेट दोनों भर जाते हैं, लेकिन कुल कैलोरी नहीं बढ़ती।

> *अगर आप अपने कैलोरी काउंट में बने रहना चाहते हैं और खाना नापना नहीं चाहते तो ऐसे में एक ही बार में थाली तैयार करें। अगर आप बार-बार सर्विंग लेते हैं, तो ऐसे में आप अक्सर जरूरत से ज्यादा खा लेते हैं। इसलिए, आपको जितना खाना है, प्लेट में रखें। फिर दूसरी सर्विंग लेने से पहले कुछ वक्त रूकें।*

प्रोटीन से करें खाना शुरू

अगर आप खाने को काउंट किए बिना ही अपनी कैलोरीज में बने रहना चाहते हैं तो ऐसे में हर मील की शुरूआत प्रोटीन से करें। इसके लिए आप दाल, पनीर, दही, चना, राजमा या मूंग आदि खा सकते हैं। ऐसा इसलिए फायदेमंद है, क्योंकि प्रोटीन तृप्ति बढ़ाने वाले हार्मोन को सक्रिय करता है, जिससे आपको पेट देर तक भरा महसूस होता है। इससे आप कार्ब्स या मीठा कम खाते हैं और ऐसे में आप अपने कैलोरी काउंट में आसानी से बने रहते हैं।

ना देखने वाली कैलोरी होती हैं नुकसानदायक

अमूमन लोग वेट लॉस के दौरान सिर्फ अपने खाने पर ध्यान देते हैं और उसी की कैलोरीज को गिनते हैं। लेकिन फिर भी उनका वजन कम नहीं हो पाता। लेकिन कैलोरी काउंट किए बिना वजन कम करने के लिए जरूरी है कि आप ना दिखने वाली कैलोरीज को भी पहचानें। मसलन, चाय में चीनी, बिस्कुट, टेस्ट करते समय खाना या खाना बनाते समय स्नैकिंग करना आदि दिनभर में 300-500 अतिरिक्त कैलोरी जोड़ देते हैं। इन पर ध्यान देकर भी आप अपने कैलोरी काउंट में आसानी से बने रह सकते हैं।

हड्डियों की 'कट-कट' आवाज कब है नॉर्मल और कब है खतरे की घंटी?

डॉ. मुकुल शर्मा

आमतौर पर उम्र बढ़ने के साथ हड्डियों की समस्याएं बढ़ती हैं। लेकिन अब कम उम्र में भी लोग इसका शिकार हो रहे हैं, जिसकी मुख्य वजह खराब लाइफस्टाइल और पोषक तत्वों की गड़बड़ी है। अगर आपको भी उठने-बैठने के दौरान हड्डियों के चटकने की कट-कट आवाज आती है, तो आपको सावधान हो जाना चाहिए। आमतौर पर माना जाता है कि कट-कट की आवाज का मतलब हड्डियां घिस रही हैं, लेकिन हर चटकने वाली आवाज की यही वजह हो ऐसा जरूरी नहीं है।

कई बार यह जोड़ों के अंदर मौजूद गैस के बुलबुलों के फूटने, लिंगामेंट और टेंडन के अपनी जगह बदलने या फिर लंबे समय तक एक ही स्थिति में रहने से यह समस्या होती है। हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक अगर सिर्फ चटकने की आवाज आ रही है, तो यह बहुत गंभीर समस्या नहीं है। लेकिन अगर इसके साथ सूजन, दर्द, जकड़न, चलने-फिरने में समस्या या फिर जोड़ बार-बार लॉक हो रहे हैं। तो आपको अलर्ट हो जाना चाहिए।

हड्डियों की दिक्कतें

हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक लोगों की खराब हो रही लाइफस्टाइल जैसे घंटों तक कुर्सी पर बैठकर काम करना, फिजिकल एक्टिविटी में कमी होना और मोटापे की समस्या ने हड्डियों की समस्या को काफी हद तक बढ़ा दिया है। वहीं विटामिन डी और कैल्शियम की कमी का भी हड्डियों और जोड़ों पर असर होता है। उम्र बढ़ने के अलावा शरीर में होने वाले बदलाव भी जोड़ों की समस्याओं को बढ़ा रहे हैं।

हड्डियों या जोड़ों से क्यों आती है चटखने की आवाज

हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक जोड़ों से आने वाली चटकने की आवाज को मेडिकल भाषा में क्रेपिटस कहा जाता है। आमतौर पर यह सामान्य मानी जाती है।

जोड़ों के अंदर मौजूद सिनोवियल फ्लूइड में घुली गैसें दबाव के बदलने पर छोटे बुलबुले बनाती और फूटती है। जिससे यह चटकने की आवाज आती है। वहीं टेंडन या लिगामेंट का हड्डी के ऊपर से खिसकने से भी ऐसी आवाजें पैदा कर सकता है। अगर चटकने की आवाज बिना दर्द या सूजन के आती है, तो इसको चिंता नहीं मानी जाती है।

किन लोगों को ज्यादा खतरा

आमतौर पर कार्टिलेज का घिसाव उम्र बढ़ने के साथ बढ़ सकता है। इसलिए बुजुर्गों में यह समस्या ज्यादा देखी जाती है। वहीं वेट ज्यादा होने से भी कूल्हों और घुटनों पर एक्स्ट्रा दबाव पड़ता है। फिजिकल एक्टिविटी में कमी, लंबे समय तक बैठे रहने वालों में या फिर घुटनों पर चोट की वजह भी आपको कई दिक्कतें हो सकती हैं। महिलाओं में मेनोपॉज होने के बाद होने वाले हार्मोनल बदलाव से भी हड्डियां कमजोर हो जाती हैं। जिससे कट-कट की आवाज आ सकती हैं।

ऐसे करें बचाव

एक्सपर्ट के मुताबिक अगर हड्डियों के चटकने के साथ-साथ सूजन, तेज दर्द या जोड़ गर्म महसूस होते हैं। या फिर बार-बार लॉक होने की वजह से चलने में समस्या हो रही है, तो इसकी जांच जरूर कराएं।

वहीं नियमित व्यायाम और फिजिकट एक्टिविटी से जोड़ों पर कम दबाव पड़ता है। वेट कंट्रोल में रखने से कूल्हों और घुटनों पर अनावश्यक भार कम होता है। वहीं संतुलित डाइट लेनी चाहिए। अपनी डाइट में कैल्शियम, प्रोटीन और विटामिन डी वाली चीजों को शामिल करें। इससे हड्डियां मजबूत होती है।

'तबाही' से ज्यादा मची बहस! किसिंग सीन पर कियारा ट्रोल, यश बने 'कूल'

रॉकिंग स्टार यश की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'टॉक्सिक' का नया गाना 'तबाही' रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर छा गया है। गाने में यश और कियारा आडवाणी की शानदार केमिस्ट्री के साथ कई रोमांटिक और इंटीमेट मोमेंट्स दिखाए गए हैं। बीच, कार, पुरानी इमारत और समुद्र किनारे फिल्माए गए सीन ने दर्शकों का ध्यान खींचा है। हालांकि गाने की चर्चा जितनी इसकी सिनेमैटोग्राफी और म्यूजिक को लेकर हो रही है, उससे कहीं ज्यादा बहस दोनों कलाकारों को मिल रहे अलग-अलग रिएक्शन पर छिड़ गई है।

कियारा पर निशाना, यश की तारीफ

गाना सामने आते ही सोशल मीडिया पर कुछ यूजर्स ने कियारा आडवाणी को उनके बोल्ड सीन्स को लेकर ट्रोल करना शुरू कर दिया। खास बात यह रही कि उसी गाने में मौजूद यश को कई लोगों ने 'कूल', 'स्टाइलिश' और 'हैंडसम' बताया। यही दोहरा रवैया अब चर्चा का केंद्र बन गया है। सवाल उठ रहे हैं कि जब एक ही सीन में दोनों कलाकार बराबर शामिल हैं, तो आलोचना सिर्फ अभिनेत्री को ही क्यों झेलनी पड़ रही है?

क्या आज भी अलग हैं मानदंड?

मनोरंजन जगत में यह पहली बार नहीं है जब किसी अभिनेत्री को इंटीमेट सीन के लिए ज्यादा आलोचना का सामना करना पड़ा हो। अक्सर देखा गया है कि पुरुष कलाकारों के ऐसे दृश्यों को उनके किरदार का हिस्सा माना जाता है, जबकि महिला कलाकारों को निजी जीवन और संस्कारों के आधार पर जज किया जाता है। यही वजह है कि सोशल मीडिया पर कई लोग इस दोहरे मापदंड पर सवाल उठा रहे हैं।

शादी और मां बनने के बाद भी किरदार निभाने का अधिकार

कियारा आडवाणी शादीशुदा हैं और हाल ही में मां भी बनी हैं, लेकिन इससे उनके पेशेवर फैसलों पर सवाल उठाना उचित नहीं माना जा सकता। अभिनय एक पेशा है और कलाकार अपने किरदार की मांग के अनुसार काम करते हैं। इससे पहले भी कई शादीशुदा अभिनेत्रियां और मां बनने के बाद फिल्मों में रोमांटिक या इंटीमेट सीन कर चुकी हैं। ऐसे में किसी कलाकार को उसके निजी जीवन के आधार पर आंकना सही नहीं कहा जा सकता।

26 अगस्त को होगी रिलीज

विवादों और चचाओं के बीच 'टॉक्सिक' को लेकर दर्शकों की उत्सुकता और बढ़ गई है। फिल्म 26 अगस्त 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। अब देखना दिलचस्प होगा कि सोशल मीडिया पर छिड़ी यह बहस बॉक्स ऑफिस पर फिल्म के लिए कितना फायदा लेकर आती है।

अब हॉलीवुड फिल्म में नजर आएंगी दिशा पाटनी

बॉलीवुड की मशहूर एक्ट्रेस दिशा पटानी इन दिनों देश के साथ-साथ विदेश में भी सुर्खियां बटोर रही हैं क्योंकि बॉलीवुड के बाद वह हॉलीवुड फिल्म में नजर आने वाली हैं। दिशा हाल ही में 'वेलकम टू द जंगल' में नजर आई थीं और अब वह हॉलीवुड में डेब्यू के लिए पूरी तरह तैयार हैं। वह ऑस्कर विनिंग डायरेक्टर केविन स्पेसी की आने वाली फिल्म 'हॉलीवुड सागाः द पोर्टल ऑफ फोर्स' से हॉलीवुड में डेब्यू कर रही हैं, जिसके बारे में उन्होंने हाल ही में खुलकर बात की। इस दौरान उन्होंने ऑस्कर विनिंग डायरेक्टर केविन स्पेसी के साथ काम करने का अपना एक्सपीरियंस भी शेयर किया।

दिशा पटानी ने अपनी हॉलीवुड जर्नी के बारे में बात कीः प्रियंका चोपड़ा, दीपिका पादुकोण, आलिया भट्ट, अली फजल और तब्बू जैसे एक्टर्स के नक्शेकदम पर चलते हुए दिशा पटानी ने भी हॉलीवुड में कदम रख दिया है। दिशा अगली बार ऑस्कर-विनर केविन स्पेसी की सुपरनैचुरल थ्रिलर 'होलीगार्ड्स सागाः द पोर्टल ऑफ फोर्स' में नजर आएंगी। अब दिशा ने हाल ही में केविन स्पेसी के साथ काम करने और अपनी हॉलीवुड जर्नी के बारे में बात की और बताया कि हॉलीवुड फिल्मों में एंट्री ऑडिशन पर कैसे निर्भर करती है। अगर आपको वेस्टर्न सिनेमा में एंट्री चाहिए तो ऑडिशन देना जरूरी है। दिशा के मुताबिक, इंडिया में रहकर ग्लोबल प्रोजेक्ट्स में एंट्री की उम्मीद नहीं की जा सकती।

डायरेक्टर केविन स्पेसी की तारीफ कीः फिल्म 'होलीगार्ड सागा' के डायरेक्टर केविन स्पेसी की तारीफ करते हुए दिशा ने कहा, 'वाह कमाल के हैं। वह खुद भी एक एक्टर हैं, जिसकी वजह से वह दूसरे एक्टर्स को समझते हैं। इससे आर्टिस्ट्स को एक्सपेरिमेंट करने की काफी आजादी मिलती है। शूटिंग के दौरान, वह अक्सर हमसे अपने एक्सपीरियंस इस्तेमाल करने को कहते थे। वह हमें खुद से ऐसे सवाल पूछने के लिए हिम्मत देते थे जैसे झ 'अगर आप इस सिचुएशन में होते तो आप कैसे रिएक्ट करते?' क्या आप आ सकते हैं? या फिर अगर आपके साथ ऐसा होता है तो आप कैसा महसूस करेंगे?' वह आर्टिस्ट को उनके कैरेक्टर को समझने की पूरी क्रिएटिव फ्रीडम देते हैं। हर सुबह, वह शूटिंग से पहले हमारे साथ बैठते और फिर सीन समझाते। मुझे यह बहुत खास लगा।'

इंडिया में बैठकर ग्लोबल रोल मिलना आसान नहींः इस बीच, दिशा पटानी ने बताया कि उन्हें इस फिल्म में एंट्री कैसे मिली। अपने हॉलीवुड डेब्यू और ऑडिशन प्रोसेस के बारे में बात करते हुए, एक्ट्रेस ने कहा, 'वेस्टर्न देशों में ऑडिशन टेम्प्लेट सबसे इंपॉर्टेंट चीज है। अगर आपको काम चाहिए तो आपको किसी रोल के लिए ऑडिशन देना होगा। हालांकि, कई बार किस्मत भी इंपॉर्टेंट रोल निभाती है। कभी-कभी वे (हॉलीवुड फिल्ममेकर्स) आपका काम देखते हैं और आपको किसी प्रोजेक्ट के लिए ऑडिशन ऑफर करते हैं। और हां यह आपके वीजा और दूसरी लॉजिस्टिक्स से जुड़ी बातों पर भी डिपेंड करता है, क्योंकि आपको वहां फिजिकली प्रेजेंट होना पड़ता है। इंडिया में बैठकर आपको ग्लोबल रोल नहीं मिलेंगे। हां, आप यहां से ऑडिशन दे सकते हैं, लेकिन सबसे अच्छी बात यह है कि आप वहां जाएं, वहां के तरीके सीखें और उस पर काम करें। मुझे लगता है किसी भी देश में करने का यह तरीका सबसे अच्छा है।

युवा हौसलों की ऐतिहासिक उड़ान

फुटबॉल: स्पेन का विश्व कप विजय और लामीन यमाल का उदय

सैय्यद अली मेहदी

विश्व कप फुटबॉल का हालिया संस्करण खेल के इतिहास में एक नए स्वर्णिम अध्याय के रूप में दर्ज हो गया है, जिसने एक बार फिर वैश्विक मंच पर यह अकाट्य सत्य साबित कर दिया कि आधुनिक फुटबॉल बुनियादी तौर पर '4-एस' यानी स्पीड, स्टैमिना, स्किल और सेंस का खेल है। जिस टीम के पास इन चारों तत्वों का सटीक संतुलन होता है, विश्व कप की चमचमाती ट्रॉफी उसी के पास जाती है और इस पूरे टूर्नामेंट में यूरोपीय दिग्गज स्पेन ने इन चारों मापदंडों पर न केवल खरा उतरकर दिखाया, बल्कि अपनी युवा और ऊर्जावान टीम के दम पर पूरी दुनिया को अपनी फुटबॉल शैली का मुरीद बना लिया। अंततः स्पेन ने अर्जेंटीना जैसी गत विश्व विजेता टीम को पछाड़कर दुनिया के नए फुटबॉल बादशाह का ताज अपने सिर पर सजाया, जिससे यह साफ हो गया कि मैदान पर अब युवा जोश और आधुनिक रणनीति का बोलबाला है।

इस पूरे विश्व कप में अगर किसी एक खिलाड़ी ने फुटबॉल प्रेमियों और विश्लेषकों का ध्यान सबसे ज्यादा अपनी ओर खींचा, तो वह हैं स्पेन की नई सनसनी लामीन यामाल जिन्होंने महज 18 साल की उम्र में, जहां अधिकांश खिलाड़ी अपने करियर की दिशा तय कर रहे होते हैं, दुनिया के सबसे बड़े खेल मंच पर अपनी गति और गजब की तेजी से विपक्षी डिफेंस की धज्जियां उड़ा दीं। पूरे टूर्नामेंट के दौरान विंग्स पर उनकी दौड़ और ड्रिबलिंग देखने लायक थी और बड़ी बात यह है कि इस महामुकाबले के फाइनल में जहां दुनिया के महानतम खिलाड़ियों में शुमार लियोनेल मेसी जैसी

विख्यात हस्ती अपना जादुई असर नहीं छोड़ सकीं, वहीं 'जूनियर मेसी' कहे जाने वाले लामीन यामाल ने इतिहास रच दिया। यामाल की खेलने की शैली, उनका फुटवर्क और गेंद पर नियंत्रण काफी हद तक मेसी की याद दिलाता है और अपने पहले ही विश्व कप फाइनल में, वह भी अर्जेंटीना जैसी अनुभवी और आक्रामक टीम के खिलाफ, यामाल ने जिस परिपक्वता और निडरता का परिचय दिया, वह किसी चमत्कार से कम नहीं था। 18 साल की उम्र में विश्व कप का फाइनल खेलना और अपनी टीम को चैंपियन बनाने में मुख्य सूत्रधार बनना, हर युवा फुटबॉलर का एक अकल्पनीय सपना होता है, जिसे यामाल ने मैदान पर हर मिनट पसीना बहाकर हकीकत में बदल दिया।

स्पेन की इस खिताबी जीत के पीछे सिर्फ व्यक्तिगत प्रतिभा नहीं, बल्कि सामूहिक सामर्थ्य का वह शानदार प्रदर्शन था जो '4-एस' के सिद्धांत पर पूरी तरह आधारित था। खेल की पहली आवश्यकता यानी स्पीड के मामले में स्पेन के युवा विंगर्स और मिडफील्डर्स ने खेल के संक्रमण के दौरान इतनी तेजी दिखाई कि विरोधी टीमों को संभलने का मौका ही नहीं मिला, वहीं स्टैमिना के स्तर पर फाइनल मैच के अतिरिक्त समय तक, यानी पूरे 120 मिनट तक स्पेनिश खिलाड़ियों की ऊर्जा का स्तर रत्ती भर भी कम नहीं हुआ और उनका निरंतर प्रेसिंग गेम विरोधी टीम को थकाने में पूरी तरह कामयाब रहा। इसके साथ ही बार्सिलोना की प्रसिद्ध 'टिकी-टाका' शैली के आधुनिक रूप को अपनाते हुए स्पेन ने छोटे पास, सटीक क्रॉस और बॉक्स के भीतर बेहतरीन ड्रिबलिंग का मुजाहिरा करते हुए अपनी अद्भुत स्किल का लोहा मनवाया, जबकि खेल की समझ यानी सेंस के स्तर पर दबाव के क्षणों में कब आक्रामक होना है और कब गेंद को अपने पास रखकर समय को नियंत्रित करना है, इसकी बेजोड़ समझ इस युवा टीम ने हर मोड़ पर दिखाई।

इस ऐतिहासिक जीत का एक बहुत बड़ा श्रेय स्पेन की अभेद्य रक्षा पंक्ति और उनके मुख्य कोच की अचूक व सटीक रणनीति को भी जाता है, क्योंकि अर्जेंटीना जैसी टीम जिसके पास दुनिया का सबसे खतरनाक अटैकिंग लाइन-अप है, वह स्पेन के गोल पोस्ट को भेदने के लिए पूरे मैच में छटपटाती नजर आई। कोच ने अर्जेंटीना के प्रमुख खिलाड़ियों को मैन-मार्क करने और मिडफील्ड में उनके पासिंग लेंस को ब्लॉक करने की जो योजना बनाई थी, उसे खिलाड़ियों ने मैदान पर हूबहू लागू किया, जिसके परिणामस्वरूप स्पेनिश डिफेंडर्स ने दीवार की तरह खड़े होकर अर्जेंटीना के हर आक्रमण को नाकाम कर दिया और विपक्षी टीम को बॉक्स के पास खुलकर खेलने की आजादी बिल्कुल नहीं दी। यह विश्व कप मुख्य रूप से हौसलों की उड़ान और उस सपने को सच करने के जुनून की कहानी है, जिसे स्पेन की इस नई पीढ़ी ने जागती आंखों से देखा था। एक समय था जब स्पेन की टीम को अनुभवहीन और युवा माना जा रहा था, लेकिन युवा जोश ने तजुर्बे पर फतह हासिल करके यह साबित कर दिया कि उम्र सिर्फ एक संख्या है; यदि आपके भीतर जीतने का अटूट जज्बा और अपनी रणनीतियों पर अडिग रहने का विश्वास हो, तो दुनिया की किसी भी मजबूत ताकत को घुटने टेकने पर मजबूर किया जा सकता है। स्पेन का यह नया स्वर्णिम दौर फुटबॉल की दुनिया में एक नए युग की शुरूआत है, जहां गति, कौशल और रणनीतिक समझ की नई परिभाषा लिखी गई है और दुनिया ने देखा कि कैसे एक युवा सनसनी अपने अनोखे खेल से दुनिया का नया बादशाह बन गया।

CG POWER & INDUSTRIAL SOLUTIONS LTD.
VCB PANEL, CRP,
TRANSFORMER, RMU ETC

SECURE METERS LTD.
ENERGY METER
(POSTPAID/PREPAID/
SOLAR/ABT)

MITSUBISHI ELECTRIC
MCB/MCCB/ACB/
CONTRACTOR/DB

Kumar Enterprises

GF-150 | DURGA TOWER | RDC | RAJ NAGAR | GHAZIABAD (UP) - 201001
TEL. : 0120-4137613 | EMAIL : ke.ghaziabad@gmail.com
SANJEEV KUMAR 9268566079

CREATIVE INTERIOR
Presents

IENX® EXPO

Making Business Better

5TH EDITION

TITLE SPONSOR

FB Flybird
House of Luxurious Furniture Fittings

Give a boost to your slow moving business

Industries & Exhibitors Specializing In:

Architectural Hardware,
Ceramic Tiles & Sanitaryware,
Plywood & Laminates,
Louvers,
Bath Fittings & Accessories, ...etc

Contact :

BOOK YOUR SPACE NOW

9278778721

ienxexpo@gmail.com

www.ienx.in

We Follow Us:

उत्तर प्रदेश सरकार
21% देश के खाद्यान्न उत्पादन में योगदान
गन्ना मूल्य ₹315 से बढ़कर
₹400 प्रति क्विंटल
यूपी ने करके दिखाया
किसान कल्याण
3.12 करोड़ किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के अंतर्गत ₹1,03,391 करोड़+ की राशि अंतरित
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश
विकास की गति अपार-डबल इंजन सरकार
UPGovtOfficial
CMOUttarpradesh
CMOfficeUP